मुद्रक :

मदनकुमार मेहता

रेफिल आर्ट प्रेस

(आदर्श-साहित्य-संघ द्वारा संचालित)

३१, बडतल्ला स्ट्रीट,

मूल्य

एक रूपैया बारह आना

प्रकाशक :

आदर्श-साहित्य-संघ

स र दा र श ह र (राजस्थान)

प्रकाशकीय

आत्मालोचन दिव्यात्माओंकी अन्तर्ज्योति है, जो अन्धकारमें पथभ्रष्ट मानवको ज्योतिस्तम्भसी वास्तविक पथ-प्रदर्शन करती है। इसके द्वारा मानव अपने चरम लक्ष्यकी ओर अग्रसर हो सकता है।

जीवनकी सन्ध्यामे जब मानव प्रवेश करता है तब उसे जीवनकी वास्तविकताका ज्ञान होता है। उस समय उसे अपने विगत जीवनके संस्मरणोंका स्मरण कर पश्चात्ताप और ग्लानिके अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं होता। आत्मालोचन उस पश्चात्ताप और ग्लानिको मिटानेकी रामबाण औषधी है। आराधनाकी ढालें शान्त-रससे ओतप्रोत वैराग्यकी सुन्दर भावमयी रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत पुस्तकके संग्रहमें श्री पन्नालालजी भँसाली, लाडनू निवासीने अत्यन्त श्रम किया है। यह उनकी एक अभिरुचिकी चीज थी, अतः संग्रहका सम्पादन व संकलन भी उत्तमताके साथ किया है।

इस अशान्त और विषम समयमें प्रस्तुत संग्रहका प्रकाशन कर आदर्श-साहित्य-संघ पथभ्रष्ट मानव समाजको नव मार्गकी ओर प्रेरणा दे रहा है, ऐसा हमारा सोचना अनुचित नहीं होगा।

—प्रकाशन मन्त्री

अनुक्रम

आमुख

इस छोटी-सी पुस्तिकामें कुछ चुने हुए स्तवनों व कविताओंका एक विशेप दृष्टिकोणसे संकलन किया गया है। सब परिस्थितियोंमें समताभाव, सुख और दुखमें धैर्य तथा कष्ट सहन करनेकी शक्ति प्राप्त करनेमें आत्मिक दृढ़ता उत्पन्न हो, इसी आशाके साथ इस पुस्तकको यत्न सहित पढ़ने व मनन करनेका नम्र निवेदन करनेके अतिरिक्त और क्या कहूं ?

विड़ला मन्दिर
नई दिल्ली
१८-५-५०

—पन्नालाल भनसाली

आत्मालोचन

श्री जिनाय नमः

आ रा ध ना

प्रथम द्वार

दोहा

महावीर प्रणमी करी, आराधना अधिकार।
अन्त समय में योग्य ए, आखू तसु दस द्वार॥ १॥
प्रथम आलोयण मन शुद्ध, करवी तज कपटाय।
व्रत अतिचार, आलोवियां, आतम निरमल थाय॥ २॥
उच्चरवा वलि व्रत शुद्ध, ऊंचे शब्द उचार।
अन्तःकरण हर्ष आण नें, शांति पणो मनधार॥ ३॥
सगला जीव खमावणा, प्रतिकूल जे नर नार।
जूजूआ नाम लेई करी, कलुष भाव परिहार॥ ४॥
अष्टादश जे पाप प्रति, वोसिरावें धर प्रीत।
चौथो द्वार कह्यो इसो, छाड़ै सर्व अनीत॥ ५॥
अरिहंत सिद्ध साधु तणो, केवली भाषित धर्म।
पड़िवज्जवा ए शरण चिहुं, पञ्चम द्वार सु पर्म॥ ६॥

दुकृत नी करवी निंदा , छट्ठा द्वार मझार ।
अशुभ कार्य पोतें किया , तसु निंदा दिल धार ॥ ७ ॥
सुकृत नी अनुमोदना , सप्तम द्वार उदार ।
शुभ करणी पोतें करी , तसु अनुमोदन सार ॥ ८ ॥
भावन रूडी भाववी , धर्म शुक्ल वर ध्यान ।
अष्टम द्वार कह्यो इस्यो , संवेग रस गलतान ॥ ९ ॥
नवमें अणसण आदरें , करै आहार परिहार ।
अनंत मेरू सम भोगव्या , पिण तृप्ति न हुवो लिगार ॥१०॥
दशमे श्री नवकार नो , स्मरण सहाय करंत ।
मन वंछित वस्तु मिलें , सुर शिव फल पावंत ॥ ११ ॥
इण विध दस द्वारे करी , तन मन वश कर सोय ।
आराधक पद पामियें , निर्भय चित्त अवलोय ॥१२॥
हिवे विस्तार करी कहूं , जू जूआ दसूं स्वरूप ।
प्रथम आलोयण विध प्रवर , साभलज्यो धर चूप ॥ १३ ॥

ढाल १ ली

(देशी—अनित्य भावनाभाई भरतेश्वर)

ज्ञान दर्शण चारित्र तप वीर्य, पंच आचार पिछाणी ।
अतिचार आलोवें उत्तम मुनि, समता रस घट आणीरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजें ।
समता रस घट पीजेरा मुनीश्वर, आतम वश कर लीजें ॥ १ ॥

काल विनय आदि आठ प्रकारे, ज्ञान आचार विध कहीजै ।
ते आठ प्रकार रहित ज्ञान भणियो, तो मिच्छामि दुक्कडं
दीजैरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ २ ॥
सूत्रपाठ अर्थ विरुद्ध कह्यो हुवै, अक्षर हीणाधिक आख्यो ।
जोग घोष हीण खोट तणो सहु, मिच्छामि दुक्कडं भाख्योरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३ ॥
विनय करी ने रहित ज्ञान भणियो, सूत्र अकाले गुणियो ।
असज्झाइ मे सज्झाय करी हुवै, तो मिच्छामि दुक्कडं
थुणियोरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ४ ॥
ज्ञान तणी तथा ज्ञानवन्त नी, अवज्ञा अशातना कीधी ।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवैं निन्दा तज दीधीरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ५ ॥
ते ज्ञान तणा पंच भेद कह्या छै, त्यारी करी निषेधणा जाणी ।
ज्ञान तणो वलि उपहास्य कीधो तो, मिच्छामि दुक्कडं
पिछाणीरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ६ ॥
ज्ञान निन्हवियो नं ज्ञान गोपवियो, इम ज्ञानातिचार आलोवैं ।
वले दर्शण ना अतिचार आलोवी, कर्म रूप मल धोवैरा ॥
मुनीश्वर अलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ७ ॥
दर्शन आचार निःशङ्कता प्रमुख, अठ गुण सहित कहीजै ।
ते गुण सम्यक् प्रकारे न धार्‌या तो, मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ८ ॥

सूत्र साधु ने छ:काय मांहैं, जे कोई शङ्का आणी।
तेहनो पिण सहु मिच्छामि दुक्कडं, त्रिविध २ कर जाणीरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ९॥
गहन बात कोई देखी सिद्धान्त नी, शङ्का भ्रम मन आण्यो।
तेहनो पिण सहु मिच्छामि दुक्कडं, हिवै मैं सत्य कर जाण्योरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ १०॥
छ:काय जीवां मांहैं शङ्का राखी, अथवा सिद्ध संसारी।
भ्रम जाल पड्यो तुच्छ लेखा कर, मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ११॥
आचार्यादिक साध साधवी, गण समुदाय गुणीजै।
त्यांमें साधपणारी शङ्का राखी तो, मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ १२॥
अनन्त गुणो फेर कह्यो चारित्र में, पज्जवा हीण वृद्धि देखी।
संयम री मन शंका आणी तो, मिच्छामि दुक्कडं विशेषीरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ १३॥
एकम चवदस पूनम चन्द सम, मुनि वद्या यतिधर्म धारी।
त्यांमें साधपणा री शङ्का राखी तो, मिच्छामि दुक्कडं उदारीरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ १४॥
चौमासी छ:मासी दण्ड वालों सूं, कलुष भाव कोई आयो।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै मैं भ्रम मिटायोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ १५॥

शीलअनेचारित्रसहितमुनि केई, चारित सहित सुशीलन कोई।
एहवी प्रकृति वाला में संयम नहीं सरध्यो तो, मिच्छामि दुक्कडं होईरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥स०॥१६॥
आचार्यादिक ना अवगुण बोली, घाली औरां रै शंको।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै मैं मेट्यो वंकोरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ १७ ॥
देव गुरु धर्म रतन तीनू में, देश सर्व शंक धारी।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै मैं शंक निवारीरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ १८ ॥
कंखा ते अन्यमत नी वाछा, तथा पासत्था बुगलध्यानी।
वाह्य क्रिया देखी त्यांरी वंछा कीधी तो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ १६ ॥
वितिगिच्चा ते संदेह फलनो, प्रशंसा पाखण्डी नो कीधी।
प्रीत भाव परचो कियो तेहनो, मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ २० ॥
इम दर्शण अतिचार आलोवै, हिवै चारित्र अतिचारो।
समिति गुप्त सहित व्रत न पाल्या तो, मिच्छामि दुक्कडं विचारेरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ २१ ॥
इर्य्या समिति पूरी नहीं शोधी, चालंतां चिन्तवणा कीधी।
अथवा चालंतां वार्ता करी हुवे तो, मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ २२ ॥

क्रोध मान माया लोभ तणै वश, वचन काढ्यो मुख वारैं।
हास्य कितोल करी हुवै किण सूं तो, मिच्छामि दुक्कडं म्हारैंरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २३॥
भय वश वोल्यो ने मुख नो अरिपणो, वलि करी विकथा विवादो।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै मुझ हुई समाधोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २४॥
एपणा समिति गवेपणा न करी, शंका सहित आहार लीधो।
राग द्वेप आण्यो सरस निरस पर, मिच्छामि दुक्कडं दीधोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २५॥
वस्त्र पात्रादिक लेतां मेलतां, रूड़ी रीत न जोयो।
अथवा परठतां करी अजैणा तो, मिच्छामि दुक्कडं होयोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २६॥
मन गुप्ति माहें दोप लगायो, अशुद्ध मन वरतायो।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै हूं आनन्द पायोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २७॥
वचन गुप्ति विराधना कीधी, सावज वचन उचास्यो।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै समता रस धास्योरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २८॥
काय गुप्ति मे करी खण्डना, काय अशुद्ध वरताई।
तेहनो पिण मुझ मिच्छामि दुक्कडं, हिवै काय गुप्ति सवाईरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ २९॥

विण जोयां विण पूज्यां काया सू, उटिङ्गणादिक लीधा।
पसवाड़ो फेस्यो पगादि पसास्या तो, मिच्छामि दुक्कडं दीधोरा
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३० ॥
पृथ्वी अप् तेउ वायु वनस्पति, बेइन्द्री चूरणियादिक जाणो।
अलसिया ने फुंझारादिक हणिया तो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणोरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३१ ॥
तेइन्द्री जू लीख माकण आदि, चौइन्द्री माखी आदि कहीजै।
पंचेन्द्री जलचरादिक हणिया तो, मिच्छामि दुक्कडं दीजैरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३२ ॥
समूर्छिम गर्भज प्रमुख सहु हणिया, सहल गिणी तथा जाणी।
प्रमाद वशे तथा शरीरादि कारण तो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३३ ॥
क्रोध लोभ भय हास परवश पणै, मूर्ख पणै मृषावादो।
शंकाकारी भाषा निश्चय कही हुवै तो, मिच्छामि दुक्कडं समाधोरा ॥ मुनिश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥१॥
देव १ गुरु २ साधर्मीनी ३ चोरी, राज४गाथापति५ अदत्तो।
आज्ञा लोपी कोई कारज कीधो तो, मिच्छामि दुक्कडं सुदत्तोरा ॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३५ ॥
आज्ञा विना आहार पाणी वस्त्रादिक, लियो दियो हुवै कोई।
आचार्य नी आज्ञा विराधी तो, मिच्छामि दुक्कडं होईरा ॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै ॥ स० ॥ ३६ ॥

आचार्य नी आज्ञा विना दीक्षा दीधी हुवै, विन आज्ञा दीक्षा नों उपदेशो।
त्रिविध २ तिण दोष नें निन्दूं, मिच्छामि दुक्कडं विशेषोरा॥
मुनीश्वर आलोयणां इम कीजै॥ स०॥ ३७॥

देव मनुष्य तिर्यंच ना मैथुन, काम स्नेह दृष्टि रागे।
मन वचन काया कर सेव्या तो, मिच्छामि दुक्कडं सागेरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ३८॥

आल जंजाल सुपन स्त्रियादिक ना, हस्त कर्मादिक कीधा।
हास रामत ख्याल सर्व लहरनो, मिच्छामि दुक्कडं दीधोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ ३९॥

सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्यांनी मूर्छा, वस्त्र आहार पाणी।
साध गृहस्थ ऊपर ममत भावनो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ४०॥

मर्यादा उपरान्त वस्त्रादिक राख्या, तथा शरीर ऊपर मूर्छा आणी।
शोभा विभूषा नी लहर आई हुवै तो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ सा०॥ ४१॥

रात्रि भोजन लागो हुवै कोई, दिन उगां पहिली वस्तु लीधी।
पाणी औषध आदि मोड़ो चुकायो तो, मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्धिरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ सा०॥ ४२॥

दूजा दिन रै अर्थे औपधादिक अधिक जाच्यो हुवै जाणी।
ते और घरे मेहली ने भोगवियो तो, मिच्छामि दुक्कडं पिछाणीरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ४३॥
इत्यादिक चारित्र विषै, अतिचार निन्दूं आत्म साखे।
गर्हा करूं देव गुरु नी साखसूं, त्रिविध ३ कर दाखेरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजे॥ स०॥ ४४॥
तप आचार ते बारे प्रकारे, अभिग्रह त्याग अनेको।
ते तप विषै अतिचार लाग्यो हुवै तो, मिच्छामि दुक्कडं विशेषोरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजे॥ स०॥ ४५॥
मोक्ष साधक व्रत पालण विध मे, बल वीर्य गोपवियो।
वीर्य आचार विराधना कीधी तो, मिच्छामि दुक्कडं उच्चरियोरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कोजे॥ स०॥ ४६॥
वलि याद करी करी करूं आलोयणा, न्हाना मोटा अतिचारो।
पाप पंक पखालीने निशल्य हुवे, मुक्ति साहमी दृष्टि धारोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजे॥ स०॥ ४७॥
पंच समिति तीन गुप्ति विषै जे, पंच महाव्रत माह्यो।
अतिचार लागो हुवै कोई तो, मिच्छामि दुक्कडं ताह्योरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ४८॥
गणपतिना वा संत सत्यांना, अथवा गणना कोई।
अवर्णवाद बोल्या हुवै तो, मिच्छामि दुक्कडं जोईरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजे॥ स०॥ ४६॥

स्वारथ अणपूगां गणपति सू, आण्या कलुष परिणामो।
ऊतरतो जो वचन कह्यो हुवै तो, मिच्छामि दुक्कडं तामोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५०॥

समकित ने चारित्र ना दाता, गणपति महा उपकारी।
अणगमतो ज्यो त्यां सू प्रवर्त्यो तो, मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा॥ मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५१॥

भिक्षु गण श्रीजिनशासन में, आस्था तास उतारी॥
शंका कंखा घाली ओररै तो, मिच्छामि दुक्कडं विचारीरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥॥ ५२॥

पाप अठारै जाण अजाणे, सेव्या सेवाया होई।
सेवतां ने अनुमोद्या हुवै तो, मिच्छामि दुक्कडं जोईरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५३॥

अतिचार मूल उत्तर गुण में, लाग्यो ते संभारो संभारी।
माया रहित आलोई लियै दण्ड, कपट प्रपंच निवारी रा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५४॥

भोला बालक जेम अलोवै, आचार्यादिक पासो।
न्हाय धोय ने निर्मल हुवै जिम, आतम उज्वल जासोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५५॥

इह विधि आलोयण करै मुनि, ते उत्तम जीव सधीरा।
परभव री अति चिन्ता जेहने, कर्म काटण चड़ वीरा रा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५६॥

असाता वेदनीनुं अति भय जसु, नरक निगोद थी डरिया।
आतमीक सुख नी अति वाछा, आलोयण करी तिरियारा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५७॥
विनां आलोइ मूआं विराधक, आभियोगिक सुर होई।
सूत्रे आख्यो तेह संभारी, करे आलोयण सोईरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५८॥
आलोयण करी मूआं आराधक, अनाभियोगिक सुर होई।
ए पिण सूत्र नो वचन संभारी, करे आलोयण सोईरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ५९॥
आलोयां विण उत्कृष्ट भागै, काल अनन्त रुलीजै।
नरक निगोद में भींका खावै, इम जाण आलोयण कीजैरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ६०॥
जातिवंत कुलवंत आलोवै, कह्यो ठाणांग मझारो।
ए पिण सूत्र नो वचन संभारी, करे आलोयण सारोरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ६१॥
छोटा मोटा दोष आलोवै, पिण लाज शरम नहीं ल्यावै।
उत्तम जीव कहीजै तेहनें, देव जिनेंद्र सरावैरा॥
मुनीश्वर आलोयण इम कीजै॥ स०॥ ६२॥
दस द्वारां मे प्रथम द्वार ए, आलोयणा नो आख्यो।
शुद्ध मन सू आलोवै तेहनो, सुयश सिद्धान्ते दाख्योरा॥
मुनीश्वर आलोयणा इम कीजै॥ स०॥ ६३॥

इति प्रथम द्वार

द्वितीय द्वार

दोहा

प्रथम द्वार आख्यो प्रवर, आलोयण अधिकार।
व्रत उच्चरवा नो हिवै, दाखू दूजो द्वार ॥ १ ॥

ढाल २ जी

(देशी—माथो धोई माल सवारं दर्पण में मुख देखै जीरे)

पूर्वे गणि आज्ञा थी धारया, पञ्च महाव्रत जाणीजीरे।
हिवड़ां पिण सिद्ध अरिहंत गणि नी, साख करी पहिचाणीरे॥
सैणां थइयैजीरे ॥ १ ॥

सर्व प्राणातिपात प्रति पचखू, त्रस थावरना प्राणोजीरे।
मन वच काय करी हणवाना, जावजीव पचखाणो रे॥
सैणा थइयैजीरे ॥ २ ॥

इमज हणावा तणा त्याग मुझ, वलि हणतो हुवै कोईजीरे।
ते अनुमोदण तणा त्याग वलि, जाव जीव अवलोई रे॥
सैणां थइयैजीरे ॥ ३ ॥

मृषावाद सर्वथा पचखू क्रोधादिक दिल आणोजी रे।
मन वच काय करी मृषा वच, बोलणरा पचखाणो रे॥
सैणां थइयैंजीरे॥ ४॥

इमज बोलावण तणा त्याग मुझ, अनुमोदण ना एमोजीरे।
त्रिविध २ वच अलीक तणा इम, जाव जीव लग नेमोरे॥
सैणां थइयैंजीरे॥ ५॥

सर्व अदत्ता दानज पचखू, अदत्त लेवणरा त्यागोजी रे।
अदत्त लेवावण तणा त्याग फुन, द्वितीय करण ए मागोरे॥
सैणां थइयैंजीरे॥ ६॥

अदत्त लियैं तसु अनुमोदण रा, छै मुझ त्याग सुजाणोजीरे।
मन वच काया त्रिविध जोग करी, जाव जीव पचखाणोरे॥
रैणां थइयैंजीरे॥ ७॥

फुन सहु मैथुन प्रति हूं पचखू सुर नर तिरि त्रिय फंदोजीरे।
मैथुन सेवणरा त्याग अछै मुझ, ए धुर करण प्रबंधो रे॥
सैणा थइयैंजीरे॥ ८॥

मैथुन सेवावण तणा त्याग फुन, अनुमोदण ना आमोजीरे।
मन वच तनु करी जाव जीव लग, त्याग अछै मुझ तामोरे॥
सैणा थइयैंजीरे॥ ९॥

सर्व परिग्रह प्रति फुन पचखू प्रथम करण पहिचाणोजीरे।
ममत्व भाव करी परिग्रह प्रतिज, अहिवारा पचखाणो रे॥
सैणां थइयैंजीरे॥ १०॥

परिग्रह ग्रहण करावणरा फुन, छै मुझ त्याग सदीवोजी रे।
अनुमोदण ना त्याग इमज, त्रिहुं जोग करी जाव जीवो रे।
सैणा थइयैजीरे॥ ११॥

फुन रात्रि भोजन प्रति पचखू, निशि भोजन ना नेमोजी रे।
तीन करण ने तीन जोग करी, जाव जीव लग एमो रे॥
सैणा थइयैजीरे॥ १२॥

पंच महाव्रत फुन व्रत छठो, अंत समय अणगारोजी रे।
इह विधि उचरै सम-भावे करि, आणी हर्ष अपारो रे॥
सैणा थइयैजीरे॥ १३॥

इति द्वितीय द्वार

तृतीय द्वार

दोहा

इम व्रत उच्चरिवा तणो, आख्यो दूजो द्वार ।
तृतीय द्वार कहियें हिवै, खमायवू तज खार ।। १ ।।

ढाल ३ जी

(देशी—सीता आवैरे धर राग)

सप्त लक्ष जे जाति पृथ्वीची, सप्त लक्ष अप्काय ।
इत्यादिक चउरासी लक्ष जे, जीवायोनि खमाय ।।
सुगुणा खमावियै तज खार ।। १ ।।
गण मे सन्त सती गुणवन्ता, सगलाँ भणी खमाय ।
निज आतम प्रति नरम करीनें, मच्छर भाव मिटाय ।।
सुगुणा खमावियै तज खार ।। २ ।।
किणहिक सन्त सती सू आया, कलुष भाव जो ताम ।
कठिण वचन तसु कह्या हुवै तो, खामे लेले नाम ।।
सुगुणा खमावियै तज खार ।। ३ ।।

इमहिज श्रावक अनें श्राविका, सगलां भणी खमाय।
कलुष भाव करि कटु वच आख्या तो, नाम लेई ने ताहि॥
सुगुणा खमावियै तज खार॥ ४॥

द्रव्यलिंगी वा अन्यदर्शणी, खामे सरल पणेह।
क्रोधादिक करी कटु वच आख्या तो, नाम लेई पभणेह॥
सुगुणा खमावियै तज खार॥ ५॥

बड़ा सन्त नी करी आशातन, त्रिहुं जोगे करी ताम।
सर्व खमावै उजल भावे, लेई जूजूआ नाम॥
सुगुणा खमावियै तज खार॥ ६॥

चिहुं तीरथ अथवा अन्य जन प्रति, राग द्वेप दिल आण।
वचन कह्या हुवै तास खमावुं, इम कहै मुनि सुजाण॥
सुगुणा खमावियै तज ग्वार॥ ७॥

रेकारा तूकारा किणनें, राग द्वेष वश दीध।
तेहथी खमतखामणा म्हांरा, एम वदै सुप्रसिद्ध॥
सुगुणा खमावियै तज खार॥ ८॥

कठिन सीख दीधी हुवै किण नें, लहर वैर मन आण।
खमतखामणा म्हांरा तेहथी, वदै नरम इम वाण॥
सुगुणा खमावियै तज खार॥ ९॥

महाउपकारी गणपति भारी, समकित चरण दातार।
बारम्बार खमावै त्यांनें, अविनय कियो किवार॥
सुगुणा खमावियै तज खार॥ १०॥

स्वारथ अणपूगां गणपतिना, बोल्या अवर्णवाद।
ते पिण बारम्बार खमावै, मेटी मन असमाध॥
सुगुणा खमाविये तज खार॥ ११॥

विनयवन्त गणपतिना त्यांथी, धस्था कलुष परिणाम।
बारम्बार खमावै तेहनें, लेई जूजूआ नाम॥
सुगुणा खमाविये तज खार॥ १२॥

चिहुं तीर्थ अथवा अन्य जन थी, मेटी मच्छर भाव।
इह विधि खमत खामणा करतो, ते मुनि तरणी न्याव॥
सुगुणा खमाविये तज खार॥ १३॥

परम नरम इम आतम करवी, धरवी समता सार।
ए विध बारु रीत बताई, तीजा द्वार मझार॥
सुगुणा खमाविये तज खार॥ १४॥

इति तृतीय द्वार

चतुर्थ द्वार

दोहा

खमत खामणानो कह्यो, तीजो द्वार उदार।
हिवै अष्टादश अघ प्रते, वोसिरावै अणगार ॥ १ ॥

ढाल ४ थी

(देशी—नीकी सीखडलीरे लहिये)

प्राणतिपात प्रथम अघ आख्यो, दूजो मृषावाद।
अदत्तादान तीजो अघ कहिये, चौथो मैथुन विपाद ॥
सुगुणा पाप पङ्क परहरिये ॥
पाप पङ्क परहरिये दिल सू, वोसिरावै अघ भार।
इह विधि निज आतम निस्तार ॥ सु० ॥ १ ॥
पञ्चम पाप परिग्रह ममता, क्रोध मान माया लोभ।
दशमों राग एकादशमों फुन, द्वेष करै चित क्षोभ ॥
सुगुणा पाप पङ्क परहरिये ॥ २ ॥
बारमों कलह अभ्याख्यान तेरमों, ते परशिर आल विषाद।
चवदमों पिशुन तिको खाय चुगली, पनरमों पर-परिवाद ॥
सुगुणा पाप पङ्क परहरिये ॥ ३ ॥

जेह असंयम मे रति पामे, अरति संयम रै माय।
रति-अरति ए पाप सोलमों, दाख्यो श्री जिनराय॥
सुगुणा पाप पङ्क परहरिये॥ ४॥

सतरमों कपट सहित झूठ बोलै, माया मोसो तेह।
मिथ्या-दर्शन-शल्य पाप अठारमो, तेहथी ऊंधो सरधेह॥
सुगुणा पाप पङ्क परहरिये॥ ५॥

मोक्ष नूं मारग संसर्ग तिहां ही, विघ्नभूत कहिवाय।
फुन दुर्गति ना कारण छै ए, पाप अठारै ताय॥
सुगुणा पाप पङ्क परिहरिये॥ ६॥

ते अष्टादश पाप प्रते मुनि, वोसिरावै धर खन्त।
संयम तप करि भावित आतम, महा ऋषि मतिवन्त॥
सुगुणा पाप पंक परहरिये॥ ७॥

इह विधि पाप प्रते वोसिरावि, भावै भावन सार।
परभव री चिन्ता तस पूरी, ए कह्यो चउथो द्वार॥
सुगुणा पाप पंक परिहरिये॥ ८॥

॥ इति चतुर्थ द्वार॥

पञ्चम द्वार

दोहा

अघ वोसिरावा नुं अख्यूं, तूर्य द्वार तन्त सार।
पञ्चम द्वारे पड़िवजे, चारु शरणा च्यार ॥ १ ॥

ढाल ५ मी

(देशी—जग वाल्हा रे जिनन्द पधारिया)

चउतीस अतिशय युक्त ही, अष्ट महा प्रतिहार्य हो।
वर शोभा, अति शोभा अशोकादिक तणी।
समवसरण शोभे रह्या, ते देव जिनेन्द्र सु आर्य हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो अरिहन्त नो॥
सुख करणं, भव तरण शरण भगवन्त नो॥ १ ॥

च्यार कषाय तजी तिणे, चिहुं दिशि मुख दीसंत हो।
तसु अतिशय, वर अतिशय श्री जिनराजनी।
चिहु विधि धर्म कथा कही, करै चिहुं गति दुःखनो अन्त हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो एहवा अरिहन्त नो॥
सुख करणं, भव तरण शरण भगवन्तनो ॥ मु० ॥ २ ॥

दग्ध वीज जिम तरु तणो, अङ्कुर प्रकट न होय हो।
तिम स्वामी, तिम स्वामी कर्मबीज दग्ध ही।
भव अङ्कुर प्रकट हुवै नहीं, तिण सू अरुहन्त कहिये सोय हो ॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो अरुहन्तनो।
शिव वरणं, भव तरण शरण भगवन्त नो। मु० ॥ ३ ॥
अन्तरङ्ग अरि जीपवे करी, अरिहन्त कहिये तास हो।
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो ते अरिहन्त नो।
पूजण योग्य त्रिण जगतनें, वारु अर्हन्त कहिये विमास हो।
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो ते अर्हन्त नो।
सुख करणं, शिव वरण शरणभगवन्तनो ॥ मु० ॥ ४ ॥
दुर्लंघ्य संसार समुद्र तिरी, जिके शिव सुख पाम्या सार हो।
अविनाशी, अविनाशी लही गति पञ्चमी।
सुख आतमीक अति ओपता, रह्या आवागमन निवार हो।
मुझ शरणं, मुझ शरणं थावो ते सिद्धां तणो।
सुख शाश्वत, सुख शाश्वत सुर थी अनन्त गुणा ॥ मु० ॥५॥
निविड़ कठिन जे कर्म ही, भांजी तप मुद्गर करी ताम हो।
थई आतम, थई आतम शीतली भूत ही।
लोकना अग्र विषै रह्या, अनाबाध क्षेम शिव ठाम हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो सिद्धांतणो॥ ६ ॥

बंध्या कर्म रुप इंधण प्रते, शुक्ल ध्यान रूप अनलेह हो।
भस्म कीया, भस्म कीया ते सिद्ध कहीजिये।
मल रहित सुवर्ण सरीष हो, वलु भाजन निर्मल अधिकेह हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो सिद्धांतणो॥ ७॥
तिहां जन्म जरा ने मरण नहीं, वलि रोग सोग दुःख नांहिहो।
एक समये, एक समये लोकांत जई रह्या।
धारुं अष्ट गुणे करी सहित हो, वलु प्रणमें श्री जिनराय हो॥
मुझ शरणो मुझ शरणो थावो सिद्धांतणो॥ ८।
जे दोष बयालीस रहित हो, लिये भ्रमर तणी पर आहारहो।
मतिवंता, मतिवंता मुनि महिमा निलो।
मंडलना पञ्च दोष परहरि, आहार भोगवै समचित्त सार हो।
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो ते साधां तणो।
भव तरणं, भव तरणं संतोषनुं सुख घणुं॥ मु०॥ ९॥
पञ्च इन्द्रिय दमण विषे जिके, अति तत्पर छै ऋषिराय हो।
वश कीधो, वश कीधो दुष्ट हय मन जिणे।
जीत्यो कंदर्प ना जे दर्प ने, सिद्धान्त ने वच करी ताय हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो साधांतणो॥ १०॥
मेरु समा पञ्च महाव्रत तणो, भार वहिवा वृषभ समानहो।
पञ्च समिते, पञ्च समिते करी समिता सदा।
पञ्च आचार सु पालता, पञ्चम गति अनुरक्त पिछाण हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो साधांतणो॥ ११॥

छांड्या सर्व संग स्त्रियादिक तणा, ज्यांरे शत्रु नें मित्र
समान हो।
तृणमणि सम, तृणमणि सम सुख दुःख सम वलि।
ज्यांरे निन्दा प्रशंसा समान ही, सम मान अनें अपमान
हो॥ मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो साधांतणो॥ १२॥

सप्तवीस गुणे करी शोभता, समता दमता निश दीह हो।
शुद्ध किरिया, शुद्ध किरिया मुक्ति-पन्थ साधता।
डरिया नरक निगोद ना दुःख थकी, मुनि लोपै नहिं जिन
लीह हो॥ मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो साधांतणो॥१३॥

केवल ज्ञानी परुपियो, बारु तेहिज धर्म विचार हो।
हितकारी, सुखकारी मुगति तेहथी लहै।
वले दुर्गति पड़ता जीव नें, धार राखै ते धर्म उदार हो॥
मुझ शरण, मुझ शरण जिनाज्ञा धर्मनो।
भवतरणं, भव तरण वरण शिव शर्मनो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो श्री जिन धर्मनो॥ १४॥

बीस भेद संवर तणा, वले निर्जरा ना भेद बार हो।
जिन आणा, जिन आणा विषै ए सर्व ही।
कर्म रुकै कटै तेहथी, आख्यो तेहिज धर्म उदार हो॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो श्री जिनधर्मनो॥ १५॥

सूत्र धर्म प्रभु आखियो, बलि चारित्र धर्म उदार हो।
हलुकर्मी, हलुकर्मी जीव तसु ओलखै।
ए दोनूं ही जिन आज्ञा मझै तिण स्यू धर्म कहीजे सार हो।
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो श्री जिनधर्मनो ॥ १६ ॥
संयम नें तप शोभता, बर संयम थी रुकै कर्म हो।
तप सेती, तप सेती बंध्या अघ निर्जरै।
ए दोनूंई जिन आज्ञा मझै, तिण सूं धर्म कहीजै पर्म हो ॥
मुझ शरणो, मुझ शरणो थावो श्री जिनधर्मनो ॥ १७ ॥

इति पञ्चम द्वार

षष्ठम द्वार

दोहा

इह विधि पञ्चम द्वार में, शरण पडिवज्जै च्यार।
दुकृत नी निन्दा हुवै, छट्ठा द्वार मझार॥ १॥

ढाल ६ ट्ठी

(देशी—सुख कारण भवियण)

भव माहैं भमतैं, ऊंधी श्रद्धा धारी।
मिथ्या मत सेव्यो, ते निन्दूं इह वारी॥ १॥
वले ऊंधो परूपी, घाली औरा रे शंक।
सगलां री साख सूं, ते निन्दूं तज वंक॥ २॥
कुतीर्थिक सेव्या, अथवा तेहना देव।
तसु प्रीत प्रशंसा, ते निन्दूं स्वयमेव॥ ३॥
गण थी निकलिया, टालोकर गणवार।
तसु वंद्या पूज्या, ते निन्दूं इह वार॥ ४॥
पञ्च आस्रव सेव्या, कीधी च्यार कषाय।
सहु साखे निन्दूं, दुर्गति हेतु ताय॥ ५॥

वीतराग नो मारग, मैं ढांक्यो किह वार ।
प्रगट कियो कुमारग, ते निन्दूं धर प्यार ॥ ६ ॥
यन्त्र घरटी ऊंखल, मूसल घाणी आदि ।
कीधा नें कराव्या, ते निन्दूं तज व्याधि ॥ ७ ॥
वलि कुटुम्ब पोष्या, दियो कुपात्रे दान ।
सहु साखे निन्दूं, पाप हेतु पहिचान ॥ ८ ॥
इत्यादिक दुकृत, त्रिहु जोगे करि कीध ।
तेहनी करै निन्दा, ए छट्ठो द्वार प्रसिद्ध ॥ ९ ॥

इति षष्ठम द्वार

सप्तम द्वार

दोहा

दुःकृत नी निन्दा वही , छट्ठा द्वार मझार ।
हिवें सुकृत अनुमोदना , दाखू सप्तम द्वार ॥ १ ॥

ढाल ७ मी

(देशी—प्रभवो मनमे चिंतवें, सीता सती सुत जनमिया)

ज्ञान दर्शन चारित तप भला , भव दधि माहीं जिहाज ।
सम्यक् प्रकारे सेविया , ते अनुमोदूं आज ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध ने आयरिया , उवज्झाया अणगार ।
तसु नमस्कार वंदना करी , ते अनुमोदुं सार ॥ २ ॥
सामायिकादिक जे भला , छऊं आवश्यक सार ।
उद्यम तेह विपें कियो . अनुमोदूं इहवार ॥ ३ ॥
सूत्र सझाय कीधी वलि , ध्यायो वारुं ध्यान ।
यति धर्म दस विध धर्‍यू , ते अनुमोदूं जान ॥ ४ ॥
पंच समित तीन गुप्त ही , महाव्रत वलि पंच ।
रूडी रीत आराधिया , ते अनुमोदूं सुसंच ॥ ५ ॥

बलि वेयावच दश विधि करी , साधु श्रावक नो धर्म ।
अदरायो उपदेश दे , ते अनुमोदूं पर्म ॥ ६ ॥
दान शील तप भावना , मैं सेव्या धर चित्त ।
दृढ़ समकित धरी आसथा , अनुमोदूं पवित्त ॥ ७ ॥
शासन एक दृढ़ावियो , गणपति ना गुणग्राम ।
अधिक हर्ष धर उचरथा , ते अनुमोदूं ताम ॥ ८ ॥
इत्यादिक सुकृत तणी , अनुमोदन सुविचार ।
मान अहंकार तजि करै , सप्तम द्वार मझार ॥ ९ ॥

॥ इति सप्तम द्वार ॥

अष्टम द्वार

दोहा

सुकृत अनुमोदन कही , सप्तम द्वार मझार ।
अष्टम द्वार विषै हिवै , भावै भावन सार ॥ १ ॥

ढाल ८ मी

(देशी—साहजी कठे पौढ़ै, किण जागां सोवैरे)

पुन्य पाप पूर्व कृत , सुख दुख ना कारण रे ।
पिण अन्य जन नहीं , इम करै विचारण रे ॥
भावै भावना ॥ १ ॥

पूरव कृत अघ जे, भोगवियां मुकाइं रे ।
पिण वेद्यां विना, नहीं छूटको थाइं रे ॥
भावै भावना ॥ २ ॥

जे नरक विषै म्हैं, दुःख सह्यो अनन्तो रे ।
तो मनुष्य नो, किञ्चित् दु.ख हूंतो रे ॥
भावै भावना ॥ ३ ॥

जे समकित विन में, चारित्र नी किरियारे।
वार अनंत करी, पिण काज न सरिया रे॥
भावै भावना ॥ ४ ॥

हिवै समकित चारित्र, दोनू गुण पायोरे।
वेदन सम पणै, सह्यां लाभ सवायो रे॥
भावे भावना ॥ ५ ॥

ओ तो अल्प काल में, तूटै अघ-जालोरे।
भगवती सूत्र में, कह्यूं परम कृपालो रे॥
भावै भावना ॥ ६ ॥

सूखो त्रिण पूलो, जिम अग्नि चिपेहो रे।
शीघ्र भस्म हुवै, तिम कर्म दहेहो रे॥
भावै भावना ॥ ७ ॥

जिम तप्त तवै जल, विन्दु विललावै रे।
तिम दु:ख समचित्ते सह्यां, अघ क्षय थावैरे॥
भावै भावना ॥ ८ ॥

दु:ख अल्प काल में, मुनि गजसुकमालो रे।
सम भावे करी, लही शिव-पट्ट-शालोरे॥
भावै भावना ॥ ९ ॥

अति तीव्र वेदना, वहु वर्ष विचारोरे।
सहि शिव संचस्या, चक्री सनत्कुमारोरे॥
भावै भावना ॥ १० ॥

जिन कल्पिक साधू, लियं कष्ट उदीरो रे।
तो आव्यां उदय, किम थाय अधीरो रे॥
भावै भावना॥ ११॥

सही चरम जिनेश्वर, वेदन असरालो रे।
सम भावे करी, तोड्या अघजालो रे॥
भावै भावना॥ १२॥

कष्ट अल्प कालरो, पछै सुर पद ठामो रे।
काल असंख्य लगे, दुःख रो नहीं कामो रे॥
भावै भावना॥ १३॥

सह्या वार अनन्ती, दुःख नर्क निगोदो रे।
तो ए वेदना, सहूं आण प्रमोदो रे॥
भावै भावना॥ १४॥

रह्यो गर्भावासे, सवा नव मासो रे।
तो ए वेदना, सहूं आण हुलासो रे॥
भावै भावना॥ १५॥

अति रोग पीड़ाणां, जग दुःख बहु पावै रे।
ते संभरी सहै, वेदन सम भावै रे॥
भावै भावना॥ १६॥

शूली फांसी फुन, भालों सूं भेदै रे।
बहु जन जग विषै, अति वेदन वेदै रे॥
भावै भावना॥ १७॥

ते तो जीव अज्ञानी, हुं तो ज्ञान सहितो रे।
सम भावे सहूं, वेदन धर प्रीतो रे॥
भावै भावना॥ १८॥

ए तो सुख नो हेतु, सहियां सम भावै रे।
बहु अघ निर्जरै, पुन्य थाट बंधावै रे॥
भावै भावना॥ १६॥

बहु कर्म निरजर्यां, थोड़ा भव मायों रे।
शिव-पद संचरै, आवागमन मिटायो रे॥
भावै भावना॥ २०॥

सुर-सुखनी वाछा, मन में नहीं कीजै रे।
सुख सुरलोक ना, दुःख हेतु कहीजै रे॥
भावै भावना॥ २१॥

सुख आतमीक नी, वांछा मन करतो रे।
इह विधि वेदना, सहै समचित धरतो रे॥
भावै भावना॥ २२॥

पुद्गल सुख पामला, तिण में गृद्ध थावै रे।
तो अघ संचो हुवै, अधिको दुःख पावै रे॥
भावै भावना॥ २३॥

नर इन्द्र सुरिन्द ना, काम भोग कंटाला रे।
तसु वांछा कियां, दुःख परम पयाला रे॥
भावै भावना॥ २४॥

तिण सू मुनि वेदन, सहै शिव-सुख कामी रे।
धर्म शुक्ल भलो, ध्यावै चित्त धामी रे॥
भावै भावना ॥ २५ ॥

बहु कर्म निर्जरा, तिण ऊपर दृष्टि रे।
राखै महामुनि, समता अति श्रेष्ठी रे॥
भावै भावना ॥ २६ ॥

स्वजनादिक ऊपर, छांडै स्नेह पाशा रे।
अति निर्मल चिते, शिवपुर नी आशा रे॥
भावै भावना ॥ २७ ॥

सङ्ग स्त्रियादिक ना, जाणै भुयंग समाणा रे।
समभावे रहै, मुनिवर महा स्याणा रे॥
भावै भावना ॥ २८ ॥

क्रोधादिक टाली, सम भावन सारो रे।
दृढ़ चित्त करी धरै, ए अष्टम द्वारो रे॥
भावै भावना ॥ २९ ॥

॥ इति अष्टम द्वार ॥

नवम द्वार

दोहा

अष्टम द्वारे भावना, आखी अधिक उदार।
नवमा द्वार विषै हिवै, अणसण नो अधिकार॥ १॥

ढाल ९ वीं

(देशी—वैरागे मन वालियो। हिवै राणी पद्मावती)

अनन्त मेरू मिश्री भखी, पिण तृप्ति न हुवो लिगार।
इम जाणी मुनि आदरै, अणसण अधिक उदार॥
इह विधि अणसण आदरै॥ १॥

ते अणसण द्वि विध-जिन कह्यो, पञ्चम अंगे पिछाण।
पाउत्रगमन ते प्रथम ही, दूजो भत्त पच्चक्खाण॥
इह विधि अणसण आदरै॥ २॥

प्रथम नमोत्थुणं गुणै, सिद्ध भणी सुखकार।
द्वितीय नमोत्थुणं वलि, अरिहंत नें धर प्यार॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ३॥

धर्माचार्य नें करै, निर्मल चित्त नमस्कार।
त्याग करै त्रिहुं आहार ना, जाव जीव लग सार॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ४॥

अवसर देखी नें करै, उदक तणो परिहार।
तृषा परीषह ऊपनां, अडिग रहै अणगार॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ५॥

धन्नो काकंदी तणो, पाउवगमन पिछाण।
मास संथारै सुर थयो, सव्वठसिद्ध महा विमाण॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ६॥

पाउवगमन खंधक कियो, मास संथारो सार।
अच्युत-कल्पे ऊपनो, चव लेसी भव पार॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ७॥

इमहिज मेघ मुनि भणी, आयो मास संथार।
विजय-विमाणे ऊपनो, मनु थई शिव-सुख सार॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ८॥

पाचू पाडव परखड़ा, मास पारणो न कीध।
पचख्यो पाउवगमन ही, मास संथारै सिद्ध॥
धन्य २ धन्य २ महामुनि॥ ९॥

तीसक मुनिवर नें भलो, मास संथारो न्हाल।
सामानिक थयो शक्र नो, अष्ट वर्ष चरण पाल॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १०॥

कुरुदत्त चरण छः मास ही, अठम अठम तप जाण।
संथारो अर्द्ध मास नो, पाम्यो कल्प ईशान॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ ११॥
मदनसंब महिमा निलो, वलि अनिरुद्ध कुमार।
अधिक रूपं अणसण करी, पोंहता मोक्ष मझार॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १२॥
आठू अग्रमहेषियां, कृष्ण तणी चरण धार।
अति तप करी अणसण ग्रही, पहुंती मोक्ष मझार॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १३॥
नंदादिक तेरै वलि, नृप श्रेणिक नी नार।
चरण ग्रही अणसण करी, पामी शिव-सुख सार॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १४॥
इत्यादिक मुनि महा सती, याद करै मन मांय।
भूख तृषादिक पीडिया, दृढ़ चित्त अधिक सवाय॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १५॥
शूर चढै संग्राम मे, तिम मुनि अणसण माय।
कर्म-रिपु हणवा भणी, शूरवीर अधिकाय॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १६॥
जन्म मरण दुःख थी डर्या, शिव-सुख वाछा सार।
ते अणसण मे सैंठा रहै, ए कह्युं नवमुं द्वार॥
धन्य २ धन्य २ महा मुनि॥ १७॥

॥इति नवम द्वार॥

दशम द्वार

दोहा

नवम द्वारे अणसण कह्युं, हिवै कहूं दशमो द्वार।
नमुक्कार परमेष्ठी पंच, जपता जय जयकार ॥ १ ॥

ढाल १० वीं

(देशी—प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी)

नाना विधि पाप तणो कामी, जिको मरण तणो अवसर पामी।
शूर पणो ते लहै सारं ॥ इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ १ ॥
जेहनें सखायपणेज करी, पामे परभव में सम्पति सखरी।
लहै मन वाछित फल सुखकारं ॥
इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ २ ॥
सुलभ रमणी राज्य लहै, वलि सुलभ देव पणो जग है।
पिण समकित सहित एह दुलभ सारं ॥
इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ३ ॥
जे समकित चरण सहित नवकार धरै, तिको भव दधि गोपद जेम तिरै।
वारुं शिव-सुख नें ए संचकारं ॥
इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ४ ॥

पञ्च परमेष्ठी प्रते समरी, तिको भील तणो भव दूर करी।
ओ तो पञ्चम कल्पे अवतारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ५ ॥

ते भील नी रत्नवती नारी, पञ्च परमेष्ठी तिमज हियै धारी।
आ पिण पञ्चम कल्पे अवतारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ६ ॥

पन्नग पुष्प नी माल थई, नवकार प्रभावे कीर्त्ति लही।
सुख श्रीमती उभय भवे सारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ७ ॥

अग्नि ठण्डी कीधी देवा, कियो कनक सिंहासन ततखेवा।
ऊपर अमरकुमार प्रति वैसारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ८ ॥

नवकार मंत्र सेठ संभलायो, सुण जाप जप्यो तिण सुखदायो।
लह्यो मावत सुर नो अवतारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ९ ॥

वाल वछड़ा चरावतो जिह वारं, नदी पूर आया गुण्यो नवकारं। थई ततक्षिण सरिता दोय डारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ १० ॥

सेठ समुद्र में डूबंतो, नवकार गुण्यो धर चित्त शातो।
सुर जहाज उठाय म्हेली पारं ॥

इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ११ ॥

तो चारित्र सहित जिको नाणी, पञ्च परमेष्ठी ओलख जपै जाणो। तो स्यू कहियै तसु फल सारं॥
इम जाण जपो श्री नवकारं॥ १२॥

शुद्ध एकाग्र चित्त तन मन सेती, पार पुगावै निपजाइ खेती। ध्यान सुधारस दिल धारं॥ इम जाण जपो श्री नवकारं॥१३॥

ओ तो चरण अमोलक कर आयो, पद आराधक जे मुनि पायो। करै सर्व दुखा रो छुटकारं॥
इम जाण जपो श्री नवकारं॥ १४॥

मरणांत आराधना इह रीतं, करै दश विधि तन मन धर प्रीतं। ते संसार समुद्र तिरै पारं॥
इम जाण जपो श्री नवकारं॥ १५॥

संवत् उगणीसै वर्ष पणतीसं, रची जोड़ श्रावण विद छट्ठ दिवसं। पायो शहर बीदासर सुखसारं॥
इम जाण जपो श्री नवकारं॥ १६॥

भिक्षु भारीमाल गणि ऋषिरायो, शुद्ध तास प्रसादे सुख पायो। वारु जय जश सम्पति जयकारं॥
इम जाण जपो श्री नवकारं॥ १७॥

॥ इति दशम द्वार॥

॥ इति चतुर्थाचार्य श्रीमज्जयाचार्य कृत आराधना सम्पूर्णम्॥

श्रावक-आराधना

॥ दोहा ॥

श्री अरिहन्तादिक सहु, पांचू पद सुखकार।
मन वचनें काया करी, करूं तसु नमस्कार॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध साहु वलि, केवली भापित धर्म।
ये च्यारूं शरणा थकी, प.मैं शिव-सुख पर्म॥ २ ॥
श्रावक ने वलि श्राविका, व्रत धारक हुवै जेह।
केवली भापित धर्म मे, राखै नहीं सन्देह॥ ३ ॥
लिया व्रत पालै वलि, श्रीजिन मत सू प्यार।
उपसर्ग थी चल चित्त नहीं, लोपै नहीं गुरु कार॥ ४ ॥
कर्म योग थी किण समैं, लागै दोप तिवार।
गुरु मुख प्रायश्चित लेकरी, दण्ड करै अङ्गीकार॥ ५ ॥
मुनि आलोवै दस विधै, आराधन सुखकार।
तिणि पर श्रावक पडिक्कमे, समकित व्रत अणाचार॥ ६ ॥
आराधना जयाचार्य कृत, जोड़ पुरातन जान।
तिण अनुसारे मैं कहूं, सुणिज्यो चतुर सुजान॥ ७ ॥

ढाल १ ली

(वेंदक जग विरला ॥ ए देशी)

श्रीजिन धर्म मांहि जे रसिया,
त्यारै देव गुरु दिल बसियारे।
श्रावक गुण रसिया ॥
हाड वलि जे हाड नीं मीजी,
धर्म थको रहै भीजीरे।
श्रावक गुण रसिया ॥ १ ॥
कुगुरु कुदेवनी वंछै न सेवा,
धीर वीर गुण गेहवा रे।
श्रावक गुण रसिया ॥
धर्म में दृढ़ रहै नित मेवा,
अडिग है सुरगिर जेहवारे।
श्रावक गुण रसिया ॥ २ ॥
व्रत पचखाण सूधा जे पालै,
निज आतम उज्वालैरे।
श्रावक गुण रसिया ॥
अतिक्रम व्यतिक्रम नांहि सम्भालै,
अतिचार अणाचार टालै रे।
श्रावक गुण रसिया ॥ ३ ॥

कर्म योग दोष लागै किंवार,
तो दण्ड करै अङ्गीकार रे।
श्रावक गुण रसिया ॥
विहुं टक आलोयणा लेवै,
पक्खी दिन तो अवश्यमेवरें।
श्रावक गुण रसिया ॥ ४ ॥
चौमासी नहीं चूकै लिगार,
शुद्ध परिणाम सुविचार रे।
श्रावक गुण रसिया ॥
पर्व छमच्छर आवै जिंवारे,
पौषध अष्ट पोहर धारै रे।
श्रावक गुण रसिया ॥ ५ ॥
ध्यान करी शुभ भावना भावै,
लख चौरासी योनि खमावै रे।
श्रावक गुण रसिया ॥
प्रमाद छांड़ी निज ध्येय ध्यावै,
आराधक पद पावै रे।
श्रावक गुण रसिया ॥ ६ ॥

प्रत संसारी फुन हलु कर्मी,
जगवल्लभ प्रिय धर्मी रे।
श्रावक गुण रसिया ॥
व्रतालोयण किम करत उदार,
आखू तें अधिकार रे।
श्रावक गुण रसिया ॥ ७ ॥
समकित रतन जतन थी राखे,
न हुवै दुःख, शिव-सुख चाखेरे।
श्रावक गुण रसिया ॥
जिम कर्दम थी पङ्कज न्यारो,
तिम संसार मझारो रे।
श्रावक गुण रसिया ॥ ८ ॥
लूखै परिणाम वसै घरवासा,
राखे छाडणरी आशा रे।
श्रावक गुण रसिया ॥
इण भव परभव में सुख पावै,
ढाल प्रथम ये गावै रे।
श्रावक गुण रसिया ॥ ९ ॥

दोहा

प्रथम द्वार आलोयणा, द्वितीय व्रत आरोप।
तृतीय जीव खमायवा, शुद्ध मन थीं तज कोप॥ १॥
चौथे पापज परहरै, पंचमें शरणा च्यार।
छट्ठे दुकृत निन्दवा, सप्तम सुकृत सार॥ २॥
भावै रूड़ी भावना, अष्टम द्वार मझार।
नवमें अणशण चित्त धरै, दशम सुमरै नवकार॥ ३॥

ढाल २ जी

(चोपाई नी देशी)

सुणिये हिवै प्रथम द्वार, तिणमें आलोयणा अधिकार।
ज्ञान दरशण चारित तपसार, पडिकमें व्रत अणाचार॥ १॥
श्री जिनवर वचन उदार, सांचा श्रद्धया न हुवै किणवार।
तसु राखी नहीं प्रतीत, रुचिया न हुवै सुवदीत॥ २॥
अक्षर दीर्घ लघु बोलंता, आलस करी अर्थ खोलंता।
पद हीण कह्या हुवै कोय, लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं सोय॥ ३॥
काम विनयादिक आठ प्रकार, भणवे जे ज्ञान - आचार।
विनय रहित भण्यो हुवै ज्ञान, तसु मिच्छामि दुक्कड़ं जान॥४॥
पाठ अर्थ विरुद्ध जे कीन्हो, मिथ्या अर्थ सांचो कह दीन्हो।
कीधी ज्ञान-आशातना कोय, थावो मिच्छामि दुक्कड़ं मोय॥५॥

भाजन विन ज्ञान भणायो, साचो अर्थ झूठो दरशायो।
सूत्र विरुद्ध प्ररूपणा कीधी, लेऊं आलोयणा तसु सीधी ।६॥
पाखण्डियांरा वचन सुहाया, सूत्रा में गपोड़ा बताया।
शङ्का पाड़ी हुवै दूजारे, लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं सार॥ ७॥
व्याख्यान आदिकरै म्हांय, सुणतारै दीधी अन्तराय।
क्रोध वश थी विविध प्रकार, भाषा बोली विना विचार॥८॥
पांच ज्ञान निन्दविया सोय, वलि गोपविया हुवै कोय।
निन्दा ज्ञानी तणी करी जेह, थावो मिच्छामि दुक्कड़ं तेह॥ ९॥

इम दर्शनना अतिचार, आलोयणा करू' तसु सार।
आठ गुण जे सम्यक् प्रकार, धार्या न हुवै विनय विचार॥ १०॥

कुगुरु कुदेवांरी ताण, प्रशंसा करी हुवै जाण।
वलि सासता परिचा में रक्त, करी हुवै त्यांरी भक्त॥ ११॥
जीवा-जीव अजीव ने जीव, धर्म अधर्माधर्म अतीव।
साहु असाहु साहु ने असाध, मार्ग कुमार्ग इमहिज लाध॥ १२॥

मोक्ष वाला ने अमोक्ष गयो, हांसी स्वपरवशथी कह्यो।
ए सर्व बोलारो सोय, थावो मिच्छामि दुक्कड़ं मोय॥ १३॥
सूत्र साधु अने छःकाय, फुन सिद्ध संसारी म्हांय।
शङ्का राखी हुवै किण वार, होज्यो मिच्छामि दुक्कड़ं सार॥१४॥

गहन वातां आगम में आई, सांभल ने लेखो लगाई।
विपरीत समझ समझाई, लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं गाई ॥ १५ ॥
कह्या साधु साध्वी जान, एकम पूनम चन्द समान।
अनन्त गुण फेर संजम मांहि, त्यांमें शङ्का राखी हुवै काहि ॥ १६ ॥
किञ्चित् दोष लगावता देखी, संजम श्रद्धया न हुवै धरि सेखी।
पर पूठ निन्दा करी कोय, थावो मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥१७॥
करड़ी प्रकृति किणीरी जाणी, चारित में शङ्का आणी।
थयो गण अपरांठो किवार, लेऊं मिच्छामि दुक्कडं धार ॥१८॥
गणिनाथ ना अवगुण गाया, वलि गणथी कलुष भाव आया।
सुविनीतरा भाव फिरायो, तसु मिच्छामि दुक्कडं थायो ॥१६॥
देव गुरु धर्म उदार, देश सर्व शङ्का दिल धार।
तेहनुं मिच्छामि दुक्कडं सार, हिवै शंका न राखू लिगार ॥२०॥
कह्या अन्यमति नी वंछा जानी वाह्य क्रियावन्त वुगलध्यानी।
तसु प्रशंसा सेवा कीध, थावो मिच्छामि दुक्कडं प्रसिद्ध ॥२१॥
वितिगिच्छा संदेह फल माहीं, पोतै राखी औराने रखाई।
तेहनुं त्रिविध २ मोय, थावो मिच्छामि दुक्कडं सोय ॥२२॥
जिन-आज्ञा में धर्म न जाण्यो, आज्ञा वाहर धर्म वखाण्यो।
हिंसा किया धर्म कह्यो कोय, थावो मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥२३॥

पञ्च परमेष्टी ना गुण गाऊं, सांचो श्रद्धूं दूजा ने श्रद्धाऊं ।
म्हारे शिव-सुखनी हद चाह, तिहां जावण रो करूं
उपाय ॥२४॥
मोह कर्म पतलो नित करस्यूं, भव सागर पार उतरस्यूं ।
दूजी ढाल में प्रथम द्वार, वलि आगै वहु विस्तार ॥२५॥

दोहा

देश चारित्तना पडिक्मुं, गुणियासी अतिचार ।
(तिणमें) साठ द्वादश व्रतना, पन्द्रह कर्मादान टार ॥ १ ॥
पञ्च अणुव्रत अति भला, गुण व्रत त्रण अवधार ।
चिहुं शिखा ये द्वादशू, व्रत म्हारे सुखकार ॥ २ ॥
लेऊं तसु आलोयणा, आराधक पद हेत ।
लख चौरासी नहीं रुलूं, सूत्र तणें संकेत ॥ ३ ॥

ढाल ३ जी

शल्य कोई मत राखज्यो ॥ एदेशी ॥

व्रतालोयण मैं करूं, शुद्ध परिणामें होई रे ।
भोला वालक नीं परै, म्हारी आतमा लेऊं धोई रे ॥
व्रतालोयण मैं करूं ॥ १ ॥

त्रस जीव गाढे बाधणें, बाध्या हुवै विण दीसो रे ।
गाढे घावे घालिया, अतिभार घाल्या करि रीसो रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ २ ॥
चामडी छेदी शस्त्र थी, भात पाणीनों विछोयो रे ।
विन अपराधे आकूटी, हणवा बुद्धि करी हण्या मोयोरे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ३ ॥
आल कूठा विण जीव रें, दिया हुवे विण वारो रे ।
छानी वात प्रकाश नें, कियों हुवें किणरो विगारो रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ४ ॥
मृषा उपदेश दिया वलि, लेख कूडा लिख्या ताणो रे ।
राज पंचा मुख आगलें, कूठी साख भराग्रो रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ५ ॥
थापण मोसा जो किया, इत्यादि मृषा वायो रे ।
हासी कौतूहलथी कह्या, फुन लोभ तणें वस आयो रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ६ ॥
चोर तणी परें चोरिया, ताले तोड वदोतोरे ।
परकुंचियादि कारणें, चोर सुं करी हुवें प्रीतो रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ७ ॥
वस्तु चोरी नीं लेई हुवें, वलि माफ दियो किणवारो रे ।
अदल वदल कपटे करी, कियो राज्य विरुद्ध व्यापारोरे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ८ ॥

चोखी वस्तु दिखाय ने, वस्तु निकमी आपी रे ।
लोभ तणै वश आयनै, खोटा नापणा नापी रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ९ ॥

देव मनुष्य तिर्यंच थी, देवाङ्गना सङ्ग होई रे ।
परस्त्री अनें तिर्यंचणी, माठी नजरां जोई रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १० ॥

काल थोडानी राखी थकी, कुशील सेयो रक्त होईरे ।
हस्तकर्म्मादिक जोग सू, पाप लागो हुवै कोई रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनू ॥ ११ ॥

अपरिग्रही वेश्या आदिसुं, मैथुनादिक अभिलाषी रे ।
तीव्र परिणामे सेवियो, चक्षु कुशीले भाकी रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनू ॥ १२ ॥

केला अनेक प्रकार सू, स्त्रियादिक सूभावी रे ।
नाता जुडाया परतण', परने हर्ष धरी परणावी रे ॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनू ॥ १३ ॥

खेतु वत्थु हिरण्य सुवर्णनें, धन धानादिक म्हायोरे ।
कुम्भीधातु द्विपद चौपद घणा,मर्याद उपरांत बधायोरे॥
थावो मिच्छामि दुक्कडं तेहनू ॥ १४ ॥

ढाल भली ये तीसरी, कही धुर द्वार मभारो रे ।
आगे विस्तार छै बलि घणू, सांभलतां सुखकारो रे ॥
व्रतालोयण मैं करूं ॥ १५ ॥

दोहा

गुणव्रत छे त्रण म्हांयरे , यथा शक्ति परिमाण ।
दोष लागो हुवे तेह मे , आलोयणा तसु जाण ॥ १ ॥
चिहुं शिक्षा चोटी समा , आदरिया गुरु पास ।
दूषण लाग्यो किण समें , आलोयणा कहुं तास ॥ २ ॥
तम्बोलीना पान जिम , बारम्बार सम्भाल ।
करतां आतम ऊजली , प्रगट थाय गुणमाल ॥ ३ ॥

ढाल ४ थी

(भोला भ्रमरे क्यों भम्यो, क्यो तुज आलज ऊठी रे ॥ ए देशी ॥)

दिशि मर्याद थकी कदा, आगे जाय पाप कीनो रे ।
ऊंची नीची तिरछी दिशा मझे, कम वेसी गिण लीनो रे ॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १ ॥
संदेह सहित गतागति करी, आघो पाछो पग दीधो रे ।
विन राखी भूमि तणो, आहार कियो पाणी पीधो रे ॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ २ ॥
सचित अचित द्रव्य भोगव्या, वलि गहणा वस्त्र सवायो रे ।
एक अनेक वेलां कोई, अधिको भोग मे आयो रे ॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं । ३ ॥
पन्द्रह कर्म्मादान सेविया, वलि अनेरा पासो रे ।
मन वचन काया करी, अनुमोद्या हुवे जासो रे ॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ ४ ॥

कथा करी कंदर्पनी, भांड - कुचेष्टा कीधी रे।
विन अर्थ पापारम्भ किया, शस्त्र तीखा कस्या सीधी रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं तेहनूं॥ ५ ॥

सामायक मे किण समैं, हासी कौतूहल अथायो रे।
विन जोया विन पूजियां, तन चञ्चलता सवायो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं तेहनूं॥ ६ ॥

आया विना पारी हुवैं, भाषा सावज्भ बोली रे।
सामारिक कारज मर्मैं, मननी लगाई ओली रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं॥ ७ ॥

सामायक मर्याद थी, ओछी करी हुवैं तायो रे।
देव गुरु धर्म तीनना, अविनय मे चित्त ल्यायो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं तेहनूं॥ ८ ॥

देशावगासी जे व्रत छैं, ते नहीं सेयो सेवायो रे।
वस्तु आमी सामी वारली, आपो पुद्गल शब्दे जणायो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं तेहनूं॥ ६ ॥

पौषध करतां किण समैं, सेया सावद्य कामा रे।
विन जोया विन पूंजिया, फिरिया आमाने सामा रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं तेहनूं॥ १० ॥

उच्चारपासवण भूमिका, उपग्रण सेभ्फा संथारो रे।
सुपडिलेहणा न कीधी हुवैं, निन्दा विकथा थी प्यारो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कड़ं तेहनूं॥ ११ ॥

शुद्ध साधु निर्ग्रन्थने, अप्रिय वचन जे भाख्यो रे।
हेला निन्दा करि तेहनी, आल अछतो दाख्यो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १२ ॥

चौदह प्रकारनूं दान जो, असूझतादिक दीधो रे।
स्व पर वश किण अवसरे, साधुरे काजे कीधो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १३ ॥

म्हेली प्रासू वस्तु सचित पे, वलि सचित थी ढांक्यो रे।
अणगमतो आहार साधुने, माडाणी करि नाख्यो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १४ ॥

भाणें बैठ मुनिराजनी, भावना नहीं भाई रे।
दान आलस थी नहीं दियो, शुद्ध मिलिया जोगवाई रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १५ ॥

ये द्वादश व्रतां तणी, आलोयणा करी सीधी रे।
जिन सिद्ध साधू साख थी, आतम निरमल कीधी रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १६ ॥

तप आचार द्वादश विषै, अभिग्रह त्याग अनेको रे।
तसु अनाचार सेव्यो हुवै, बलवीर्य गोप्यो विशेषो रे॥
लेऊं मिच्छामि दुक्कडं तेहनूं ॥ १७ ॥

चौथी ढाल कही भली, कह्यो पहलो ये द्वारो रे।
कहता सुणता सुख लहै, आनन्द हर्ष अपारो रे॥
प्रथम द्वार इम जाणज्यो ॥ १८ ॥

इति प्रथम द्वार

॥ कलश ॥

इम प्रथम द्वार सुधार आतम, व्रत आलवणा जे कही।
इण रीत जे श्रावक शुद्धातम, किया आराधक सही॥
लाग्यो हुवै कोई दोष तेहनूं, गुरु मुख प्रायश्चित लही।
तप अग्नि सूं कर्म काष्ट जालीं, पालिये व्रत ऊम्हही॥ १॥

॥ अथ दूसरो सम्यक व्रतारोपण द्वार ॥

दोहा

अव्रतथी गृहस्थाश्रमें, अनेक पाप उत्पन्न।
आरंभ परिग्रह सर्वथा, तजस्यूं ते दिन धन्न॥ १॥
पूर्वे सुगुरु समीप में, समकित व्रत लिया तेह।
ते हिवड़ां फुन ऊचरूं, सिद्ध साधु साखेह॥ २॥

ढाल ५ वीं

(अरिहंत मोटका ए देशी)

समकित शुद्ध मन आदरूं ए, अरिहन्त छै मुझ देव कै।
गावूं गुण जेहना ए, सांचै मन करूं सेव कै॥
समकित आदरूं ए॥ १॥
ते कर्म रूप अरिजण हण्या ए, रोक्या छै पापना द्वार कै।
रागद्वेष क्षय किया ए, निजगुण प्रगट उदार कै॥
समकित आदरूं ए॥ २॥

लोकालोक नी वस्तुना ए, जाण रह्या सब भाव के ।
जिन नाम कर्म थी ए, अतिशय अधिक अथाय के ॥
गावू गुण जेहना ए ॥ ३ ॥
नर सुर इन्द्रादिक बहु ए, नरपति सारे सेव के ।
कहूं गुण किहा लगे ए, मोटा प्रभु देवापति देव के ॥
गावू गुण जेहना ए ॥ ४ ॥
चौतीस अतिशय ओपता ए, पैंतीस वाणी वदीत के ।
द्वादश गुण भला ए, अष्टादश दोष रहित के ॥
गावू गुण जेहना ए ॥ ५ ॥
शुद्ध साधु गुरु म्हायरे ए, पञ्च समिति हुंशियार के ।
महाव्रत पंच पालता ए, तीन गुप्ति धर प्यार के ॥
एहवा गुरु म्हायरे ए ॥ ६ ॥
च्यार कषाय निवारने ए, पाले छै तेरा बोल के ।
परिषह सहन में ए, सुर गिर जेम अडोल के ॥
एहवा गुरु म्हायरे ए ॥ ७ ॥
सतरे विध संजम धरा ए, असंजम सतरे टार के ।
बावन अणाचार तजे ए, दोष बयाली परिहार के ॥
एहवा गुरु म्हायरे ए ॥ ८ ॥
धर्म जिनेश्वर भाषियो ए, अहिंसा सुखकार के ।
वलि जिन-आणमे ए, न होवे पाप लिगार के ॥
धर्म शुद्ध आदरूं ए ॥ ९ ॥

वलि दुरगति पड़ता जीवनें ए, धारी राखै ते धर्म कै ।
साधु श्रावकनुं भलो ए, पाल्यां शिव सुख परम कै ॥
धर्म शुद्ध आदरूं ए ॥ १० ॥

व्रतमें धर्म जाणू खरो ए, अव्रत अनर्थ मूलकै ।
दया अनुकम्पा भली ए, धर्म थी छै अनुकूल कै ॥
धर्म शुद्ध आदरूं ए ॥ ११ ॥

करुणा मोह स्नेहथी ए, किया पाप सुजाण कै ।
अव्रत सेवाविया ए, अधर्म वह्यो जगभाण कै ॥
धर्म शुद्ध आदरूं ए ॥ १२ ॥

कुगुरु कुदेव कुधर्मनें ए वोसराऊं इणवारकै ।
यथाशक्ति आदरूं ए, व्रत पचक्खाण उदारकै ॥
धर्म शुद्ध आदरूं ए ॥ १३ ॥

पहिला व्रत त्रस जीवनें ए, आकूटी नें जाण कै ।
हणवा बुद्धि करी ए, मारण मरावण पचक्खाण कै ॥
व्रत इम आदरूं ए ॥ १४ ॥

राज दण्डै लोक भण्डै ए, इसो मोटो भूठ परिहार कै ।
दूजो व्रत जाणिये ए, करण जोग सुविचार कै ॥
व्रत इम आदरूं ए ॥ १५ ॥

ताली तोड़ि परकुञ्जीसुं ए, परधन चोरण नेम कै ।
करण जोगे करी ए, तीजो व्रत करै एम कै ॥
व्रत इम आदरूं ए ॥ १६ ॥

देव देवी तिर्यञ्च थी ए, परस्त्री वेश्या आदि कै।
मनुष्य मनुष्यणी ए, चौथी मैथुन मर्याद कै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ १७॥

पञ्चमे परिग्रहनूं करूं ए, यथा शक्ति परिमाण कै।
नव विध जे कह्यो ए, धन धान्यादिक जाण कै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ १८॥

ऊंची नीची तिरछी दिशा ए, जावण राखी जेह कै।
उपरान्त जायनें ए, पञ्च आश्रव पचखेह कै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ १९॥

उपभोगनें परिभोगमे ए, आवै छै छव्वीस वोलकै।
त्याग किया तिके ए, सातमूं व्रत अमोलकै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ २०॥

आठमे अनर्थ दंडना ए, त्याग करै जावज्जीवकै।
च्यार प्रकारना ए, कह्या पाप अतीवकै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ २१॥

सामायिक नवमे करै ए, दशमे संवर जाणकै।
पोसो व्रत ग्यारमूं ए, बारमूं साधांनें दे दानकै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ २२॥

ढाल भली ए पांचमी ए, आख्यो छै दूजो द्वारकै।
श्रावक शुभ भावसूं ए, आराधै धर प्यारकै॥
व्रत इम आदरूं ए॥ २३॥

कलश

ए कह्यो दूजो द्वार सार, उदार आराधन तणूं ।
व्रत धार पार संसार करिवा, मुक्ति वरवा मनघणूं ॥
पाप टाल पखाल आतम, निर्मल कर भल भावसूं ।
भ्रम जाल आल पंपाल तज भज, जिन कृपाल उम्हावसूं ॥१॥

॥ इति ॥

अथ तीजो खमावण द्वार

दोहा

व्रतधारक भवि शुद्ध मन, खमतखामणा सार ।
निरमल आतम किम करै, आखूं ते अधिकार ॥ १ ॥
सरल पणें वच कायसूं, मन थी कपट निवार ।
नमन भाव दिल आणिनें, खमाविये तज खार ॥ २ ॥

ढाल ६ ट्ठी

(सभव साहिब समरियें । एदेशी ।)

सात लाख योनि महीधरा, सात लाख अप्प पाणीनी जोणके ।
सात लाख तेऊ अग्निनी, वायु पिण इतनी कही गोणके ॥
खमतखामणा तेह थी ॥ १ ॥

एक जीव इक तनु मांहि, तेह प्रत्येक वनस्पति काय कै।
दस लख योनि जिन कही, चौदह लख साधारण ताय कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २॥

जीव अनन्ता एक सा, एक शरीर मे रह्या तिण न्याय कै।
लीलण फूलण आदि मे, जमीकन्द अंकुरा मांय कै॥
खमतखामना तेह थी॥ ३॥

सूक्ष्म वादर विहुं परै, क्रोध भाव आण्या हुवै कोय कै।
त्रिविध त्रिविध म्हांयरै, मिच्छामि दुक्कड़ं छै अवलोय कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ४॥

वादर पाचू कायनें, हणी हणाई निज पर काज कै।
अनुमोदी हणतां प्रते, ते तिहुं जोग आलोवू आज कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ५॥

लट गिंडोला वेंद्री कीड़ादिक, तेन्द्री ना जीव कै।
खटमल प्रमुख विणासिया, कलुष भाव करि पाड़ी रीव कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ६॥

माखी माछर चौरिन्द्री, विच्छु प्रमुख हण्या हुवै सोय कै।
ये तिहुं विक्लेन्द्री तणी, योनि लख जाणो दोय दोय कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ७॥

रत्नप्रभा जाव तमतमा, सात नरक मे नेरीया जेहकै।
च्यार लाख योनि तेहनी, तास खमावूं शरल पणेह कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ८॥

च्यार प्रकारे देवता, भुवनपति व्यन्तर सुविचार कै।
ज्योतिषी अनें विमानका, चिहुं लख योनि घणो अधिकार कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ९॥

द्वेप भाव किण अवसरै, आण्या हुवै वलि कलुप परिणाम कै।
तास खमावूं भली परै, खमज्यो तुम्हें देवा अभिराम कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १०॥

तूर्य लाख तिर्यञ्चनी, जलचर में मच्छादिक जाण कै।
थलचर थलपै चालता, हाथी अस्वादिक बहु प्राण कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ ११॥

उरपर उर से गति करै, सर्पादिक वलि विविध प्रकार कै।
भुजपर ऊन्दर आदि हैं, तासु खमावूं तज चित्त खार कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १२॥

गमन आकाश करै तसु, खेचर पंखी कहिजे जास कै।
हांस कौतूहलादिक करी, हण्या हणाया हुवै वलि तास कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १३॥

पांच भेद तिर्यञ्च ये, मन विमना इन्द्रिय धर पांच कै।
सर्व प्रते तीन जोग सूं, खमतखामणा करूं तज खांच कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १४॥

चौदह लख योनि मनुष्यनी, सूत्र विषै भाषी जिनराय कै।
तसु मल मूत्रादिक मंहि, छमूर्छम मनु उपजै आय कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १५॥

ये चौरासी लख जाणिये, जीवा जोणि जे उपजण ठाम कै।
वारम्वार ते सब प्रते, खमतखामणा छै अभिराम कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १६ ॥

देव अरिहन्त जे केवली अनन्त चौवीसी हुई भर्त जेह कै।
इमहिज ऐरवय पंचमें, वर्तमान जिन पंच विदेह कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १७॥

विनय करी कर जोड़नें, मन शुद्ध थी खमज्यो अपराध कै।
भव भव शरणो तुम तणो, तिणसुं थावै परम समाधि कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १८॥

दूजै पद सिद्ध सू करूं, पूर्व प्रयोगे गति परिणाम कै।
सर्वार्थ सिद्ध थी अछै, द्वादश योजन ईसीप्रभा नाम कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ १९॥

ते थी उद्र्ध्व लोकान्तकै, गाऊ इकरै छट्ठे भाग कै।
अनन्त गुणी तुम्हें जई वस्या, हिवै पायो मैं तुम तणो
मागकै॥ खमतखामणा तेह थी॥ २०॥

जे कोई जाण अजाणतां, आशातना हुई तासु खमाय कै।
आवण तिहां मन लगरह्यो, तुम सरिषो तुम जपियां थाय कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २१॥

आचारज तीजे पदै, सम्यक्त चर्ण तणा दातार कै।
शुद्ध प्ररूपण जेहनीं, महा उपकारी महा सुकार कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २२॥

उवज्झाया गण वत्सलू, भणें भणावे निर्मल ज्ञान कै।
गणिआणा न उलंघता, पालै पञ्च महाव्रत मान कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २३॥

दाता समकित चर्णरा, देश व्रत पालू तुम जोग कै।
जे कोई जाण अजाणता, आशातना हुई विन उपयोग कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २४॥

शुद्ध साधु अढी द्वीप में, पञ्चयाम नव कल्प विहार कै।
निरलोभा निरलालची, जाच दोष 'बयाली टार कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २५॥

भिक्षु-गणमें महा मुनि, साध्विया सहु गुणभण्डार कै।
अप्रिय वच तसु दर्प थको कियो अविनय खमाऊं सारकै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २६॥

गुण विहूणा गण बाहिरा, टालोकर वलि भ्रष्टाचार कै।
तास खमायू भली परै, किण अवसरे कियो कलुप विचार कै।
खमतखामणा तेह थी॥ २७॥

मात पिता सुतने धुया, वलि तसु अङ्गज थी किण काल कै।
बान्धव न्याती गोती से, मित्र अमित्र सहु समभाल कै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २८॥

नौकर चाकर दास थी, दासीने वलि तसु अङ्गजातकै।
जो कोई जाण अजाणता, स्व पर वश कट आख्यातकै॥
खमतखामणा तेह थी॥ २९॥

क्रोध मान माया करी लोभ थकी दिया अछता आल कें ।
सहु संसारी जीव से, खमतखामणा अधिक रसालकें ॥
खमतखामणा तेह थी ॥ ३० ॥

निज स्त्री पुत्र पुत्रीने, हित शिक्षा देतां किण वार कें ।
करड़ा वचन कह्या हुवें, कारज घरना करावण सार कें ॥
खमतखामणा तेह थी ॥ ३१ ॥

नाम लेईने जुवा २, सर्व भणो इम खमत खमाय कें ।
मन वच कायाइं करी, दिलमे मच्छर भाव मिटाय कें ॥
खमतखामणा तेह थी ॥ ३२ ॥

धर्म जिनेश्वर भाषियो, पायो इण भव मे सुविशाल कें ।
विघ्न मिटें संकट कटें, तास प्रसादें मंगलमाल कें ॥
खमतखामणा इम करें ॥ ३३ ॥

तीजें द्वार आराधना, खमाविये कही छट्ठी ढाल कें ।
आराधक पद पाविये, जिन-वच छतामां नयण निहाल कें ॥
खमतखामणा इम करें ॥ ३४ ॥

॥ इति ॥

कलश

इम खमतखामण अतहि पावन, विमल भावन नित धरें ।
बहु अघ न्हसावें सुणे सुणावें, आत्म हित चित सुं करें ॥
श्री जिनेश्वर महाराज भव दधि, पाज काज सेया सरें ।
कहें श्रावक गुलाब सु भाव गुण युत, अतही आनन्द
निज घरें ॥ १ ॥

अथ चतुर्थ द्वार

दोहा

चौथे द्वारे छांड़वा, अष्टादश जे पाप।
पाप तज्यां शिव सुख लहै, तिणसूं थिर चित थाप ॥१॥

ढाल ७ वीं

(इण अवसर वनजी आवै तथा सेव मुनि नी कीजे।
सेवापी वञ्छित सीझैजी ॥ एदेशी ॥)

मत कर तू श्रावक पापं। जिन-धर्ममें थिर चित थापंजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ १ ॥

पहलो अघ प्राणातिपातं। दूजो अघ मृषा वातंजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ २ ॥

तीजो अघ अदत्तादानं। चौथो मिथुन सुजानंजी ॥
मत कर तूं श्रावक पाप ॥ ३ ॥

पञ्चम अघ जे धन धान। छट्ठो अघ क्रोध वखानंजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ ४ ॥

सातमूं अघ छै अभिमानं। अष्टम माया कपट तोफानंजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ ५ ॥

नवमूं लोभ निवारो। दशम राग परिहारोजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ ६ ॥

इग्यारमू द्वेष न धरिवो। बारमू कलह न करिवोजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥७॥
अभ्याख्यान न दीजे। पर परिवाद न कीजेजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥८॥
संजमथी अरति ल्यावै। असंजम रति मन भावेजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥९॥
ये पाप सोलमू ठाढ़ो। रति अरति दोहूं छोडोजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ १० ॥
कपट सहित झूठ बोलै। सतरमू मायामृषा ओलेजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ ११ ॥
अठारमू अघ अति भारी। मिथ्यादर्शनशल्य विचारीजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ १२ ॥
ये पाप अठारा जाणी। त्यांने परहरे उत्तम प्राणीजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ १३ ॥
छाडणरी मनसा राखै। ते शिव सुख जल्दी चाखेजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ १४ ॥
चौथे द्वार इम भावै। अन्त समे पाप वोसरावेजी ॥
मत कर तूं श्रावक पापं ॥ १५ ॥

कलश

चौथे द्वार आराधना कह्यो, पापने वोसरायवो।
किया पाप अति दुख परभवे, इम जीवने समझायवो ॥
धन संत तंत महंत नीका, पापनी रज टालता।
निज आतम सम पर प्राणी जाणि, पञ्च महाव्रत पालता ॥१॥

अथ पंचमूँ शरण द्वार

दोहा

पंचम द्वारे धारवा, मन मे शरणा च्यार।
अरिहन्त सिद्ध साहू वलि, जिनभाषित धर्म सार ॥१॥
शरणा थी सुख संपजे, दुःख दारिद्र पुलाय।
विघ्न मिटै संकट कटै, मन वाञ्छित मिल जाय ॥२॥

ढाल ८ वीं

(प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी ॥ एदेशी ॥)

प्रथम शरण अरिहन्त देवा ।
त्यारी सुर नर सहु सारै सेवा ॥
चरण कमलनी वलिहारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ १ ॥
जे कर्म रूप वैरी मार्या ।
लहि केवल भविजन ने तार्या ॥
ते च्यार तीरथना करतारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ २ ॥
फटिक सिंहासन पै वेसी ।
साधु - श्रावक - धर्मना उपदेशी ॥
अहिंसा अति सुखकारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ३ ॥

तरु अशोक भलो रहोंगे ।
अतिशय छत्र चमर होंगे ॥
भामण्डलनी छिव भारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ४ ॥

सुर - दुन्दुभि नूं झणकारं ।
पुष्प - वृष्टि सुगन्धित अनुकारं ॥
सुर ध्वनि भवीजन नै प्यारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ५ ॥

अनन्त ज्ञान दर्शन धारं ।
सुख वल अनन्त नहीं पारं ॥
द्वादश गुण ये हितकारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ६ ॥

दोप अष्टादश दूर किया ।
राग द्वेष अरि प्रति जीत लिया ॥
वीत - राग प्रभु गुणधारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ७ ॥

आठ महा प्रतिहारज छाजै ।
वाणी गुण पणतीस करी गाजै ॥
चौतीस अतिशय सुविचारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ८ ॥

त्रिगढ़ा विच प्रभुजी सोहै ।
चिहु मुख दिश में मन मोहै ॥
समवसरण रचना भारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ ९ ॥

जे अष्ट कर्म नूं नाश करी ।
एक समय माहि शिव-रमण वरी ॥
थया सिद्ध निरञ्जन अधिकारी ।
मुझ शरणो अरिहन्त तणो भारी ॥ १० ॥

अजोगी अभोगी अविनाशी ।
अनन्त आत्मिक सुख सुविलासी ॥
जिके आवागमन दियो टारी ।
मुझ शरणो सिद्ध तणो भारी ॥ ११ ॥

निविड कठिन जे कर्म दही ।
वलि ज्ञान क्रिया करि मुक्ति लही ॥
अठ गुण अतिशय एकतीस त्यारी ।
मुझ शरणो सिद्ध तणो भारी ॥ १२ ॥

तीन काल तणा सुर-सुख लहिये ।
तसु अनन्त वारगुणा फल दईये ॥
तेहथी अनन्त गुणो सुख है सारी ।
मुझ शरणो सिद्ध तणो भारी ॥ १३ ॥

तीजो शरणो मन भावो ।
साधु साध्वियानो मुझ थावो ॥
पञ्च सुमति महा - व्रतधारी ।
मुझ शरणो साधा तणो भारी ॥ १४ ॥

बयालीस दोष तज आहार लेवें ।
हित - शिक्षा भविजन ने देवे ॥
पाले संयम सतरह प्रकारो ।
मुझ शरणो साधा तणो भारी ॥ १५ ॥

मण्डलाना पाच दोष टाले ।
तिके राव रङ्क सह सम भाले ॥
विषय इन्द्रिया ना परिहारी ।
मुझ शरणो साधा तणो भारी ॥ १६ ॥

दुष्ट अस्व मन जीत लियो ।
वलि कन्दर्प मन थी दूर कियो ॥
आप तरै परनें तारी ।
मुझ शरणो साधा तणो भारी ॥ १७ ॥

निन्दा प्रशंसा मे सम भावें ।
राग द्वेष किणही पर नहिं ल्यावें ॥
भोग तजि थया ब्रह्मचारी ।
मुझ शरणो साधा तणो भारी ॥ १८ ॥

दु.ख नरक निगोद थकी डरता ।
तजि स्नेह नव कल्प विहार करता ॥
ते सुविनीत गुरु - आज्ञाकारी ।
मुझ शरणो साधां तणो भारी ॥ १६ ॥

केवल ज्ञानी जे धर्म कह्यो ।
तेही संवर निर्जरा मांहि रह्यो ॥
कर्म कटै नै रुकै सारी ।
मुझ शरणो धर्म तणो भारी ॥ २० ॥

जिन - आज्ञा मांहि धर्म अखै ।
जिके दुर्गति पड़ता ने धारि रखै ॥
व्रत धर्म अव्रत दुःखकारी ।
मुझ शरणो धर्म तणो भारी ॥ २१ ॥

दान सुपात्र सुखे प्रगटै ।
पाल्यां संयम तप थी पाप कटै ॥
भव-भ्रमण मिटै वरै शिव-नारी ।
मुझ शरणो धर्म तणो भारी ॥ २२ ॥

इम च्यार शरणा जे नित ध्यावै ।
रोग शोक जिणारै नहिं थावै ॥
ये ढाल आठमी - जयकारी ।
मुझ शरणो धर्म तणो भारी ॥ २३ ॥

कलश

जयकार सार उदार शरणा, विघ्न हरणा ये कह्या ।
सुखकार पर-उपकारि श्रावक, तणै मनमे वस रह्या ॥
अघ टार खार निवार भवि तूं, धार चिहुं विध शरणको ।
संसार गार असार पारावार, भवदधि तरणको ॥ १ ॥

॥ इति ॥

अथ छट्ठो दुकृत निन्दा द्वार

दोहा

दुकृतनीं निन्दा करै, छट्ठा द्वार विषेह ।
कुकर्म किया कराविया, ते सहु याद करेह ॥ १ ॥
वलि धिक्कार इण जीवने, राग द्वेष वश आण ।
लोभ वशे अनर्थ किया, निन्दा तेहनी जाण ॥ २ ॥

ढाल ९ वीं

(मीता आवैरे घर राग ॥ एदेशी ॥)

भव भव भमियो निज गुण गमियो, रमियो मिथ्या मांहि ।
सुगुरु न नमियो मन नहिं दमियो, मन वच निन्दूं ताहि ॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद ॥ १ ॥

खोटा देव खोटा गुरु सेव्या, वलि धार्‍यो कुधर्म।
वाह्य आडम्बर देखी तेहनुं, नमियो शर्माशर्म॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ २॥

अन्य मति कृत शास्त्र वाचिया, श्रद्धा विरुद्ध विचार।
अशुद्ध प्ररूपण करी कुसंगे, ते निन्दूं धर प्यार॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ३॥

हिंसा माहि धर्म जाणियो, न गिण्यो दोष लिगार।
भागल भ्रष्टरी संगत सेती, आरम्भ किया अपार॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ४॥

शुद्ध साधु ना गण थी वाहर, निकलिया जे तास।
धर्म जाण अशनादिक दीधो, वलि नमस्कार कियो जास॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ५॥

दान कुपात्रा ने धर्म जाणी, दियो हुवे जे कोय।
इच्छा असजम जीतवनों, थावो मिच्छामि दुक्कडं मोय॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ६॥

स्नेह राग अनुकम्पा करिके, जिन-धर्म जाण्यो होय।
अव्रत सेता अने सेवाता, श्रद्ध्यो धर्म सु सोय॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ७॥

वीतरागनूं निस्नेही मारग, ढाक्यो हुवै विणवार।
कुमारगने प्रगटज कीधो, ते निन्दूं धर प्यार॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ८॥

इङ्गालिक कर्म्मादिक पंदरा, सेव्या कर्म्मादान।
निज पर अर्थ कुकारज कीधा, लीधा अदत्ता-दान॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ९॥

आलस करी-उघाड़ा राख्या, घृत आदि रसना ठाम।
घाणी प्रमुख में जन्तु पिलाव्या, किया निन्दनीक जे काम॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १०॥

खान खुदाई भूमि फड़ाई, ढोल्या अणगल नीर।
यन्त्र घटी ऊंखल मूसलादिक करता, नहिं जाणी पर पीर॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ ११॥

महा आरम्भ करि जीव विराध्या, वोल्या मृषावाद।
पर-द्राह दीधी चोरी कीधी, सेव्या मैथुन उन्माद॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १२॥

परिग्रहा माहि लिप्त रह्यो चित, कीधो क्रोध विशेप।
मान माया ने लोभ थकी मैं, किया राग ने द्वेष॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १३॥

दुष्ट परिणामा त्रसजीवाने, पाणी माहि डवोय।
हासि कोतूहल करि मन हर्ष्यो, राख्या थापण मोसा सोय॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १४॥

कसाई प्रमुखरा भव में मार्‌या, त्रस प्राणी दिन रात।
भाड़े चलाव्या सकट ऊंटादिक, लालच थी करी घात॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १५॥

न्यायालय मे हाकम हो के, किया अधिक अन्याय।
पक्षपात धर करि पंचायत, कूड़ी साख भराय॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १६॥

हाव पकाव्या कुम्भारने भवे, तैली भव में तेल।
माली भव मे वृक्ष विणाश्या, रांगण भव रेलापेल॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १७॥

हिंसक जीव सिंह मृगादिक, खेली तास शिकार।
मद्य मासनां भक्षण कीधा, पिया गांजा सुल्फा धार॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १८॥

विन जोया विन पूंज्यां ईंधन, बाल्या चूल्हा मांहि।
लट्ट गिंडोला घुण इल्यादिक, विराधिया हुवे ताहि॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ १९॥

पर-द्राह दीधो कलह लगाव्या, घात करी विश्वास।
गर्भ गलाव्या मन्त्र पढ़ाव्या, वशीकरणादिक जास॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ २०॥

गुणवंताना गुण नहीं गमिया, दिया अछता आल।
संत सत्यांरी निन्दा कीधी, मच्छर भावे भाल॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ २१॥

पंच आस्रव सेव्या सेवाया, तिमहिज पाप अठार।
इणभव परभव दुकृत कीधा, थावो त्रिविध २ धिक्कार॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद॥ २२॥

इणपरै दुकृत कारज तेहनी, निन्दा छट्ठे द्वार।
हलु - कर्मी निन्दै दुष्टातम, पावै सुख अपार ॥
दुकृत निन्दूं धरि अह्लाद ॥ २३ ॥

कलश

अपार शिव-सुख शाश्वता, गुरु आसता थो पामिये।
कुदेव कुगुरु कुधर्म ये तिहुं, मन हू थो सहु वामिये।
जे किया सावद्य कार्य्य तेहनी, निन्दना करिये वली।
शुभ कार्य्य भल भावे आचरिये, जेम थावै रङ्गरली ॥ १ ॥

॥ इति षष्टम द्वार ॥

अथ सप्तम सुकृत अनुमोदना द्वार

दोहा

तप उपवासादिक किया, व्रत संवर सुखकार।
सुकृतनी अनुमोदना, सप्तम द्वार मझार ॥ १ ॥
जिनमार्ग शुद्ध निर्मलो, समकित चर्ण उदार।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ते अनुमोदूं सार ॥ २ ॥

॥ ढाल १० वीं ॥

(नीदडली हो नाह निवारिये ॥ एदेशी ॥)

श्री तीरथपति इम उपदिश्यो, मत हणज्यो हो छः काय ना जीवकै।
अनेरा पास म हणावज्यो, अनुमोद्यां हो लागै पाप अतीवकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १ ॥

भोजन विविध प्रकारना, आरम्भ किया हो निपजै छै तायकै।
छहु कायारी हिंसा हुवै, भोगवियां हो किंचित धर्म न थायकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ २ ॥

जो खाणा पीणामें धर्म हुवै, तो श्रावक तिणने हो त्याग्या पाप पंडूरकै।
वलि दूजां ने त्याग कराविया, अनुमोद्यां हो लागै अघ भरपूरकै॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ३ ॥

सर्व व्रती साधु भला, ते टाली हो वाकी संसारी जीवकै।
त्यारो खाणो पीणो वलि पहरणो, सव अव्रतमें हो जाणो दुर्गति नींवकै॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ४ ॥

सावद्य खोटा जाणिने, मुनि त्याग्या हो काम भोगादि सोयकै।
ते सावद्य गृहस्थे किया, तिण माहि हो धर्म पुण्य किम होयकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ५ ॥

इमहिज मृपा वोलिया, वोलाव्यां हो अनुमोद्यां एककै।
अदत्त मैथुन सेविया, सेवाया हो थावै व्रतमें छेककै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ६ ॥

वलि पंचमू आस्रव परिग्रह, ते राख्यां हो पाप लागै छं सोयकै।
ते दूजा ने देया देवाविया, भलो जाण्या हो मत जाणो धर्म कोयकं॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ७ ॥

ये पांचू त्याग्यामे धर्म छै, तो सेवतां हो अशुभ कर्म बंधायकै।
अनेरा ने सेवायां अनुमोदियां, तीनू करणे हो एक सरीषा
थायकै ॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ८ ॥
दशमां अङ्गमें जिन कह्यो, आस्रव छाड्या हो श्रीजिनजीरो
धर्मकै।
व्रत अव्रत जे ओलख्यो, तेही जाणै हो इण वात रो मर्मकै ॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ६ ॥
कहै साता दियां साता हुवै, ते नहिं जाणी हो श्रीजिनधर्म
नी वातकै।
जे धर्म अधर्म न ओलख्यो, त्यारै घटमे हो बसियो घोर
मिथ्यातकै ॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १० ॥
श्री सूयगडांग सूत्रमें, तिणने मूरख हो भाष्यो श्री जिनराजकै।
आर्य मार्ग सू अलगो कह्यो, इम इत्यादिक हो पट वोल
पिछाणकै ॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ ११ ॥
अशुद्ध प्ररूपण छांडनें, शुद्ध प्ररूप्यो हो जिनआज्ञामे धर्मकै।
तरणो बंछ्यो स्व पर तणो, ते अनुमोद्या हो पावै शिव सुख
पर्मकै ॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १२ ॥
ये ज्ञान दर्शन चारित तप भला, भवदधिमे हो तिरवानें
जहाजकै।
ते सम्यक् प्रकारे सेविया, सेवाया हो अनुमोदूं ते आजकै ॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १३ ॥

अरिहन्त सिद्धन आयरिया, उवज्झाया हो वलि मोटा अणगारकै।
तेहनी स्तुति सेवा करी, अनुमोदूं हो विनय करि नमस्कारकै।
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १४ ॥
सामायिक पोसा किया, छहू आवश्यक हो किया कालो कालकै।
उद्यम कियो जिनधर्ममें, अनुमोदूं हो पाल्या व्रत रसालकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १५ ॥
निर्दोष दान सुपात्रनें दियो, देवायो हो भलो जाण्यो जेहकै।
तेहनीं करूं अनुमोदना, अलगी थावै हो कर्म रज खेहकै।
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १६ ॥
दया अनुकम्पा जे करी, कराई हो भली जाणी तासकै।
संयम जीतव बंछियो, मन बच काया हो अनुमोदूं जासकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १७ ॥
शुद्ध साधु निर्ग्रन्थसें, मैं सुणियो हो वारूं सरस वखानकै।
सूत्र तणा बच सांभल्या, अर्थ धास्या हो ते अनुमोदूं बानकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १८ ॥
दान शील तप भावना, मैं सेव्या हो सेवाया धरि चित्तकै।
समकित दृढ़ करि आस्था, अनुमोदूं हो ते परम पवित्तकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ १९ ॥

जिन-शासन अधिक दृढ़ावियो, वलि गाया हो गणिना गुणग्रामकै।
अत्यन्त हर्ष धरि उच्चस्था, अन्तस मनसू हो अनुमोदूं तामकै॥
करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ २० ॥
इत्यादिक सुकृत तणी, अनुमोदन हो एह सप्तम द्वारकै।
श्रावक तन मनसे करै, आनन्द थावै हो दशमी ढाल विचारकै॥ करो जिनधर्मनी अनुमोदना ॥ २१ ॥

॥ इति ॥

कलश

आनन्द थावैं दुःख जावैं, सुख पावैं धर्म सू।
जेभविक भावैं सुबुद्धि आवैं, दर्प मिटावैं नर्म सू॥
इम जाण व्रत पचक्खाण कीजैं, दान दीजैं पात्र ने।
अव्रत तजीजे व्रत पालीजे, आराधीजे यात्र ने॥ १॥

॥ इति सप्तम् द्वार ॥

अथ अष्टम भावना द्वार

दोहा

अष्टम द्वारे भावना, भावै श्रावक सार।
अशुभ कर्म दूरा टलै, पावै सुख अपार॥ १॥
तन धन जोवन कारमो, बादल जेम विलाय।
देखो दिनकर तेहनी, तीन अवस्था थाय॥ २॥

डाभ अणी जल विन्दुओ , जीतव जाणो तेम ।
तिणसू उत्तम नर नारियां , राखो धर्म से प्रेम ॥ ३ ॥

ढाल ११ वीं

(श्रेयास जिनेश्वरु प्रणमू नित वेकर जोडीरे ॥ एदेशी ॥)

तज विभाव निज भाव मे, रमिये नर चतुर सुजाण रे ।
निज आतम में गुण घणा, मत पर-गुण मे सुख जाण रे ॥
मत पर-गुण में सुख जाण, श्रावक गुण-ग्राहका ।
भावो भावना एम उदार रे ॥ १ ॥
अनन्त ज्ञान दरशन भला, वलि चारित वीर्य अपार रे ।
एह निज-गुण है थांहरा, जरा अन्तर ज्ञान विचार रे ॥
॥ जरा० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २ ॥
निज-गुण विन सहु कारमा, विणशंतां न लागें वार रे ।
अथिर जोवन धन जाणिये, जिम विजली नो चिमत्कार रे ॥
॥ जिम० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ३ ॥
ए तनु जे तूं पामियो, ते खिण मे भंगुर थाय रे ।
तू अविनाशी आतमा, इण संग क्यों रह्यो लोभाय रे ॥
॥ इण० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ४ ॥
अशुभ कर्म थी आतमा, मैली होय रही अति जासरे ।
शुभ परिणाम लु ल्याइने, प्रगट करिये गुण खास रे ॥
॥ प्रगट० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ५ ॥

मनुष्य जनम दुरलभ लह्यो, आर्य क्षेत्र पुन्य प्रमाण रे ।
उत्तम कुल आय ऊपनू, पायो आयु शुभ दीर्घ जाण रे ॥
॥ पायो० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ६ ॥
वल पराक्रम इन्द्रिया तणो, मिलियो सतगुरु नो संयोगरे ।
तो पिण धर्म करै नहीं, एहवो मूर्ख मूढ अयोग रे ॥
॥ एहवो० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ७ ॥
पुत्र कलत्र परवार से, धन धान परिग्रह माहि रे ।
मूर्छित मोह नी छाक मे, म्हारो २ कर रह्यो ताहि रे ॥
॥ म्हारो २ ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ८ ॥
ए सहु स्वार्थना सगा; मतलब विन न करै सार रे ।
वेदन वंटावै नहीं, पुत्रादिक जे परिवार रे ॥
॥ पुत्रा० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ९ ॥
पूर्व जेहवा वाधिया, तेहवा उदय हुवै पुन्य पाप रे ।
सुख दुःख उपजै जीवरै, ते भोगवै आपो आप रे ॥
॥ ते भोगवै० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदाररे ॥ १० ॥
वेदन उपजै शरीर मे, तिण अवसर एम विचार रे ।
वार अनन्ती भोगव्या, दुःख नरक निगोद मझार रे ॥
॥ दु ख० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ११ ॥
तेतीस सागर लगि सह्या, दुःख सातमी नरक अनन्त रे ।
तो ए मनुष्य ना भव तणा, राई सम किञ्चित हून्त रे ॥
॥ राई० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १२ ॥

जे मैं समकित विन क्रिया, पाली कष्ट सह्यो बहु वार रे ।
आतम कार्य सस्यो नहीं, समकित विन नहीं भव पार रे ॥
॥समकित०॥श्रा०॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १३ ॥

हिवै समकित-व्रत पाविया, आयो रतन चिन्तामणि हाथरे ।
तो यह वेदन समपणै, सह्यां लाभ अत्यन्त विख्यात रे ॥
॥ सह्यां० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १४ ॥

कष्ट खम्या सम भाव से, टूटै अशुभ कर्म अघ जाल रे ।
उष्ण तवै जल बिन्दु ज्यों, भस्म हुवै कह्यो परम कृपाल रे ॥
॥ भस्म० ॥ श्रा०॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १५ ॥

सूको तृण पूलो अग्नि में, शीघ्रपणें दहै तिम कर्म रे ।
पाचवां अङ्ग विषै कह्यो, इम जाणि कीजै जिनधर्म रे ॥
॥ इम० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १६ ॥

अल्पकाल दु:ख सहन थी, शिव पाम्या गजसुकुमाल रे ।
चरम जिनेन्द्र चौवीसमां, कष्ट खमिया अति सविशाल रे ॥
॥ कष्ट० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १७ ॥

बहु वर्षे तीव्र वेदना, सही चक्री सनतकुमार रे ।
मुक्ति गया कर्म क्षय करी, पाया आतमीक सुख सार रे ॥
॥ पाया० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १८ ॥

मुनि जिनकल्पी उदेरिने, लेवै कष्ट जे विविध प्रकार रे ।
तो थारै ए वेदना, सहजे उदय थई इण वार रे ॥
॥ सहजे० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ १९ ॥

सम भावै एहसहिया, कर्म राशि तणू चकचूर रे।
किञ्चित काल मे दुःख सह्यां, पावै सुगति सुख भरपूर रे॥
॥ पावै० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २० ॥
अति रोग पीड़ाणा जगत में, दुःख भोगै अज्ञानी जीव रे।
तो तू ज्ञानी किम करै, वेदन उपज्यां रुदन अतीव रे॥
॥ वेदन० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २१ ॥
नव महीना गर्भावास मे, परवश पायो अति दुःख रे।
तो स्ववश ये वेदना, खमियां पर भव मे घणो सुख रे॥
॥खमियां०॥श्रा०॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २२ ॥
पुदगल सुख ये पामला, मिलिया वार अनन्त अथाय रे।
गृद्धपणैं तिण मे रह्या, पड़ै शिव-सुखनी अन्तराय रे॥
॥ पड़ै० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २३ ॥
आर्त रौद्र निवार ने ध्यावो धर्म ध्यान दिल मांहि रे।
अनित्य अशरण जे भावना, भायां भव २ मे दुःख नाहि रे॥
॥ भायां० ॥ श्रा०॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २४ ॥
पर भव से आयो एकलो, वलि जासे एका एकरे।
काचै भरोसै काई रहो, जरा समझो आणि विवेक रे॥
॥ जरा० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २५ ॥
इम जाणी शुद्ध निरमलो, पालो संयम सतरे प्रकार रे।
च्यार कपाय निवार ने, उतरो भव सायर पार रे॥
॥ उतरो० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २६ ॥

जो साधूपणो नहिं ग्रहि सको, तो श्रावक ना व्रत बार रे ।
निर अतिचारे पालियां, थावै नैड़ा शिव-सुख सार रे ॥
॥ थावै० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २७ ॥
त्याग बैराग बधाविये, करिये उत्तम साधु नी सेव रे ।
निन्दा विकथा परहरि, छांडो क्षुद्र भाव अहमेव रे ॥
॥ छाडो० ॥ श्रा०॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २८ ॥
मत करो धन नूं गारवो, पायो बार अनंत अपार रे ।
सुख दुःख बहुला पाविया, राखो चितमें समता सार रे ॥
॥ राखो० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ २९ ॥
धर्म अपूर्व पावियो, मिली सतगुरु नी जोगवाय रे ।
तो ढील करो कांई कारणें, रात दिवस ये योंही जायरे ॥
॥ रात० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ३० ॥
रोग जरा जिहां लगि नहीं, पाणी पहिलां थी बाधो पाज रे ॥
मित्र स्नेही जो आपणा, देवो त्यांने धर्म नूं साझ रे ॥
॥ देवो० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ३१ ॥
धर्म करन्तां जीवने, मत पाड़ो तिणरै अन्तराय रे ।
तेहनां फल कडुवा घणा, पावै भव २ दुःख अथाय रे ॥
॥ पावै० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ३२ ॥
इम जाणी गुणवन्त ना, गावो गुण छै जे तेह माय रे ।
अष्टम् द्वारे ग्यारमीं, धर्म करसी ते नहीं पिछताय रे ॥
॥ धर्म० ॥ श्रा० ॥ भावो भावना एम उदार रे ॥ ३३ ॥
॥ इति ॥

॥ कलश ॥

अनित्य १ अशरण २ एकान्त ३ भावन,
संसार ४ अनन्त ५ अशुचि ६ भावना।
आस्रव ७ संवर ८ निरजरा ९ फुन,
लोकालोकनी ध्यावना १० ॥
धर्म ११ ने वलि बोधबीज १२,
ये बारह भावना भाविये।
परिणाम शुद्ध थिर भाव राखी,
संचित पाप पुलाविये ॥ १ ॥

॥ इति अष्टम् द्वार ॥

अथ नवमों अणशण द्वार

दोहा

सामायिक पोसा करें, प्रतिक्रमणा शुभ ध्यान।
समता रसमें झूलता, धन २ ते गुणवान ॥ १ ॥
कुविसन तज भगवन्त भज, राग द्वेष त्रिहुं टार।
स्व आतममे गुण घणा, करिये उज्जल सार ॥ २ ॥
संचिन पाप मिटायवा, छेहडै अवसर सार।
नवमें द्वार कह्यो भलो, अणशण नू अधिकार ॥ ३ ॥

ढाल बारमीं

(सीता भविपण ने कहे निशक मू ॥ एदेशी ॥)

अनन्त मेरु सम पुद्गल भोग्या, मीठा अमिय समानो रे।
इक २ लोक आकाश प्रदेशे, वार अनन्त पिछानो रे॥
धन २ गुणवन्त अणशण धारें॥ १॥

अनन्त पुद्गल लेई पाछा वमिया, भव २ माहि विचारो रे।
तोही चेतन तुझ भूख न भागी, तृष्णा अधिक अपारो रे॥
धन २ गुणवन्त अणशण धारें॥ २॥

सरस भोजन मन गमता पाया, वलि मन गमतो पाणो रे।
प्रभात समे उठ्यो तव भूखो, अणशण करें इम जाणी रे॥
धन २ गुणवन्त अणशण धारें॥ ३॥

द्विविध अणशण श्रीजिनवर भाख्यो, पादोपगमन जाणी रे।
भात पाणीना त्याग ते दूजो, जावज्जीव प्रमाणो रे॥
धन २ गुणवंत अणशण धारें॥ ४॥

पूर्व सनमुख वेकर जोड़ी, नमोत्थुणं सिद्धा ने करिये रे।
दूजो अरिहंत भगवन्त प्रभुने, तीजो धर्म आचारजने उचरियेरे॥
धन २ गुणवंत अणशण धारें॥ ५॥

अशाण खादम स्वादम प्रति तजने, अवसर जाणि पाणी परिहारो रे।
तृषा परिषह आय ऊपना, अडिग रहै सुविचारो रे॥
धन २ गुणवंत अणशण धारें॥ ६॥

मात तात सुत बंधव त्रिया, इत्यादिक परवारो रे ।
हाट हवेली बाग बगीचा, देहथी स्नेह निवारो रे ॥
धन २ गुणवंत अणशण धारै ॥ ७ ॥

रतन करण्डिया सम ये काया, तेहने पिण वोसरावै रे ।
सावद्य कारज नहिं करै तिणसे, धर्म ध्यान चित्त ध्यावै रे ॥
धन २ गुगवंत अणशण धारै ॥ ८ ॥

आनन्द श्रावक कियो संथारो, अवधि ज्ञान उपज्यो आईरे ।
सुधर्म कल्पै जाय ऊपनूं, एकावतारी थाई रे ॥
धन २ गुणवंत अणशण धारै ॥ ६ ॥

सम परिणामां कष्ट सह्यां थी, कर्म निरजरा थावै रे ।
संसार भ्रमणनू छेद करै फुन, पुन्यरा ठाट बंधावै रे ॥
धन २ गुणवंत अणशण धारै ॥ १० ॥

इण पर लोकनी वंछा न करतो, जीतव मरण न चाहवै रे ।
काम भोगनी आशा तजने, गुणवन्त ना गुण गावै रे ॥
धन २ गुणवंत अणशण धारै ॥ ११ ॥

शिव सुख सामी दृष्टि राखै, रमण करै निज गुण मे रे ।
आतम सुख अभिलाषी श्रावक, सार न जाणैं सुख पुन्यमे रे ॥
धन २ गुणवंत अणशण धारै ॥ १२ ॥

नवमें द्वारे ढाल बारमीं, कह्यो अणशण अधिकारो रे ।
छेहलै अवसर करै गुणवंत श्रावक, पामै सुख अपारो रे ॥
धन २ गुणवंत अणशण धारै ॥ १३ ॥

॥ इति ॥

कलश

अपार सुख शिवना कह्या, तिहां जन्म जरा मृत्यु नहीं।
नहिं रोग सोगरु भोग वंछा, वलि दुगंछा नहिं रही॥
जिहां रमन है उपयोग केवल, ज्ञान दरशन मे सही।
सहु द्रव्य भावना जाणछे, प्रभु सिद्ध लोकाग्रे रही॥ १॥

अथ दशमूं द्वार

दोहा

दशमें द्वार करै सही, पांच पदानुं जाप।
विघ्न मिटै स्मरण कियां, क्षय थावै सहु पाप॥ १॥
अरिहंत सिद्धने आयरिया, उवझाया अणगार।
भजन करै इण पाचनू, तेहथी जय जयकार॥ २॥

ढाल १३ वीं

(पना मारू निरखण दे गनगोर।
तथा आतम सुभाव ओलख करणीमूं पामे भव जल तीर॥एदेशी॥)

शुभ परिणाम वलि शुभ लेश्या, प्रशस्त भला अध्यवसाय।
अहो निशि धर्म ध्यान दिल धरतां, कर्म पटल खय थाय॥
॥ कर्म० ॥ सुगण जन॥
जी थांरो आतम गुण प्रगटाय ॥ सुगण जन॥
जपिये श्री नवकार॥ १॥

जेहने सखाय पणे करि पामे, परभव सम्पति सार ।
अण भोगिक सुर पदवी पामे, इन्द्रादिक अवतार ।
इ० ॥ सु० ॥ इ० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ २ ॥

पञ्च परमेष्टि समकित युत जपिया, भव दधि गौपद जेम ।
शीघ्र पणै तरिये शिव वरिये, फुन अञ्जलि जल तेम ॥
फुन० ॥ सु० ॥ फुन० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ३ ॥

वछड़ा चरावतो वालक आयो, नदी पूर देख तिवार ।
मन्त्र नवकार जपी माहि पैठो, सरिता थई दोय द्वार ॥
स० ॥ सु० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ४ ॥

रतनवती जे भीलनी नारी, तिण सुमस्यो नवकार ।
किञ्चित कालमे पुन्य उपावी, पाचवे कल्प अवतार ॥
पाचवें० ॥ सु० ॥ पांचवे० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ५ ॥

सर्प तणो थई पुष्पनी माला, श्री नवकार प्रभाव ।
श्रीमती सती कीर्ति लहि भारी, उभय भवे सुख सार ॥
उभय० ॥ सु० ॥ उभय० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ६ ॥

जहाज डूबंता सेठ समुद्रे, गुणियो श्री नवकार।
सहाय कियो सुर जहाज उठावी, मेल्ही पेली पार॥
मेल्ही० ॥ सु० ॥ मेल्ही० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ७ ॥

श्री नवकारनुं स्मरण करता, दूर टलै जंजाल।
वैरी दुश्मन डायण मायण, न्हास जावे तत्काल॥
न्हास० ॥ सु० ॥ न्हास० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ८ ॥

समदृष्टि श्रावक गुणवन्ता, जे सुमिरे नवकार।
जेहना फलनु कहिवू किस्यू ते, पामे भवजल पार॥
पामे० ॥ सु० ॥ पामे० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ९ ॥

इम जाणी स्मरण नित करिये, धरिये आतम ध्यान।
निरवद्य करणी फुन आचरिये, सुनिये श्री जिन वान॥
सुनिये० ॥ सु० ॥ सुनिये० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १० ॥

निज पर भाव विलोक यथार्थ, शुद्ध द्रव्य षटकाय!
आरम्भ छोड़ तोड अघ घाती, शिव गति नैड़ी थाय॥
शिव० ॥ सु० ॥ शिव० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ ११ ॥

मच्छर भाव तजि नित तू तो, गुणवन्तानां गुण गाय।
ज्ञाता सूत्र विषै जिन भाख्यो, गौत तीर्थङ्कर बंधाय ॥
गौत० ॥ सु० ॥ गौत० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १२ ॥

श्री जिन शासन पञ्चमे अर्के, भिक्षु गणी सुखदाय।
विविध मर्याद बांधी गण वत्सल, मिथ्या तिमिर हटाय ॥
मि० ॥ सु० ॥ मि० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १३ ॥

द्वितीये पाट भारीमाल गणाधिप, तृतीय पाट ऋषिराय।
तूर्ये जयाचार्य महा प्रभाविक, लाखां ग्रन्थ बणाय ॥
लाखां० ॥ सु० ॥ लाखां० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १४ ॥

मघवा सम मघराज पञ्चमे, तसु पट माणिक कहाय।
सप्तम पंट श्री डालचन्दजी गणीं, दीर्घ दृष्टि सुखदाय ॥
दीर्घ० ॥ सु० ॥ दीर्घ० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १५ ॥

तेहनें पाटैं वर्त्तमानमें, शोभत जिम जिनराय।
श्री श्री कालूराम गणीश्वर, प्रणम्या पातिक जाय ॥
प्रणम्यां० ॥ सु० ॥ प्रणम्यां० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १६ ॥

यह जिन शासन सुखनुं वासन, ये गणने गणिराय।
अहो निशि सेवा करले भविजन मत कर अवरनीं चाह ॥
मत० ॥ सु० ॥ मत० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १७ ॥

इण शासनमे रक्त रहे, त्यारो करत सदा सुर सहाय।
ऋद्धि वृद्धि थावें दुःख मिट जाव, विघ्न न होवें काय ॥
विघ्न० ॥ सु० ॥ विघ्न० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १८ ॥

च्यार तीर्थ सुख धाम स्वाम मुझ, श्री कालूगणि राय।
तेहनुं श्रावक गुलाव कहै, थयो आनन्द हर्ष सवाय ॥
आनन्द० ॥ सु० ॥ आनन्द० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार ॥ १६ ॥

तसु आदेशी संयम भेषी, आतमा अर्थी जान।
पूनमचन्द मुनि शान्ति मुद्रा, पूनम चन्द समान ॥
पूनम० ॥ सु० ॥ पूनम० ॥ जी थारो आतम० ॥ सु ॥
जपिये श्री नवकार ॥ २० ॥

चम्पक तरु सम चम्पालाल ऋषि, ज्ञान दौलतवंत जान।
दौलतराम मुनि ये तीनू, वांचें सरस वखाण ॥
वाचैं० ॥ सु० ॥ वाचैं० ॥ जी थांरो आतम० ॥ सु ॥
जपिये श्री नवकार ॥ २१ ॥

उगणीसय वहोत्तर सम्वत्‌मे, ज्येष्ठ मास कहिवाय।
तेरा ढाल दशविध आराधना, कहि जयपुर सुखदाय॥
कहि० ॥ सु० ॥ कहि० ॥ जी थारो आतम ०॥ सु० ॥
जपिये श्री नवकार॥ २२॥

॥ इति ॥

कलश

सुखदाय आराधन कर इम, भविक मन उच्छाह ही।
ते पाप पङ्क निशङ्क टाळै, व्रत संभाळै उमाह ही॥
श्री कालू गणी महाराज मुनि, सिरताज तासु पसाय ही।
कहै गुलाब निज गुन आव प्रगटै, भण्यां आनन्द थाय ही॥

॥ इति दशविध आराधन॥

पद्मावती आराधना

दोहा

मोटी सती पद्मावती, लीनो संजम भार।
अथिर संसार ने जाण के, छोड्या विषय विकार ॥ १ ॥
विरह पड्यो राजा तणो, सती गई वन माय।
पाप-चितारै पाछला, ते सुणज्यो चित लाय ॥ २ ॥

ढाल

(राग-वेराडी)

हिवं राणी पद्मावती, जीव राशि खमावे।
जाणपणो जग दोहिलो, इण वेलां आवे ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
अरिहन्तनी साखे, जे मैं जीव विराधिया, चौरासी लाख।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ २ ॥
सात लाख पृथ्वी कायना, साते अपकाय।
सात लाख तेउ कायना, साते वलि वाय ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

दश लाख प्रत्येक वनस्पति, चउदे साधारण धार।
बी ती चउरिन्द्रिय जीवना, बे बे लाख विचार॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं॥ ४॥

देवता तिर्यञ्च नारकी, चार चार प्रकाशी।
चउदे लाख मनुष्य ना, ए लाख चौरासी॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं॥ ५॥

हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद।
दोष अदत्ता दान ना, मैथुन ने उन्माद॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं॥ ६॥

परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष।
मान माया लोभ मैं किया, वलि राग ने द्वेष॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ७॥

कलह करी जीव दुहव्या, दीधा कूड़ा कलङ्क।
निन्दा कीधी पार की, रति अरति निशङ्क॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं॥ ८॥

चाड़ी कीधी चौंतरे, कीधो थापण मोसो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, भलो आण्यो भरोसो॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ९॥

इणभवे परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार।
त्रिविध त्रिविध परिहरूं, दुर्गति ना दातार॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १०॥

खटीक ने भवे में किया, जीव नाना विध घात।
चिड़ीमार भवे चिड़कला, मारया दिन ने रात॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ११॥

मच्छीमार भवे माछला, झाल्या जल वांस।
धींवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पाश॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १२॥

काजी मुल्ला ने भवे, पढ़ी मन्त्र कठोर।
जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १३॥

कोटवाल ने भवे जे किया, आकरा कर दण्ड।
बन्दीवान मराविया, कोरड़ा छड़ी दण्ड॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १४॥

परमाधामी ने भवे, दीधा नारको दुःख।
छेदन भेदन वेदना, पाड़न्तां कूक॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १५॥

कुम्भार ने भवे में किया, नीमाह पचाव्या।
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिण्ड भराव्या॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १६॥

हाली भवे हल खेड़िया, फाड़्या पृथ्वी ना पेट।
सूड निनाण घणा किया, दीधी बलदां चपेट॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ १७॥

माली ने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष ।
मूल पत्र फल फूल ना, लागा पापज लक्ष ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ १८ ॥

अद्बोवाइयाने भवे, भरया अधिका भार ।
पोठी पीठे कीड़ा पडया, दया नहीं आणी लिगार ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ १६ ॥

छींपाने भवे छेतरया, कीधा राङ्गण पास ।
अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ २० ॥

सूरपणे रण भूझतां, मारया माणस वृन्द ।
मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूल ने कन्द ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ २१ ॥

खाण खणावी धातु नी, पाणी घणा उलंच्या ।
आरम्भ किया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ २२ ॥

कर्म अङ्गार किया वलि, घरने दव दीधा ।
सोगन खाधा वीतराग ना, कूड़ा कोलज कीधा ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ २३ ॥

बिल्ली भवे ऊन्दर गल्या, गिलोई हत्यारी ।
मूढ़ गँवार तणै भवे, मैं जुवां लीखां मारी ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ २४ ॥

भडभुञ्जा तणे भवे, एकेन्द्री जीव।
जवार चणा गेहुं सेकिया, पाडंतां रींव॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ २५॥

खांडण पीसण गारना, किया आरम्भ अनेक।
राधण इंधण अग्निना, कीधा पाप उद्वेग॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ २६॥

विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पांच प्रमाद।
इष्ट वियोग पड़ाविया, रूदन ने विपवाद॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ २७॥

साधु अने श्रावक तणा, व्रत लही ने भाग्या।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूपण लाग्या॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ २८॥

सांप विच्छू सिंह चीतरा, सिकरा ने सामली (चोल)।
हिंसक - जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ २९॥

सूआवड़ दूपण घणा, वलि गरभ गलाव्या।
जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंगाव्या॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ३०॥

रांगण पास में किया, जीव नहीं जाणी।
हिंसा कीधी जीवनी, दया न उर आणी॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ३१॥

धोवीने भवे धोविया, काढ्या कपड़ा ना कीट।
अणगल नीर ढोल्या घणा, आई आंख्यां मोट ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ ॥ ३२ ॥

कन्दोई ना भवे मैं किया, भट्टो बाली न जोय।
जीव आरम्भ किया घणा, लाग्या पातक मोय ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ३३ ॥

वणिज किया वणिया भवे, धडियां दीवी उड़ाय।
छैतरी (पतरे) वस्तु भारी घणी, पाप पूग्या आय ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ३४ ॥

उनाले हल हांकिया, वर्षाले गाडा।
नीलण फूलण चाम्पी घणी, भूखां मार्‍या छै पाडा ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ३५ ॥

गूजर ना भवे मैं किया, वांध्या पाप रा भारा।
पाडी ने वेलो छोड़ियो, पाडा ने पकर्‍या ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ३६ ॥

खाती ना भवे मैं किया, घणा रूंख वाढ्या।
थोड़ा ने वलि घणा,मुझ दूषण लाग्या ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ३७ ॥

हाथी ना भवे मैं किया, किया रुंखांरा खोगाल।
पंखियां रा माला-पाड़िया, भांजी तरुवर डाल ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ३८ ॥

लोहार ना भवे मैं किया, घणा धवण धमाया ।
कसी कुद्दाला पावड़ा, खड्ग कटारी कराया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुकडं ॥ ३९ ॥

ब्राह्मण ना भवे मैं किया, अणगल नीर स्नान ।
ज्योतिष निमित्त भाखिया, लिया वर्जित दान ॥
ते मुझ मिच्छामि दुकड़ं ॥ ४० ॥

सती ने कुसती कही, कायर ने शूरा ।
वेश्या ना दोय डीकरा, कह्या दोनू पख पूरा ॥
ते मुझ मिच्छामि दुकड़ं ॥ ४१ ॥

बजाज ना भवे मैं किया, जूना नया कर वेच्या ।
कूड़ कपट केलव्या घणा, पोते पापज संच्या ॥
ते मुझ मिच्छामिं दुकड़ं ॥ ४२ ॥

सराफीना भवे मैं किया, भेली करवा आथ ।
गालणी घणी करावता, धन चाल्यो ना साथ ॥
ते मुझ मिच्छामि दुकड़ं ॥ ४३ ॥

अणछाण्यां आंधण दिया, अण पूजे चूले ।
अण जोया धानज ऊरिया, मुझ पाप न भूले ॥
ते मुझ मिच्छामि दुकड़ं ॥ ४४ ॥

मेला तमाशा देखतां, विषय नजर भर जोय ।
कितोल हांसीने मशकरी, करता नर कोय ॥
ते मुझ मिच्छामि दुकड़ं ॥ ४५ ॥

जोर करी हींडै हींडता, तोड़ी तरुवर डाल ।
काचा फल फूल चूंटिया, फोड़ी सरवर पाल ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ४६ ॥

भोया भरड़ाने भवे, अणहुंता नचाया ।
वकरी भैंसा वापड़ा, दोपे मिस मराया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ४७ ॥

न्हावण धोवण मैं किया, वागा वेश वनाया ।
आरीसे मुख जोइया, वहु दोप लगाया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ४८ ॥

सूल्या धान दलाविया, घणा घुण मसलाया ।
ईली दुःखी अति घणो, पोते पाप कमाया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ४९ ॥

फड़िया ना भवे मैं किया, सूल्या धानज विणज्या ।
लोभ तणे वश परिग्रह, कारज कोई न सिज्या ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५० ॥

पढ़वारीरा काम में, घणा कर्मज वांध्या ।
घीचारी (भरमाड़) ने भोलाविया, क्षण साचा सांध्या ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५१ ॥

वेपार कीनो पसारी तणो, घणी औषधियां राखी ।
जीवांरा नाश किया घणा, कीकर रेसी नांखी ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५२ ॥

गुड खाण्ड तेल घृत ना, विणज चौमासे कीना ।
जीवहत्या लागी घणी, कर्म खोटा कीना ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५३ ॥

रङ्गरेजाना भवे मैं किया, कसुम्बा रंग्या ।
अणछाण्या पाणी ढोलिया, लोभ तणी संज्ञा ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५४ ॥

सोनीरा भवे मैं किया, सोना रूपा मे भेल ।
पूरो तोल रे वाणिया, धरत लोग्यो तेल ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५५ ॥

वाघरी ने घरे जद वस्या, सर्व जीव संहार ।
रुधिर मांस भरया रह्या, करता मांस आहार ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५६ ॥

दासी वेश्या ने कुले, चोरी जारी पाई ।
साते व्यसन सेविया, कुबुद्धि कूड़ कमाई ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५७ ॥

दाई ना भवे देखिया, आवल मल असज्झाय ।
झूठ जाचक ने जिहां, राखिया सराय ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५८ ॥

काग चिड़ी कूकड़ कुले, कीटक भखिया कोड़ ।
माखी जुवां गिगेडला, उदेई इण्डा फोड़ ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५९ ॥

लवारा भवे लाख लेई, वड़ पींपल वांढ़ी।
पूरण प्राणी धोई ने, अगन चढ़ाई गाढ़ी॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६० ॥

भील मेणा थोरी भवे, लगाया दव लाया।
भैंसा एवड़ वाढ़िया, डंभाई टोगड़ गायां॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६१ ॥

असुर तणे भवे ऊपना, मुर्गा गाय मरावी।
पंखी पिंजर पाड़िया, कर गिलोल करावी॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६२ ॥

केई जौहर कराया, धोरी केई धरणा।
दुर्बल लोक केई दुहव्या, करमां सु कोई न डरणा॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६३ ॥

खेत वाग खेड़ाविया, होय हाकम हुजदार।
सर दह केई शोपाविया, भरिया पापांरा भार॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६४ ॥

कवाड़ी भवे कर्म मैं किया, केई कठोता कराया।
सालर गूलर वड़ काटिया, पापे पेट भराया॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६५ ॥

कलाल कूजड़ा कुले, दारू भट्ट चढ़ाया।
भाजी केकरे कारणे, केई रोप रोपाया॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं॥ ६६ ॥

भाठा सिलावट भांजिया, केई मन्दिर कराया ।
माटी ईंटा कारणैं, केई चाव लगाया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६७ ॥

भैरूं भवानी मानिया, महा रुद्र हनुमान ।
आठ मद छके करी, दीधा बलिदान ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६८ ॥

पंखी माला खोसिया, भंवरा घर ढाया ।
सूल्या धान दलाविया, पापे पिण्ड भराया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६९ ॥

निन्दा कीधी साधु की, सूधा साधु सताया ।
कुगुरु संगे लाग ने, कर्म बहुला बंधाया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७० ॥

दान्तण ने ते कारणे, केई रूंख कटाया ।
धोयण दाड़ी ने मिसे, केई गोठ कराया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७१ ॥

कावड डुबड केतला, रावल रात रमाया ।
वलि हरपे पात्री पोखने, केई चिरत कराया ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७२ ॥

रे रे कर्म किया कैसा, पाप कीधा अपार ।
ये दोप उदय आविया, अबै कुण आधार ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७३ ॥

सिद्ध भगवन्त अरु साधु नो, हिवें शरणो होइज्यो ।
भगवन्त नो भजन कीजिये, सुर स्हामो जोईज्यो ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ७४ ॥
समदृष्टि जीव ते सरधसी, सुणता समता आवें ।
भारी कर्मा जीवना, सुणतां दुःख पावें ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ७५ ॥
भव अनन्त भमतां थका, किया कुटम्ब सम्बन्ध ।
त्रिविधे २ करी वोसरूं, तिण सूं प्रतिबन्ध ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ७६ ॥
भव अनन्त भमता थका, किया काया सम्बन्ध ।
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरूं, तिण सूं प्रतिबन्ध ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७७ ॥
भव अनन्त भमता थका, कीधो परिग्रह सम्बन्ध ।
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरूं. तिण सूं प्रतिबन्ध ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ७८ ॥
इण भवे पर भवे में किया, कीधा पाप अक्षत्र ।
त्रिविधे त्रिविधे करी वोसरूं, करूं जन्म पवित्र ॥ ७६ ॥
हिवें राणी पद्मावती, शरण लिया चार ।
सागारी अणसण कियो, जाणपणारो सार ॥ ८० ॥
राग वेराड़ी जे सुणें, ए त्रीजी ढाल ।
समयसुन्दर कहे पाप थी, छूटे भव तत्काल ॥ ८१ ॥

मोह जीत

दोहा

सुधर्म स्वर्ग सुधरमी, सभा माय शक्रेन्द्र ।
सहस्र चौरासी सुर भला, सामानिक सुखकन्द ॥ १ ॥
त्रि लख छत्तीस सहस्र सुर, आत्म रक्षक अधिकार ।
तीन परिषदा परवरी, लोकपाल वले च्यार ॥ २ ॥
अग्र महेषी आठ वर, इक इक नो परिवार ।
सोलह २ सहस्र सहु, एक लाख अठावीस हजार ॥ ३ ॥
सुर सहु सुणतां अमरपति, आखै वैण उदार ।
मोहजीत राजा तणो, निरमोही परिवार ॥ ४ ॥
इन्द्र प्रशंसा करी घणी, सांभल ने इक देव ।
आयो नृप छलवा भणी, आणी अति अहंमेव ॥ ५ ॥
राय-कुमर प्रच्छन्न कियो, धार्‍यो योगी भेष ।
कुमार किहां लाधो नहीं, जोय रह्या सुविशेष ॥ ६ ॥
एक दासी फिरती थकी, आई नगरी बाहर ।
जोगी होइने गलगलो, आखै वयण तिवार ॥ ७ ॥

सोरठा

सुण दासी मुझ वानरे, कुमर भणे मुझ मट वन्हे ।
सिंह हण्यो साक्षानरे, कहता हिवडो थडहडे ॥ १ ॥

ढाल १ ली

(देशी—महला में बैठी राणी कमलावती)

ए वचन सुणीने दासी इम भणे, करती ज्ञान विलास ।
सहु परिवार कह्यो जिन कारमो, तूं क्यूं थयोरे उदास ॥
साभलरे योगी, तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ १ ॥

सुरपति नरपति सर्व अथिर छै, श्वास रो किसो विश्वास ।
तू क्यू हुवो रे योगी गल गलो, थारे नहीं आयो ज्ञान प्रकाश ॥
सा० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ २ ॥

ऊंच ने नीच रङ्क राजा सहु, अविच मरण अपेक्षाय ।
क्षण क्षण मरे छै श्री जिन भाखियो, तूं सोच देख मन मांय ॥
सा० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ३ ॥

निज आतम ज्ञान स्वभावे थिर कह्या, ते किण सू लूट्यां नहीं जाय ।
थारोरे म्हारो माया जाल छै, मूरख रह्या मुरझाय ॥
सा० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ४ ॥

जे नर आत्म-स्वभाव नहीं ओलख्यो, पुद्‌गलनें जाणें
निज स्वभाव ।
मोहजाल में खूता मानवी, ते किम पामें तिरणरो दाव ॥
सां० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ५ ॥

तूअंतर रोगी योगी कहण रो,निज आत्म-स्वभाव रो अजाण ।
कुमर रो मरण देख दुमणो थयो, थारे मोटो रोग पिछाण ॥
सां० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ६ ॥

जे जीवन में हर्ष प्रमोद होवे घणो, मरणमे होवें दिलगीर ।
राग द्वेप मे खूता मानवी, ते किम पामें भवजल तीर ॥
सा० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ७ ॥

असंयती जीवरो वंछै जीवणो, ते प्रत्यक्ष राग पहिचान ।
राग छै तेतो दशमो पाप छै, राग ने दया कहै ते अजाण ॥
सां० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ८ ॥

मरणो वंछै तेतो द्वेप छै, ते ओलखणो सोरो जग माय ।
राग ओलखणी दोरी तेहथी, श्री वीतराग कहिवाय ॥
सां० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ९ ॥

जे रागने द्वेप तणें वश मानवी, ज्यारे हर्ष शोक रह्यो व्याप ।
ते भ्रमण करसी चिहुंगत संसार में, सहसी नरक निगोद
सन्ताप ॥
सां० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ १० ॥

" फल मोह कर्म ना जिन कह्या, ते टाले राग द्वेषनी ताप ।
निज आत्म-ज्ञान स्वभावे रम रह्या, सम भावे चित्त थाप ॥
सा० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ ११ ॥

जीव अनन्ता नित्य ही मर रह्या, मच्छ गलागल पेख ।
तूं मोच करसीरे किण किण जीव रो, तिण स्यूं समभाव
रहणो विशेष ॥
सा० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ १२ ॥

योगी तो सुण ने रह्यो जोवतो, डणरे नो मूल न दाह ।
अद्भुत रचना देखी एहनी, मन दृढ़ बोले अथाह ॥
सां० यो० तें योग री युक्ति रीत जाणी नहीं ॥ १३ ॥

दोहा

" स्वामी तिण कारणे, मोह नहीं मन मांय ।
जाय कहूं हिवे राय ने, तात हियें दुख थाय ॥ १ ॥
एहवी करी विचारणा, आयो सभा मझार ।
चित दुमणो नृप आगले, बोले कौन प्रकार ॥ २ ॥

सोरठा

सुण राजन मुझ वाणरे, कुमर भणी सिंह मारियो ।
छुट्या नहीं मुझ प्राणरे, कहता पिण कर्म्म हियो ॥ १ ॥

ढाल २ री

(देशी—सोही तेरापन्थ पावै हो)

किणरो सुत केहनो पिता, सहु स्वपनारी माया रे।
एक एकिका जीव स्यू, वार अनन्तो पाया रे॥
सगपण महा दु:खदायारे॥
योगेश्वर तू काई भूल्यो रे॥ १॥

योगी नाम धरायने, कपट जपै जप-माला रे।
तू कंयो किण कारणे, थारी जीभ अग्निरी ज्वाला रे॥
सुण तू मोह-मतवाला रे॥
योगेश्वर तू काई भूल्यो रे॥ २॥

योग युक्ति जाणं नहीं, अध्यात्म चिन आयारे।
तू अलूझ्यो मोह जाल मे, स्यू हुवै राख लगायां रे॥
ज्ञान-दशा विन पार्या रे॥
योगेश्वर तू काई भूल्यो रे॥ ३॥

इन्द्रजाल संसार ए, योगी तू काई राचै रे।
मोहजाल तन पहरने, जीव नटवा जिम नाचै रे॥
मूरख नर माचै रे॥
योगेश्वर तू काई भूल्यो रे॥ ४॥

वाप मरी वेटो हुवै, माता मर हुवै नारी रे।
इत्यादिक सगपण घणा, कर्म्म तणो गति भारी रे॥
आणै सांग अपारी रे॥
योगेश्वर तूं कांई भूल्यो रे॥ ५॥

ओ बार अनन्ती पुत्र हुवो, हूं बाप अनन्ती वारो रे ।
मोह तणै प्रताप स्यूं, सह्या दुःख अपारो रे॥
नरक निगोद मझारो रे॥
योगेश्वर तूं काई भूल्यो रे॥ ६ ॥

ज्ञान दर्शन गुण निरमला, ए सुखदायक म्हांरा रे ।
और वस्तु म्हारी नहीं, ए तो सर्व निकारा रे॥
दुख - दायक सारा रे॥
योगेश्वर तूं कांई भूल्यो रे॥ ७ ॥

निज स्वभाव भूलि रह्यो, मोह वशे मतवालो रे ।
बुद्धि होण जीव वापडा, पामै दुःख असरालो रे॥
नरक निगोद विचालो रे॥
योगेश्वर तूं कांई भूल्यो रे॥ ८ ॥

सोच करै गई वस्तुनो, महा मूरख बाला रे ।
समझाया समझै नहीं, दृढ कर्मां ना ताला रे॥
जीव पड़े जंजाला रे॥
योगेश्वर तूं कांई भूल्यो रे॥ ९ ॥

हर्ष नहीं सम्पति विषै, विपत्ति पडयां नहीं विषवादोरे ।
धीर पणै स्थिर आतमा, धर्म अमोलख लाधो रे॥
ज्यारे सदा समाधो रे॥
योगेश्वर तूं कांई भूल्यो रे॥ १०॥

कष्ट पड्यां कायम रहै, शूरा रहै सम भावै रे ।
निश्चल मन स्थिर आतमा, चित्त विमन नहीं थावैरे ॥
वे स्याणा सुख पावै रे ॥
योगेश्वर तूं कांई भूल्यो रे ॥ ११ ॥

निन्दा स्तुति सुख दु खे, लाभ अलाभ मझारो रे ।
समचित जीतव मरण में, ज्ञान गुणारा भण्डारो रे ॥
पामै शिव सुख सारो रे ॥
योगेश्वर तूं काई भूल्यो रे ॥ १२ ॥

मोह थकी दुःख नरकना, मोह तज्या सुख सूझै रे ।
तिण स्यू मोह न कीजिये, योगी तू काई अलूझै रे ॥
ज्ञान काई नहीं बूझै रे ॥
योगेश्वर तू काई भूल्यो रे ॥ १३ ॥

योगी सुण इचरज हुवो, करवा लागो विचारो रे ।
वज्र हियो एहनो सही, जीत्यो मोह विकारो रे ॥
मोहजीत नाम सारो रे ॥
योगेश्वर तू काई भूल्यो रे ॥ १४ ॥

दोहा

पिता तणै मोह अल्प हुवै, तिण स्यू धरै न दुःख ।
जाय कहू हिवै मात नें, तिण राख्यो निज कूख ॥ १ ॥
एहवी करी विचारणा, आयो राणी पास ।
तन कम्पै तरु-पान ज्यू, वोले थई उदास ॥ २ ॥

सोरठा

सुण मैया मुझ वाणरे, कुमर १णी सिंह मारियो ।
छूट्या नही मुझ प्राणरे, कहता पिण कम्पे हियो ॥ १ ॥

दोहा

वचन सुणी योगी तणा, माता कहे तिण वार ।
रे योगी सुत सिंह हण्यो, सांभल वचन उदार ॥ १ ॥

ढाल ३ री

(देशी—मुनि वलभद्र वनंरे वैराग में)

क्यू तुम झालज उठी रे ।
किणरी माता सुत केहना, ए सहु वातज झूठी रे ॥
भोला भरम मे क्यू भमैं ॥ १ ॥
ज्ञान दर्शण चरण तांहरा, ते तो कोइय न लूटें रे ।
निरमल-गुण शुद्ध आतमा, कहो किण विध खूटें रे ॥
भोला भरम में क्यू भमैं ॥ २ ॥
सम्पति सहु सुपना जिसी, योंही कर रह्या आशा रे ।
दिन-थोड़ा में विललावसो, जिम पाणी ना पतासारे ॥
भोला भरम मे क्यूं भमैं ॥ ३ ॥
लाखां मनुष्य भेला हुवे, देश २ ना आई रे ।
मास तांई भेला रहै, (पिछा) आवें जिण दिशा जाई रे ॥
भोला भरम में क्यूं भमैं ॥ ४ ॥

मनुष्य विछड़िया तेहनो, इचरज मूल न आवै रे।
ते मास ताई भेला रह्या, इचरज तेह कुहावै रे॥
भोला भरम मे क्यूं भमै॥ ५ ॥

अनन्ता प्रमाणु भेला थई, कुमर नो शरीर बंधाणोरे।
इतरा वरस रह्या एकठा, हिवै विछड़िया पिछाणो रे॥
भोला भरम मे क्यूं भमै॥ ६ ॥

पुद्गल विछड़िया तेहनो, इचरज नहीं लिगारो रे।
एता वरस रह्या एकठा, इचरज एह अवधारो रे॥
भोला भरम मे क्यूं भमै॥ ७ ॥

ये वार अनन्ती पुत्र हुवो, हूं वार अनंती हुई मातारे।
मोह तणै प्रताप स्यूं, किया नया-नया नाता रे॥
भोला भरम मे क्यूं भमै॥ ८ ॥

सगपण सहु संसार ना, सगला झूठा हूं जाणूं रे।
कारण कर्म बंधन तणो, त्यारो मोह किम आणू रे॥
भोला भरम मे क्यूं भमै॥ ९ ॥

पोः ऊपर भेला हुवै, उन्हाले नर आई रे।
तेम सहु आई मिल्या, क्षणमां विछड़ जाई रे॥
भोला भरम में क्यूं भमै॥ १० ॥

तरु ऊपर रवि आंथम्यां, पंखी हुवै बहु भेला रे।
प्रात समय सहु विछड़ै, तिमही सजन ना मेला रे॥
भोला भरम मे क्यूं भमै॥ ११ ॥

सहु परिवार छाडी करी, सयम ले सुख पाऊं रे ।
एहवी निरमल भावना, हूं तो निश दिन भाऊं रे ॥
भोला भरम में क्यू भमै ॥ १२ ॥

नरक निगोद दुःख मोह थी, मोह अनरथ मूलो रे ।
विपति आगर दुःख मोह छै, मोह अग्नि रो पूलो रे ॥
भोला भरम में क्यूं भमै ॥ १३ ॥

पामर जीव अजाण ते, मोह तणै वश पड़िया रे ।
आत्म-स्वभाव भूली रह्या, नरक निगोद रडपडियारे ॥
भोला भरम मे क्यूं भमै ॥ १४ ॥

तिणस्यूं कुमर म्हारो नहीं, म्हारा गुण मुझ पासोरे ।
कुटुम्ब विटम्ब दु.खदायका, हूं तो जाणू तमासो रे ॥
भोला भरम मे क्यूं भमै ॥ १५ ॥

योगी मन इचरज हुवो, साभल मातारी वाणी रे ।
अद्भुत रचना एहनी, मै तो प्रत्यक्ष जाणी रे ॥
भोला भरम मे क्यू भमै ॥ १६ ॥

दोहा

ए माता डाकण जिसी, इणनै सोच न कोय ।
केतो सुत इणरो नहीं, के हियो कठिन अति होय ॥ १ ॥
कुमर अवर ही सम्पजै, माता ने जग मांय ।
जाय कहूं हिवै नारने, ते दु.ख धरै अथाय ॥ २ ॥
एहवी करी विचारणा, आयो नारी पास ।
थर-हर लाग्यो धूजवा, बोलै थई उदास ॥ ३ ॥

सोरठा

साभल वहिनी वात रे, तुझ वल्लभ मुझ मठ कन्है ।
सिह हण्यो साक्षात रे, कहता हिवडो थर-हरे ।। १ ।।

ढाल ४ थी

(जावो २ के करो सहिया वैठो जाजम विछाय-एदेशी)

मुझ वल्लभ मुझ माय विराजै, ज्ञान चरण गुण धीर ।
अवर सहु सुपनारी माया, तूं क्यूं हुवो दिलगीर ।।
तूं क्यूं हुवो दिलगीर, योगेश्वर । तूं क्यूं हुवो दिलगीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यू,
ज्यू पामो भवजल तीर ।। १ ।।

स्थिति अनुसार परिवार सहु जन, मात तात सुत वीर ।
पिउ तिरिया वहिनी भतीजी भाणेजी, कोइय न भाजै भीर ।।
कोइय न भाजै भीर, योगेश्वर । कोइय न भाजै भीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यू,
ज्यू पामो भव जल तीर ।। २ ।।

तूं क्यूं योगी थर-हर कम्प्यो, केम हुवो दिलगीर ।
भस्म लगाय भरम नहीं भाग्यो, नहीं जाण्यो निज गुण हीर ।।
नहीं जाण्यो निज गुण हीर, योगेश्वर ।
नहीं जण्यो निज गुण हीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यूं पामो भव जल तीर ।। ३ ।।

मुझ प्रीतम मुझ पास निरन्तर, आत्म-स्वभाव अमीर ।
अयोगी अभोगी अरोगी असोगी, ज्ञान अखण्ड गुण धीर ॥
ज्ञान अखण्ड गुण धीर, योगेश्वर । ज्ञान अखंड गुण धीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यू,
ज्यू पामो भव जल तीर ॥ ४ ॥

अभेदी अवेदी अखेदी अछेदी, चेतन निज गुण हीर ।
तेह हण्या किणरा न हणीजे, नहिं कोई नो सीर ॥
नहिं कोई नो सीर, योगेश्वर । नहिं कोई नो सीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यू पामो भव जल तीर ॥ ५ ॥

हर्ष शोक तज सज संयम गुण, धर ज्ञान प्रमोद सधीर ।
संवेग रस आनन्द मन सींच्या, तूटै कर्म जञ्जीर ॥
तुटै कर्म जञ्जीर, योगेश्वर । तुटै कर्म जञ्जीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यू पामो भव जल तीर ॥ ६ ॥

ए प्रीतम कर्म बंधवानो कारण, भोग दायक महा भीर ।
सहजेई विरह थया विष-पोटली, खुल गई गांठ कथीर ॥
खुल गई गाठ कथीर, योगेश्वर । खुल गई गाठ कथीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यू,
ज्यू पामो भव जल तीर ॥ ७ ॥

भोग थकी दु:ख नरक निगोदना, अनन्त काल सही पीर ।
ते भोगदायकनो मोह किम आणू, केम होऊं दिलगीर ॥
केम होऊं दिलगीर, योगेश्वर। केम होऊं दिलगीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यू,
ज्यू पामो भव जल तीर ॥ ८ ॥

आतम मित्र एही सुखदायक, आतम निज गुण हीर ।
आत्म अमित्र राग द्वेष तणें वश, चिहुं गति भ्रमर जञ्जीर ॥
चिहुं गति भ्रमर जंजीर, योगेश्वर । चिहुं गति भ्रमर जंजीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यू,
ज्यू पामो भव जल तीर ॥ ९ ॥

धन्य धन्य जे नर नार बाला-पणें, धारें चरण गुण धीर ।
उपशम रस अवलम्बन करिने, अजर अमर शिव सीर ॥
अजर अमर शिव सीर, योगेश्वर । अजर अमर शिव सीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यूं पामो भव जल तीर ॥ १० ॥

हूं पिण चरण धार करूं करणी, हर्ष मुझ मन हीर ।
मोह विलाप करूं किण कारण, साभल तूं मुझ वीर ॥
साभल तूं मुझ वीर, योगेश्वर। साभल तूं मुझ वीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यूं पामो भव जल तीर ॥ ११ ॥

तूं योगेश्वर धूजण लागो, न आयो ज्ञान सधीर ।
ज्ञान दर्शण घर है अति ऊंडो, तूं फसियो मोह जंजीर ॥
तूं फसियो मोह जंजीर, योगेश्वर । तू फसियो मोह जंजीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यूं पामो भव जल तीर ॥ १२ ॥
योगी सुण मन माय विमासै, अहो अहो वचन अमीर ।
धन्य २ सुन्दर अधिक अमोलख, धन्य २ ज्ञान गम्भीर ॥
धन्य २ ज्ञान गम्भीर, योगेश्वर । धन्य २ ज्ञान गम्भीर ।
आत्म-स्वरूप ओलख करणी स्यूं,
ज्यूं पामो भव जल तीर ॥ १३ ॥

दोहा

योगी सुण हर्ष्यों घणो, मन में करै विचार ।
मोहजीत राजा तणो, निरमोही परिवार ॥ १ ॥
इन्द्र प्रशंसा करी, ते सहु साची जाण ।
योगी रूप फेरि कियो, देव रूप पहिचाण ॥ २ ॥

ढाल ५ मी

(देशी—वीज करै सीता सतीरे लाल)

कानां कुण्डल झल-हलं रे लाल, हिवड़ै शोभै हार हो ।
राजेश्वर ।
आंगुलिया दश मुद्रिका रे लाल, मस्तक मुकुट उदार हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताहरी रे लाल ॥ १ ॥

धन्य धन्य तुझ परिवार हो, राजेश्वर ।
देव गुरु धन्य ताह्‌रा रे लाल । धन्य तुझ ज्ञान उदार हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताह्‌री रे लाल ॥ २ ॥
रत्न तिलक अति झलहले रे लाल, झिगमिग २ ज्योति हो ।
राजेश्वर ।
कड़ियां कडनोलो दीपतोरे लाल, दशों दिशि करत उद्योतहो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताह्‌री रे लाल ॥ ३ ॥
एहवो रूप वैक्रे करी रे लाल, लाग्यो राजाजीरे पाय हो ।
राजेश्वर ।
मुख स्यूं गुण ग्राम करतो थकोरे लाल, बोलै एहवो वाय हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताह्‌री रे लाल ॥ ४ ॥
शक्रेंद्र गुण किया तांह्‌रा रे लाल, मैं सह्या नहीं मन मांय हो ।
राजेश्वर ।
हूं आयो छलवा भणी रे लाल, योगी रूप बनाय हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी तांह्‌री रे लाल ॥ ५ ॥
शक्रेंद्र गुण किया मुख थकीरे लाल, ते देख लिया इणवारहो,
राजेश्वर ।
मोह्‌जीत राजा तणो रे लाल, निरमोही परिवार हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताह्‌री रे लाल ॥ ६ ॥
आत्म-ज्ञान गुणे करी रे लाल, अहो २ अध्यात्म रूप हो,
राजेश्वर ।
इचरज आवै मन तांह्‌रो रे लाल,समपणो अधिक स्वरूपहो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताह्‌री रे लाल ॥ ७ ॥

नृप राणी त्रिया कुमरनी रे लाल, चौथी दासी जाण हो,
राजेश्वर ।
मोह हरामी नैं जीतियो रे लाल, इचरज ए असमान हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताहरी रे लाल ॥ ८ ॥
राय-कुमर प्रकट कियो रे लाल, लाग्यो राजाजीरे पाय हो,
राजेश्वर ।
सुर वहु मान देई करी रे लाल, आयो तिण दिश जाय हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी तांहरी रे लाल ॥ ९ ॥
ए इधकार मोहजीत नो रे लाल, जोड़्यो कथा तणे अनुसार
हो, राजेश्वर ।
विरुद्ध वचन आयो हुवे रे लाल, तो मिच्छामि दुक्कडं सार हो,
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी तांहरी रे लाल ॥१०॥
संवत उगणीसै साते समयरे लाल, जेठ सुद वीज रविवारहो
राजेश्वर ।
जोड़ कीधी मोहजीतनीरे लाल, शहर सुजानगढ़ मझार हो ।
राजेश्वर ॥ धन्य २ करणी ताहरी रे लाल ॥११॥

इति चतुर्थाचार्य श्रीमज्जयाचार्य कृत मोहजीत
राजानो व्याख्यान सम्पूर्णम्

आत्मचिन्तन-ध्यान

[स्व० श्री कर्मचन्दजी स्वामी कृत]

[प्रथम पद्म आसन थिर करि, पछै मन थिर करि, विषै कषायथकी चित्तनी लहर मिटाय नै, अन्त करण मे इम ध्यावणो —] नमस्कार थावो 'श्री अरिहन्तजी नै ।'

ते अरिहन्तजी केहवा छै ?

सुरासुर सेवित चरण कमल । सर्वज्ञ । भगवंत जगनाथ । जगजीवा नां तारक । कुगत मारग निवारण । निर्वाण मारग पमाड़ण । निराह, निरहंकार । निःसङ्ग, निर्मम । शात, दांत, करुणासमुद्र । विसोचपगार सागर । अनन्त ज्ञान दर्शन चारित्र गुण नां आगर । एक सहस्त्र-अष्ट लक्षणा नां धरणहार । चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी गुण सहित । समुद्रनी परै गंभीर । मेरु नी परै धीर । चद्रमा जिसा निर्मला । सूर्य सरीपा तप तेजवंत । किं बहुना धर्म ना मूर्ति । एहवा प्रभु निर्मले । जोग मुद्रा साधि । सकल कर्म खपाई । सर्व कारज साधि, सिद्ध थया ।

ते सिद्ध भगवान केहवा छै ?

सकल कर्म बन्ध रहित थई । ते महा कलकलिभूत । संसार नां जन्म मरण । रोग शोक चिन्ता । शारीरिक मानसिक दुख थकी छूटा । काम कषाय रूप अग्नि, बैराग

उपशम जल स्युं उल्हवी नै। शीतलीभूत थया। निरमल, अखय, अजर, अमर। परमानन्द प्राप्त थया। अनन्त, केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ आत्मिक सुख ३ खायक सम्य क्त्व ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्ति भाव ६ अगुरुलघुभाव ७ अन्तराय रहित ८ ए आठ गुण सहित, सिद्धजी लोका-लोक नो सरूप देखी रह्या छै। परम सुखी थया छै। त्यां सिद्धजी भगवान नें, म्हारो नमस्कार थावो!

रे जीव। जेहवो सिद्ध परमात्मा नो सरूप छै, तेहवो तांहरो चेतानन्द नो सरूप सत्ता मे छै।

रे चेतानन्द! तांहरो सरूप कर्मां अछंयो छै। मोह नें उदय मलीन होय रह्यो छै। निज सरूप भूलि पर सरूप मे रम रह्यो छै। क्रोध में। मान में। माया में। लोभ में। राग में। द्वेष में। हांस। रति अरति। भय। शोक। दुगंछा। वेद, विकार में वरत रह्यो छै।

कर्म वशे नरकादि। च्यार गत, चौरासी लाख जीव योनि मे। कुंभार नै चाक नी परै परिभ्रमण करि रह्यो छै। भूख, तृषा, शीत, ताप, हर्ष, शोक, ऊँचनीच पणो पामि रह्यो छै। चवदह राजलोक मे जनम मरण करि पुरि

गाथा

न सा जाई, न सा जोणी; न तं ठाणं, न तं कुलं।
न जाया, न मुवा जच्छ; सव्वे जीव अनन्त सो॥

रे जीव ! तू हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह, जाव मिथ्या दर्शन शल्य ए सेवि, पाप उपारजि, आत्मा भारी करि, नर्के गयो ।

ते नर्क केहवी छै ?

महा घोर रुद्र अंधकार सहित बिहामणी छै ।

तिहां वेदना केहवी भोगवी ?

नरकपाल परमाधामी कुम्भी मे पचाव्यो । झल रहित चिता मे होमव्यो । भोभर मे भाड़व्यो । चणा नी परै सेकव्यो । अगनवर्ण लोह रथ जुसरो खाधै देइ मार्‍यो । अगनवर्णी धरती उपरै भाला स्युं भेदि चलाव्यो । यन्त्र मे पीळव्यो । मुदुगरे कूटि चूर्ण कीधो । अगनवर्णी लोह पुतली आलिंगन कराव्यो । खाल उतारि खार सींचव्यो । शूली अग्रे पोयो । सुया नी सेज्या मे सुवाय नें रोळव्यो । करवत चढ़ाव्यो । निविड़ बन्धन बाधि वृक्षे लटकाव्यो । इसी क्षेत्र वेदना उपजावी । वैतरणी नदी नो पानी, ताता तरवा सरीपो, तिण मे न्हाख्यो । कलकलतो मुंह फाड़ि पाव्यो । नरकपाल श्वान रूपकरि जीर्ण वस्त्र नी परै फाड़्यो । सिंह रूपकरि विदार्‍यो । हस्ती रूपकरि चरणा मर्द्यो । सर्प रूपकरि चिहुं दिश चटक्यो । अनन्ती भूख, तृषा, शीत, ताप, परवसपणे, जघन्य १० हजार वर्ष, उत्कृष्ट ३३ सागर, एहवी वेदना अनन्ती वार भोगवी ।

वलि पृथ्वीकायमें गयो, तिहां असंख्याता भव किया। असंख्याती अवसर्पणि उत्सर्पणि लग खूणीज्यो, खुदीज्यो, दु:ख भोगव्या। एवम् अप्पमे, तेउमे, वाउमें, वनस्पतिमे गयो। तिहां अनंता भव किया। सूक्ष्म, वादर, प्रत्येक साधारणमे। अनन्ती अवसर्पणि। क्षेत्र थकी अनन्ता लोकाकाश प्रमाणे असंख्याता पुद्गल प्रावर्तन तांई रुल्यो।

निगोदमे गयो, तिहां आंगुल रै असंख्यातवें भागमात्र, एक शरीरमे अनन्ता भेदे, अनन्ता जीव रहे छै। तिहां रहिनै एहवी संकड़ाई भोगवी। एक मोहोरत मध्ये ६५००० पैसठ हजार ५०० पाचसौ ३६ छत्तीस भव करै। एहवी जनम मरण नी वेदना भोगवी। छेदन भेदन पामी।

वलि वेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्रीमे लाखों भव किया। अनेक दु:ख भोगव्या।

वलि तिर्यंच पंचेन्द्रीमे:—जलचर, थलचर, उरपर, भुज-पर, खेचरमे लाखां भव किया। शस्त्र थकी मुवो। भूख, तृषा, वध, वन्ध, परवशादि अनेक दुःख भोगव्या।

वलि इम रुलतै रुलतै घणा कष्टे कदा जो मनुष्य जन्म पायो तो नव मास तांई गर्भ ना दु:ख सह्या। प्रथम उत्पत्ति समय पिता नो वीर्य माता नों रुद्र नो आहार लेइ नें शरीर वांध्यो। नीचो मस्तक, ऊचा पग, मल-मूत्रकी दुर्गन्ध संकड़ाई नो भाकसी में रह्यो।

साढ़ा तीन क्रोड़ रोम रोम सुई ताती, अगनवर्णि एक दिन रा जन्म्या बालक रै रोम रोम मे चापै, तेहनै वेदना हुवै, तेहथी आठ गुणी वेदना गर्भ मे वसतां। जन्मतां क्रोड़गुणी हुवै। एहवी वेदना भोगवि नै जन्म्यो।

जन्म्यां पछै, बालपणै माता-पिता नो विजोग पड़्यो। वलि जोवनमे महाप्राणवल्लभ स्त्रीपुत्रादि नो विजोग पड़्यो। इष्ट-विजोग, अनिष्ट-संयोग सह्या। वलि सांस, खास, जरा, दाह, अर्श भगन्दरादि अनेक व्याधि ना कष्ट सह्या। वलि वृद्धपणै अनेक परवशपणै दु.ख भोगव्या।

रे जीव! एहवा दुःख, अनेक सहिनै भूल गयो! रे जीव! कदाचित् पूर्वे पुन्य उपार्जि, मिनख भव पाइ, जोवन पामि, गर्वमे छकी रह्यो छै, जिम माखी खेलमे लिपटी, तिम तू सनेहमें लिपटि रह्यो छै।

जीव! तूं किण स्युं सनेह करै छै? तूं केहनो नहीं। (गाथा) "पुरसा तुम्मेव तुम्मीतं" हे पुरुष! तांहरो तूंहीज मित्र छै। तूं वाहिर मित्र किसूं वंछे छै। (गाथा) "मीतं मीछसी, अप्पा कत्ता विकत्ताय" इत्यादि। अहो जीव! ए तांहरी आत्माज कर्मा री कर्त्ता। एहिज भुगतता। एहिज विखेरता। एहिज दुःख नी दाता। एहिज सुख नी दाता। एहिज वैरी। एहिज मित्र। एहिज परउपकार नी करणहार। तिणस्यू ज्ञान-दर्शन-चारित्रसहित आत्मा ऊपर परम प्रतीति राखिये।

ए टालि नै किण ही सचित्त अचित्त वस्तु ऊपर स्नेह न करिवो। (गाथा) "असिणेह सिणेह करहं" जे आप स्युं स्नेह करै छे, ताहस्युं पिण निस्नेहपणे रहवो। ए केवली नो वचन छै। वलि कह्यो छै (गाथा) "स्नेह पासा भयंकरा।" ए स्नेहरूप पासा महा भय ना करणहार छै। तिणस्यूं, रे जीव ! ए वितराग नो वचन विमासि तू किण स्युं ही स्नेह मत कर। जगत नां सर्व जीवा स्युं ताहरे पूर्वे एक एक स्युं अनन्ता सगपण किया। इम जाणि राग टालिये।

रे जीव ! तू तांहरा निज गुण निहाल। ताहरा निज गुण तो ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि छै। निज गुण सुख टालि। वाहिर पुद्गलीक कामभोग नां सुख तो अथिर छे। मिनप ना सुख तो असार छै। स्त्री पुरुप नी काया महा असुच, अपवित्र, लोही-हाड मास नो घर। मल-मूत्रे भर्‍यो। खेल, खंखार, वमन, पित्त नो आगर। अधम, अनित्य। असा-सतो, सड़न-गलन। विधंसण। धर्मक्षीण। भूंगर काची माटी ना भांडा नी परे। ऊपर स्युं राग करै। श्री धन्ने रिपेसर आद देकर, तप-धन सार काढ़ि सिद्ध थया।

रे जीव। एह स्त्री सम्वन्धिया काम भोग अथिर छै। जेहवो विजलीरो चमत्कार। संध्या नो भान। पतङ्ग नो रङ्ग। डाभ-अणी जल-विन्दुवो अथिर छे। तिम तन-

धन, जोवन अथिर छै। (गाथा) "सव्वविलपनीयांगीयं" इत्यादि सर्व गीत – विलापात समान छै। सर्व गहणा—ते भारभूत समान छै। सर्व नाटक – ते विटम्बणा समान छै। सर्व विषय सुख—ते दुर्गत ना दातार छै। बाल-अविवेकी जीव नै रति उपजावणहार छै। ज्यूं पांव-रोगीने खाज मीठी लागे जिम जहर-चढे नै नीम पान मीठा लागे। ज्यूं जीव रै प्रबल मोह उदय छै, तेहने ए कामभोग मीठा लागे छै। वलि जेहवो किम्पाकफल दीसतो सुन्दर, सुगन्ध; खातां मीठो अमृत सरीखो लागे, पिण मांहि परगम्यां जीव काया जुदा जुदा हुवै; ज्यूं रूड़ा शब्द, रूप, रस, गन्ध, फर्स काम-भोग स्त्रियादिक ना जीव नै सेवतां मीठा लागे। तेहना फल परभवमें अत्यन्त कड़वा लागे। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती नी परै।

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती पूर्व भव चारित्र पालि नै, तप करि चक्री सनत्कुमार नी रिद्धि देखि नै, निहाणो कियो, बारवों चक्रवर्ती थयो। षट खण्ड मे आण वरताई। तेहनै ८४ (चौरासी) लाख हाथी, ८४ (चौरासी) लाख घोड़ा, ८४ (चौरसी) लाख रथ, ९६ (छिन्नवे) क्रोड़ पायक, २५ (पच्चीस) हजार देवता, ३२ (बत्तीस) हजार मुकुटबंध राजा सेवा करै। नव निधान। चवदह रतन। २० (वीस) हजार सोने रूपे ना आगर। ४२ (बयालीस)

भोमिया देवता ना निपायेला रतन जड़त महलायत। १९२००० (एक लाख बानवे हजार) मनोहर रूपवंत अन्तेवर पटरानी। श्रीदेवी—उत्कृष्ट रूप लावण्य यौवन नी धरणहार। मनोहर भूषण वेश नी धरणहार। मिनष नी अपछरा। सिणगार नो घर। सुकुमाल शरीर नी धरणहार। परम रति विलास नी उपजावणहार। सर्व ऋतु में सुखदायिनी। तेहनो शरीर फर्स्यां रोग उपशमे। एहवा स्त्री संघाते सुख भोगवि। छः खण्ड नो राज्य भोगवि। सात सौ वर्ष नो आउपो पालि। कर्म उपार्जि सातवीं नर्क, तेतीस सागर ने आउपे गयो। सात सौ वर्षां में २८०० (अठाइस सौ) क्रोड़, ५२ (बावन) क्रोड़, ३८ (अड़तीस) लाख, ८० (अस्सी) हजार सास उसास लिया। एकएक सासोसास ऊपर नारकी नी मार केहवी? ११ (इग्यारह) लाख पल, ५६ (छप्पन) हजार पल, ९०० (नौ सौ) पल, २५ (पच्चीस) पल, एक पल नो तीजो भाग जाभेरो। एतली वेदना भोगव्यां, एक सासोसास नां सुखां नी करमां नी फारगती होवै। रे जीव! एहवा खिण मात्र ना सुख। अने बहु काल ना दुख।

रे जीव! तू देवलोक गयो। तिहां एहवा सुख भोगव्या। रतन जड़त महलायत। पांचसौ योजन चिहुं दिशि बाग महा रलियामणा। हजार सूरज थकी पिण तेज ते

महलां नो उद्योत घणो। वैक्रिय शरीर महा सुन्दर। अद्-भुत रूप ज्योति क्रांति ना धणी। महाशक्तिवन्त। इच्छित रूप करवा समर्थ। पहले देवलोक दोय सागर नो अ उखो देवता नो। एक देवता रै आठ देवांगना। एकेकी देवी। सोलह सोलह हजार महा अदुभुत अचरजकारी जोत-क्रांत, मनोहर वेश लावण्य यौवन नी धरणहार।

शिणगार नो घर। एहवा उत्तर वैक्रिय रूप वैक्रिय करें। एतला रूप देवता करै। ते देवी केतली भोगवे। २२ (वाईस) क्रोड़ा क्रोड, ८५ (पचासी) लाख क्रोड़, ७१ (इकहतर) हजार क्रोड़, ४०० (चार सौ) क्रोड़, २८ (अठाइस) क्रोड़, ५७ (सतावन) लाख, १४ (चवदह) हजार, २८० (दो सौ अस्सी) देवी भोगवे। तो पिण त्रिपत न हुवो। तो। रे जीव! ए मिनष नो औदारिक शरीर सम्बन्धि महा सुगलो अल्प काल ना सुख थी सू। त्रिपत हुसी। इम जाणि नैं रुच उतारवी।

रे जीव। आरज खेत्र। उत्तम कुल। दीर्घ आउखो। पूरी इन्द्री। सतगुरां नी संगत। वीतराग ना वचना नो सांभलवो। वीतराग ना वचन केहवा छै? सत्य छै, उत्तम, निर्मल, निर्दोष। सकल कार्य नी सिद्धि ना करणहार। जन्म मरण ना मिटावनहार। एकांत हितकारी।

रे जीव ! ज्यां लग जरा नहीं; रोग नहीं, चक्षु इन्द्री नो वल हीण न पड़े; त्यां लग धर्म नो अवसर जाणि। संयम तप नै विषै प्राक्रम फोड़वो। ज्यूं परम सुख—महा सुख पामिये।

इसी करणी कौण कीधी ?

श्री धन्नो काकंदी वासी। वत्तीस स्त्रियां छांडि, दीक्षा लेइ, नौ महीना मे। वेले वेले पारणो। पारणे पारणे आयंविल। न्हाखीतो आहार। अभिग्रह सहित लियो। घणी उत्कृष्ट करणी कीधी। नव मास मे। तीन क्रोड़। पांच लाख। इकसठ हजार। तीन सौ सास उसास लेइ, स्वार्थ सिद्ध पहुंता। तेतीस सागर ने आउषे। एक सास उसास उपर सुखः—दोय सै क्रोड़ पल। सात क्रोड़ पल। सत्ताणवे लाख पल। छिन्नवे हजार पल। नौ सौ पल। अठानवे पल। एक पल नो छठो भाग माठेरो। एतला सुख पुद्गलीक। एक एक सासोसास उपर भोगवे। पीछे मिनष थइ, मोक्ष जासी। ते मोक्ष ना आत्मिक सुख सदा इकधारा छै।

एहवा अनन्त आत्मिक सुख साधुपणा थी पामिये।

———

अनाथी मुनि का स्तवन

राय श्रेणिक वाड़ी गयो, दीठो मुनि एकन्त।
रूप देखी अचरज थयो, राय पूछै रे कुण वृतन्त ॥
श्रेणिक राय! हूं रे अनाथी निग्रंथ।
मैं तो लीधो रे, साधुजी रो पन्थ॥ श्रेणिक ॥१॥
ए आंकड़ी

कोसम्बी नगरी हुंती, पिता मुझ प्रबल धन।
पुत्र परिवार भरपूर स्यू, तिणरो हूं कुंवर रतन ॥२॥
एक दिवस मुझ वेदना उपनी, मो स्यू खमियन जाय।
मात पिता झूर्या घणा, न सक्या रे मुझ वेदना घंटाय ॥३॥
पिताजी म्हारै कारणे, खरच्या वहुला दाम।
तो पिण वेदना गई नहीं, एहवो रे अथिर संसार ॥४॥
माता पिण म्हारै कारणे, धरती दु:ख अथाय।
उपाय तो किया घणा, पिण म्हारै रे सुख नहीं थाय ॥५॥
वन्धु पिण म्हारै हूंता, एक उदर ना भाय।
औषध तो वहुविध किया, पिण कारी न लागी काय ॥६॥
वहिनां पिण म्हारै हूंती, वड़ी छोटी ताय।
वहु विध लूण उंवारती, पिण म्हारै रे सुख नहीं थाय ॥७॥
गोरड़ी मन मोरड़ी, गोरड़ी अवला वाल।
देख वेदना म्हांयरी, न सकी रे मुझ वेदना घंटाय ॥८॥
आंख्यां वहु आंसू पड़ै; सींच रही मुझ काय।

खाण पाण विभूषा तजी, पिण म्हारें रे समाधि न थाय ॥६॥
प्रेम विलुधी पद्‌मणी, मुझ स्यूं अलगी न थाय।
बहु विधि वेदना में रही, वनिता रही रे विललाय ॥१०॥
बहु राजवैद्य बुलाविया, किया अनेक उपाय।
चन्दन लेप लगाविया, पिण म्हारै रे समाधि न थाय ॥११॥
जग में कोई किणरो नहीं, तब मैं थयो रे अनाथ।
वीतरागजी रे धर्म विना, नहीं कोई रे मुक्ति रो साथ ॥१२॥
वेदना जावे म्हायरी, तो लेऊं संयम भार।
इम चिंतवतां वेदना गई, प्रभाते थयो रे अणगार ॥१३॥
गुण सुण राजा चिन्तवै, धन्य धन्य एह अणगार।
राय श्रेणिक समकित लीवी, वान्दी आयो रे नगर मझार ॥१४॥
अनाथीजी रा गुण गावतां, कटे कर्मां री क्रोड़।
गुण सुण सुन्दर इम भणै, ज्यांनै वंदुं रे वेकर जोड़ ॥१५॥

आत्म-चिन्तन

(रचयिता—स्व० श्री पाचीरामजी वैद, लाडनू)

कलिमल काल अनादि रो संच्यो, हिवे तू क्यूं घबरावे।
अशुभ कर्तव्य थांरा प्रगट थया थी, मन में क्यूं दुखपावे॥
सुण चेतानन्द रे, समता रस घट पीजै।
शुद्ध करणी कर रे, आतम वश कर लीजै ॥१॥
ए आंकड़ी

कुगुरु संगत पुद्गल प्यासा, ते पिण तू परहरिये।
अमित्र भाव पणो मूल म राखो, शिव सुख पद संचरिये ॥२॥
मात पिता त्रिया सुत कारण, वित्त बहु विध करी म्हेलै।
स्वारथ पूगां सहु नै वल्लभ, विन स्वारथ तसु हेलै ॥३॥
आ देही थांरी फूल ज्यू विकसे, अनुकूल मन चित्तचंगा।
प्रतिकूल थयां पलक मे पलटै, क्षण मे होय विरंगा ॥४॥
एके नोके पांचे पूरण वर्षे, पौष शुक्ल तिथ त्रीज।
शतिय नगीनो जड़त वर शिक्षा भवी सुणर चित्त रीझै ॥५॥

१ ली ढाल

(देशी—माधो गूम्यो माग सवारी दर्पण ले मुख जोवंजी रे)

कुंवर कहै माउजी आज एहवा, गीत मधुर कुण गावैंजी रे।
मुझ मन मे अति वल्लभ लागै, हर्ष हिलोला आवैं रे॥
हुलास उपजावैजी रे ॥ १ ॥

माता कहै सुण नन्द आपणै, पाडोसी रे कीकोजी रे।
जायो जिण स्यू उत्सव काजै, गीत गावै मङ्गलीको रे॥
जन मन भावेजी रे ॥ २ ॥

हूं जनम्यो जद थे पिण एहवा, उत्सव किया के नाहींजी रे।
माता कहै सुण पुत्र आपणे, द्रव्य घणो घर मांही रे॥
जामण जंपैजी रे ॥ ३ ॥

थारे उत्सव नो स्यू कहिवो, किहां डूगर किहां राईजी रे।
किहां अपनो घर किहां एहनो घर, अन्तर समुद तलाई रे॥

जामण जपैंजी रे ।। ४ ।।

इम सुण महल चढ्यो इतरा में, पाडोसी रो प्यारोजी रे।
गुजर गयो सहु आक्रन्द करतां, मच्योघणो भयङ्कारो रे ।।५।।
तत्खिण पाछो उतर महल स्युं, सुत पूछण ने आवेजी रे।
ए सूं भयो आक्रन्द शब्द अति, सुणतां हि करुणा आवै रे ।।
आरत उपावैजी रे ।। ६ ।।

पाडोसीनो गुजर गयो सुत, छाती माथा कूटैजी रे।
मरण समो दु.ख नहिं कोई दूजो, सुणतां सीकम्पा छूटै रे ।।
आज उदासीजी रे ।। ७ ।।

हूं मरस्यूं के नहीं मोरा मावजी, माता कहै सहु मरसीजी रे।
जनम मरणरा दुःख वहु जबरा, नेमनाथ प्रभु हरसी रे ।।
जामण जंपैजी रे ।। ८ ।।

नेमनाथ प्रभु इण जग माहीं, जन्म मरण मिटावैजी रे।
दरशण सेवा कियां सुख पामै, आवागमण मिटावैं रे ।।
जामण जंपैजी रे ।। ९ ।।

किहां वसै ते नेमनाथजी, माय कहै रहै फिरताजी रे।
इहा आवं जद कहिज्यो मुझने, जनम मरण दुःख हरता रे ।।
पूत प्रजंपैजी रे ।। १० ।।

नेमनाथजी इहां आवै जद, दरशण सेवा कीजैजी रे।
प्रथम ढाल इम सुत संतोष्यो, तप जप कर तू तिरजै रे ।।
जामण जंपैजी रे ।। ११ ।।

विघ्नहरण की ढाल

(देशी—सोही तेरापन्थ पावै हो)

भिक्षु भारीमाल ऋषरायजी, खेतसीजी सुखकारी हो।
हेम हजारी आदिदे, सकल संत सुविचारी हो॥
प्रणमुं हर्ष अपारी हो, अभीराशिको उदारी हो।
धर्म मूर्त्त धुन धारी हो, विघ्नहरण वृद्धिकारी हो॥
सुख सम्पति सिरदारी हो, भजो मुनि गुणां रा भंडारी हो।
ए० आं० ॥

दीप गणी दीपक जिसा, जय जश करण उदारी हो।
धर्म प्रभावक महाधुनी, ज्ञान गुणां रा भंडारी हो॥
नित प्रणमें नर नारी हो॥ भजो॥ १॥

सखर सुधारस सारसी, वाणी सरस विशाली हो।
शीतल चन्द सुहामणी, निमल विमल गुण न्हाली हो॥
अभीचन्द अघ टाली हो॥ भजो॥ २॥

उष्ण शीत वर्षा ऋतु समै, वर करणी विस्तारी हो।
तप जव कर तन ताविसो, ध्यान अभिग्रह धारी हो॥
सुणतां अचरजकारी हो॥ भजो॥ ३॥

संत धनो आगै सुण्यो, ए प्रगट्यो इण आरी हो।
प्रत्यक्ष उद्योत कियो भलो, जाणै जिन जयकारी हो॥
ज्यांरी हूं वलिहारी हो॥ भजो॥ ४॥

धोरी जिन शासण धुरा, अहोनिश मे अधिकारी हो।

परम दृष्टि मैं परखियो, जबर विचारणा थांरी हो ॥
सुजश दिशा जयकारी हो, ऋष प्रगट्यो तू भारी हो ॥
॥ भजो ॥५॥

वर्द्ध सहोदर जीतनो, जशधारी जयकारी हो।
लघु सहोदर स्वरूपनो, भीम गुणा रो भंडारी हो॥
सखर सुजश संसारी हो॥ भजो ॥६॥

समरण थी सुख संपजै, जाप जप्यां जश भारी हो।
मन वांछित मनोरथ फलै, भजन करो नरनारी हो॥
बारु बुद्धि विस्तारी हो॥ भजो ॥७॥

रामसुख रलियामणो, तेसठ उदक आगारी हो।
अडसठ ने पैंतालिस भला, वले उगणीस चौविहारी हो॥
बड़ तपसी तपधारी हो॥ भजो ॥८॥

मन दृढ़ वच दृढ़ महामुनि, शील दृढ़ सुविचारी हो।
परम वनीत पिछाणियो, सरधा दृढ़ सुविचारी हो॥
समरण थी सुखकारी हो॥ भजो ॥६॥

शिव वासी लावा तणो, तप गुण रासी उदारी हो।
आसीसी निज आतमा, षट मासी लग धारी हो॥
शीत काल मझारी हो, सह्यो शीत अपारी हो।
॥ भजो ॥ १० ॥

उष्ण शिला तथा रेतनी, आतापना अधिकारी हो।
तप घर चौमासा तणो, सुणतां अचरजकारी हो॥

गुण निपन्न नाम भारी हो ॥ भजो ॥११॥

कोदर तप करड़ो कियो, पटमासी लग धारी हो।
च्यावन्दियो मुनि आरहो, पट २ अठम वदारी हो॥
जाव जीव जयकारी हो ॥ भजो ॥१२॥

शीत उष्ण बहु तप कियो, सुगुरु थकी इकतारी हो।
परम प्रीत पाली मुनि, जाम्ही कीरत थांरी हो॥
समरण सुखदातारी हो ॥ भजो ॥१३॥

विघन मिटै अरियण हटै, प्रगटे सुख भारी हो।
दल रूप द्रोह दालिद्र मिटै, नाम रटो नरनारी हो॥
एहवो भजन उदारी हो ॥ भजो ॥१४॥

कर्म निरजरा कारणें, जाप जपो नरनारी हो।
निरवद कारज निरमलो, शिव सुख नो सहचारी हो॥
सावज आणा न्यारी हो ॥ भजो ॥१५॥

भीम अमीचंद मुनि भला, कोदर शिव वृद्धकारी हो।
रामसुख रलियामणों, समण पक्ष सिरदारी हो॥
जाप परम जशधारी हो ॥ भजो ॥१६॥

शिव मङ्गल सुख सायवी, सम्पत समय सुधारी हो।
अधिक आणन्द सुजश भलो, होव ह्रप अपारी हो॥
एहवो भजन उदारी हो ॥ भजो ॥१७॥

उदधि अगनि अरि विप तणो, सकल विघ्न परिहारी हो।
सत शील प्रभावे जिन कह्यो, तिमहिज भजन तंत सारी हो॥

परम मंत्र सम धारी हो ॥ भजो ॥१८॥
तसकर त्रास न प्राभवै, चरचा में जयकारी हो।
भूत रोग आपद् हरै, अघ दल रूप परिहारी हो॥
समरण महा सुखकारी हो ॥ भजो ॥१९॥
चन्द् पन्नंती सूत्र नी, गाथा द्वितीय विचारी हो।
तिमहिज भजन ए ऋपि तणो, अधिष्टायक अधिकारी हो॥
थिर दृढ़ आस्था धारी हो ॥ भजो ॥२०॥
दव दन्ती सूरी दीपती, जयवंती जशधारी हो।
इन्द्राण्यां सूरी आदिदे, साज राखण सुखकारी हो॥
पुन्यवंती प्यारी हो ॥ भजो ॥ २१ ॥
गुण ठाणै चौथे गुणी, समण सत्यां हितकारी हो।
अ सि आ उ सा ने सदा, प्रणमैं बारम्बारी हो॥
आणी हर्ष अपारी हो ॥ भजो ॥२२॥
श्री जिन शासण शोभतो, अधिष्टायक अधिकारी हो।
अहोनिशि अवधि पर्झूंमता, वंछित पूरणहारी हो॥
सुख सम्पत्ति सहचारी हो ॥ भजो ॥२३॥
शिणगारांजी मोटी सती, हरखूजी हितकारी हो।
माता तास सुहावणो, अणसण चरण उदारी हो॥
आराध्यो हितकारी हो ॥ भजो ॥२४॥
हिम्मतवान सती हूंती, व्यावच करण विचारी हो।
बिघन हरण बच्छल कारणी, दिल सम्पत दातारी हो॥

जय जश हर्ष अपारी हो ॥ भजो ॥२५॥

जाण तिके नर जाणता, अवर न जाणै लिगारी हो।
धर्म उद्योत करण धुरा, निरवद्द कार्य सारी हो॥
आणा तास मझारी हो ॥ भजो ॥२६॥

परम प्रीत सतगुरु थकी, बिरुद वहै इकतारी हो।
पूरण आसता राहरी, म्हांरा मन मझारी हो॥
जवर दिशा जयकारी हो ॥ भजो ॥२७॥

अधिक विनय गुण आगलो, थिर दृढ़ आसता धारी हो।
तसु मिटवा जोग उपद्रव मिटै, ते अघ दल रूप परिहारी हो॥
निश्चय री वात न्यारी हो, न टलै होणहारी हो।
भजो ॥ २८ ॥

उगणीसै तेरह समैं, वसत पंचमी सोमवारो हो।
पंच ऋषिनो परवरो, प्रसिद्ध शहर शिरियारी हो॥
गणपति जय जश कारी हो ॥ भजो ॥२९॥

विघ्न हरण री थापना, भिक्षु नगर मझारी हो।
महा सुदि चवदश पुष दिनैं, कीधी हरष आपरी हो॥
तास सीख वच धारी हो, तीर्थ च्यार मझारी हो।
ठाणा इक्काणू तिवारी हो ॥ भजो ॥३०॥

* *

*

संसारस्वरूप

(श्रावक शोभजी कृत)

(देशी—ऊधो भाई कर्मन की गति न्यारी)

चेतानन्द प्रभु ने भजो घर प्यारी।
तू तो चिन्ता लहर निवारी, म्हारा मन सतगुरु संगत धारी।
ए आंकड़ी॥

मात पिता ने कुटुम्ब कबीलो, और प्रतिव्रता नारी।
स्वार्थ जब सहु सार करत है स्वा० २ बिन स्वार्थ दे टारी॥
॥ १॥

बंधव भगिनी पुत्र पुत्रियां, मतलब केरी यारी।
ते वच प्रभु का ते वच० मैं देख्या इणवारी॥
॥ २॥

साचा देव गुरु अरु समकित, भूठो सब संसारी।
शोभ मघवा को शरण लियो है, मैं तो गणी को शरण
लियो है, ओ भेल्यो अति भारी॥ चे० ॥३॥

कुण २ हवाल पड्या हरिचन्द में, वेच्या सुत अरु नारी।
आप डूम घर दुकृत कीधा आप० २, तारामति पणियारी॥
चे० ॥ ४॥

सोलह सहस्र देशां रो साहिब, वसुदेव नन्द मुरारी।
त्रिण वारी मुओ वन मांही त्रिण० २, न्यातिला नहीं
आया ठारी॥ चे० ॥ ५॥

सती सीता ने ले गयो रावण, राम भया वनचारी।
राजा महाराजां ने कर्मा कुदाया, राजा० २, तो थांरी तो
किसी चिकारी ॥ चे० ॥ ६ ॥
पंडव पांचूं चरम-शरीरी, राज्य रमण ऋद्ध हारी।
बारह वर्ष बन मे दुःख देख्या, तो गिणती किसी रे थारी ॥
चे० ॥ ७ ॥
धिक २ झूठो रे जगत् कहिजं, करामात नहीं काई।
भोला रे भमरा भूले क्युं भाई भोला रे० ॥
तैं देखी संसार सिधाई ॥ चे० ॥ ८ ॥
देख देख जग केरी जाला, भय भ्रांत भमरो भारी।
फस्योरे फाश हूं किस विध निकसू फस्यो० २ धन्य दिन
छूटसी लारी ॥ चे० ॥ ६ ॥
अथिर लाछ जवानी जोतव, झूठी सब मगरूरी।
मान अहङ्कार करै ते भूला, मान० २ ओ चमत्कार दिन
च्यारी ॥ चे० ॥१०॥
वेद आतम सन फाग शुक्ल पक्ष, सांवरी गंज मझारी।
भिक्षु आदि पंडु पाट नमूं सहु, आणन्द होसो अपारी ॥
चे० ॥११॥

* *

*

क्षमा-धर्म

(देशी—वैरागे मन वालियो)

खिम्यां धर्म पहिलो खरो, इम भाख्यो जगदीशीशरे।
जो सुख चाहवो जीवनो, मत करज्यो कोई रीसोरे॥
खिम्यां कियां सुख पामिये॥ ए आंकड़ी॥ १॥
कलह करे आछी नहीं, लड़ता लिछमी न्हासैरे।
दुःख दारिद्र घर मे धसै, गुणरा पुंज विणासैरे॥ २॥
कोई वचन करड़ो कहै, अथवा आघो ने पाछोरे।
खिम्यां कियां तिण जीवरै, आगेही फल छै आछोरे॥ ३॥
कूंजड़ ज्यूं लड़वो करै, नीच घरां रा वागारे।
ते किस्या मिनर्पा मे मिनप छैं, त्यांने पहखां
ही कहीजै नागारे॥ ४॥
रीस कटारी ले मरे, फांसी लेवै छुरी खावैरे।
केई कुवा वावड़ी पड़ै, केई प्रदेशां उठ जावैरे॥ ५॥
वाप वेटो सासु वहू, गुरु - चेलो ने गुरु - भाई रे।
क्रोध तणे वश वछलै, न गिणै नेड़ी सगाई रे॥ ६॥
गुरु माईत गिणे नहीं, अवनीत अवगुणगारोरे।
छांदे चालै आपणे, विरच्यां करै विगाड़ोरे॥ ७॥
गुरु काढ़ै गच्छ वाहिरे, वाप काढ़ै घर वारैरे।
लोकांमें फिट फिट हुवै, यूंही नर भव हारैरे॥ ८॥

पण्डित हो क्रोधे चढ़ै, कहिये म्राल अज्ञानीरे।
नीच चण्डालनी उपमा, दीधी छै केवल ज्ञानीरे॥ ६॥
घर मे एक क्रोधी हुवै, सगलां ने तलतलावेरे।
जिण घर मे क्रोधी घणा, तिणरो दुःख किम जावैंरे॥१०॥
तप जप क्रोड पूरव तणो, क्रोधी खिण मे खोवैंरे।
खिम्यां कियां जश गुण वधै, ते पंथ विरला जोवैंरे॥११॥
बूढो ही विड़तो रहै, लखण छोरांरा थावें रे।
बालक ही खिम्या कियां, वडो माणस कुहावैंरे॥१२॥
तप जप सर्व ज़ुध सोहिलो, पिण स्वभाव मारणो दोरोरे।
परनें परचावै घणा, पिण आपो खोजै ते थोड़ारे॥१३॥
गाल वरतीजं राड़ मे, पिण लाडू नांय वंटीजैंरे।
वाहला पिण वैरी हुवै, इसड़ो काम न कीजैंरे॥१४॥

जीव दया

हाथ जोडी विनति करूं,
विनय करी शीश नमाय हो साहेब।
एकेन्द्री हणतां थकां, वेदना केतली थाय हो साहेब॥
अर्ज करू थी स्युं विनति॥
हाथ पांव नहीं नासिका, जिह्वा नहीं पण ताय हो साहेब।
मन वचन विना वेदना, भोगवै किन न्याय हो साहेब॥
अर्ज करूँ थां स्युं विनति॥ २॥
वलता जिनेश्वर इम कहै, सुण तू चित्त लगाय हो गौतम।

दृष्टान्त देई तुझने कहूँ, हिवै सुण तेहनो न्याय हो गौतम ॥
चित्त लगाई सांभलो ॥ ए आंकड़ी ॥ ३ ॥
कोइ आंधो पुरुष होवै जन्मनो, बहिरो जन्म रो जाणहो गौ० ।
गुंगो ने बलि पांगुलो, रोग घेर्‌यो छै आण हो गौ० ॥ ४ ॥
अंधा पुरुष ने भाले करी, छेदै जायगां बत्तीस हो गौतम ।
खड़गे करी बत्तीस जायगां, छेदै कर कर रीस हो गौ० ॥५॥
आंधा पुरुषनें वेदना हुवै, छेद्यां भेद्यां तिणवार हो गौतम ।
एहवी वेदना पृथ्वी कायने, लीधां हाथ मझार हो गौ० ॥६॥
रांक गरीबज बापड़ा, एहवा जीव अनाथ हो गौतम ।
पुकार करै किण आगले, ज्यांरी करै हर कोई घात हो ॥
गौतम ॥ ७ ॥

जयणा

(देशी—एक दिवस लंकापति, क्रीड़ानी उपनी रति)

चवदे स्थानकरा जीव ए, त्यांमें दुःख कह्या अतीव ए ।
तिणरो ए तिणरो विवरो हिवे, सांभलो ए ॥ १ ॥
बड़ी नीत उच्चार ए, पासवण एम विचार ए ।
बे घड़ी ए बे घड़ी पछै जीव उपजै ए ॥ २ ॥
आलस भय करी रात रो, भेलो करी राखै मातरो ।
इणबात रो निर्णय हिवै तुम सांभलो ए ॥ ३ ॥
खस खस दाणे एवड़ा, जम्बू द्वीपे जेवड़ा ।
एवड़ा, असन्नीया मुआ घंणा ए ॥ ४ ॥

स्त्री पुरुष संयोग मे, मृतक जीव विजोग में।
इण जोग मे, नयर अशुचि नाला भर्या ए॥ ५॥
इम हिज खेल में जाणज्यो, नाकरो मेल पिछाणज्यो॰
वमणज, ए वमणज पित दोन्यूं कह्या ए॥ ६॥
इमहिज लोही राध में शुक्र तणी मर्याद में।
सूको ए, सूको पुद्गल नीलो हुवै ए॥ ७॥
सवं अशुचि ठाम ए, चवदे स्थानक रा नाम ए।
जतनज ए जंतन कोई विरला करै ए॥ ८॥
ज्ञानी पुरुषां देख्या ए, ज्यां आप सरीखा लेख्या ए।
जाणज ए जाण पुरुष जयणा करै ए॥ ९॥
नाह्ना घणा अथाग ए, आंगुल रे असंख्यातवें भाग ए।
गिराजज ए, गिराज आवे ज्ञानी तणे ए॥ १०॥

श्रीमहावीर जिन स्तवन

(देशी—कपिरे प्रिया सन्देशो कहे)

चरम जिनेन्द्र चौवीसमा जिन अघ हणवा महावीर।
विकट तप वर ध्यान कर प्रभु, पाया भव जल तीर॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर, उपसर्ग सहिवा अडिग जिनवर।
सुर गिर जेम सधीर॥ नहीं॥ १॥

संगम दुःख दिया आकरा रे।
पिण सुप्रसन्न निजर दयाल
जग उद्धार हुवै मो थकीरे॥

ए हूवै इण काल ॥ नहीं ॥ २ ॥

लोक अनार्य वहु किया रे, उपसर्ग विविध प्रकार।
ध्यान सुधारस लीनता जिन, मन में हर्ष अपार ॥
नहीं ॥ ३ ॥

इण पर कर्म खपाय ने प्रभु, पाया केवल नाण।
उपशम रसमय वागरी प्रभु, अधिक अनुपम वाण ॥
नहीं ॥ ४ ॥

पुद्गल सुख अरि शिव तणारे, नरक तणा दातार।
छांड़ि रमणी किम्पाक वेलि, संवेग संयम धार ॥
नहीं ॥ ५ ॥

निन्दा स्तुति सम पणरे, मान अने अपमान।
हर्ष शोक मोह परिहर्यां रे, पामें पद निर्वाण ॥
नहीं ॥ ६ ॥

इम वहुजन प्रभु तारिया रे, प्रणमुं चरम जिनेन्द।
उगणीसै आसोज चौथ वदि, हुओ अधिक आनन्द ॥
नहीं ॥ ७ ॥

विमल विवेक

(पना थारे देशमें उदियापुर वाकोरे ॥ एदेशी ॥)

विमल विवेक विचारने रे, आतम वश कर आप।
मन संकोचै मांहलोरे, तो मिटै कर्मनी ताप।
सखर गुण सागरु, वर संवेग धरियेरे ॥ १ ॥
सुगुण सुज्ञानी मानधीरे, पंडित जे वुद्धिवान।
इन्द्रियां दमै आतम वश करैरे, विवेक दीप घट आण।
सुगुणा साधजी घर सुमता वसावो रे।
कर करणी कर्म काटने, अमरापुर जावोरे ॥ २ ॥
पूरव कर्म बांध्या तिकेरे, उदे आवै किण वेर।
सम परिणामा भोगवीरे, लीजै चितने घेर ॥ सु० ॥ ३ ॥
ए देही मुझ काचसीरे, जिम पिंपल नो पान।
डाभ अणी जल बिन्दुधोरे, जिम कुंजर नो कान ॥सु०॥४॥
ऊपर दीसै ओपतीरे, सुन्दर तन शिणगार।
अंतर अशुच थकी भरीरे, मूरख मत कर प्यार ॥सु०॥५॥
रोगादि तन आवियांरे, समभावे सहे शूर।
जिनकल्पी गजसुकमाल नेरे, कीजै याद जरूर ॥सु०॥६॥
सालभद्र धन्नो मुनिरे, चक्री सनत कुमार।
चौवीसमा जिन आददेरे, कहितां किम लेऊँ पार ॥सु०॥७॥
वां कष्ट सह्या उजल मनेरे, तो म्हांरी सी घात।
ए राग द्वेप वश मानवीरे, पापे पिंड भरात ॥ सु० ॥८॥

दश लाख योद्धा जीतनेरे, शूर कहावै जेह।
एक आतम जीतै आपरीरे, ए अधिको गुण गेह ॥सु०॥६॥
काम कटुक किम्पाकसारे, शिव सुखना अरि जेह।
हेतु नरक निगोदनारे, मतकर तिणस्युं नेह ॥ सु० ॥१०॥
भोग भयंकर जिन कह्यारे, जेहवा जाण फणन्द।
विघ्न क्लेश ना दायकारे, तजिये तेह मुणिन्द ॥सु०॥११॥
तीव्र मोह उदै आवियारे, वश करवाना उपाय।
उभय कह्या जिनरायजी रे, अहो निशियाद अणाय ।सु०१२
उपवास वेलादि तप करैरे, भूख तृषा सी ताप।
तन श्रृङ्गार निवारतां रे, कष्ट करै वहु आप ॥ सु० ॥१३॥
वाह्य एह उपाय छै रे, भीतर मन संकोच।
क्रोध चौकड़ी नें दमैरे, टालै आतम दोष ॥ सु० ॥१४॥
भावै वहुविध भावनारे, ध्यान धरै दिन रैन।
मद आठूंई मारने रे, खपावै कर्म श्रेण ॥ सु० ॥ १५ ॥
विविध वैराग्यनी वारता रे, हिये बसावै एम।
धिक्कार मन चंचल भणो रे, आतम वश करूं केम ॥सु०१६
तीव्र मोहणी कर्मनीरे, मोटी है मतवाल।
दुर्गत जातां जीवरै रे, वधै वहु जंजाल ॥ सु० ॥ १७ ॥
सूक्ष्म बुद्ध सुं पेखियेरे, शब्द रूप रस गंध फाश।
ए सवे बंधक पांच छै रे, मत करो तेहनी आश ॥ सु०१८।
मनोगम पांचू देखनेरे, दिल आणै वहु राग।

द्वेष धरै भूडा मफैरे, तो लागै कर्म नो दाग ॥ सु० ॥१९॥
आपो परवश जेहवा रे, कदेय न करणो काम ।
मन समझावै मांहिलोरे, ते चतुराई ताम ॥ सु० ॥ २० ॥
मन नी लहर मिटायवा रे, एहिज करै अभ्यास ।
विमल विवेक विचारनेरे, तुर्त तूटै मोह पाश ॥ सु० ॥२१॥
सोवत बैठत उठतारे, सम परिणामा रहंत ।
मानसीक दु.ख मेटियारे, ते मोटा मतिवंत ॥सु०॥२२॥
ए पुद्‌गल सुख छै कारमारे, तेहने जाण असार ।
सुगंध दुगंध जिन कह्यारे, दुगंध सुगंध धार ॥ सु० ॥२३॥
चिन्ता रूंख प्रमाद छै रे, ते कापण ने कुहाड़ ।
ध्यान सज्झाय सिद्धान्त थीरे, मूलथी न्हाखै उपाड़ ॥सु०२४॥
को करै प्रशंसा तांहरी रे, मत आणी मन रीझ ।
निन्दा शव्द सुणो करीरे, तिण ऊपर मत खीज ॥सु०२५॥
औगुण देखी पारका रे, क्रोध करी मत खीज ।
अवर तणा सुख देखनेरे, डीलां तूं मत छीज ॥सु० ॥२६॥
स्वर्ग तणा सुख कारमारे, पाम्यो वहुली वार ।
रुलियो नर्क तिर्यंचमेरे, सही घणेरी मार ॥ सु० ॥२७॥
लघुता पद वहु पावियोरे, पायो पद नरेश ।
एहवो तत्त्व विचारनेरे, सू अहंकार करेस ॥ सु० ॥ २८ ॥
जनम मरणरी वेदनारे, गर्भ वेदन असमान ।
अशुच भखी दिन काढ़ियारे, कांय करै तोफान ॥सु० २९॥

ए मारग पायो जिन तणोरे, श्रद्धा आई हाथ ।
सफल जमारो छै सहीरे, ए पाया गणीनाथ ॥सु० ॥३०॥
ए मारग साचो अछैरे, श्रेष्ठ अने परधान ।
उत्तम दायक मोक्षनोरे, कलंक रहित अमाम ॥ सु० ॥३१॥
निशल्य अने निरलोभतारे, कर्म खपावण हार ।
मारग जावा मोक्षनोरे, एहिज छै आधार ॥ सु० ॥ ३२ ॥
संदेह रहित निश्चल अछै रे, सर्व दुःख भांजण भूर ।
ए मारग स्थित मानवीरे, सिम्भस्ये अरि ने चूर ॥सु०॥३३॥
लोकालोक विलोकस्येरे, कलह दावानल छोड़ ।
अन्त करस्ये सर्व दुःख तणोरे, ए मारग सिर मोड़ ॥सु०॥३४॥
एहवो शासण पावियोरे, ए पाया गणिराज ।
भव सागरमें डूबतारे, मिलिया तारण ज्याभ्क ॥सु०॥३५॥
शरणे आया जे मानवीरे, लहस्ये सुख अपार ।
हिवड़ां पंचम कालमें रे, आप तणो आधार ॥ सु० ॥३६॥
जिन नहिं जिन सारषारे, जाहिर तेज दिणन्द ।
शरणे आया आपरैरे, ए मुझ हुओ आनन्द ॥ सु० ॥३७॥
भिक्षु भारीमाल ऋषरायजीरे, जयगणी चौथे पाट ।
तास प्रसादे छै मुझेरे, नित्य नवला गह घाट ॥ सु० ॥३८॥
उगणीसै बाइसमेंरे, श्रावण सुद दूज कहीस ।
सरूप शशी प्रसादथी रे, लाडणू विश्वावीस ॥ सु० ॥३९॥

———

अविश्वसनीय काल

(रचयिता—श्री रतन ऋषिजी)

(देशी—नित करुं साधुजी नें वंदना)

इण काल रो भरोसो भाई रे को नहीं,
ओ किण विरियां मांहे आवै ए।
बाल जवान गिणै नहीं, ओ सर्व भणी गटकावै ए॥
इण० ॥ १ ॥

बाप दादो बैठो रहै, पोतो उठ चल आवै ए।
तो पिण धेठा जीव ने, धरम री बात न सुहावै ए॥
इण० ॥ २ ॥

महल मन्दिर ने मालिया, नदी ए निवाण ने नालो ए।
स्वर्ग ने मर्त्य पाताल में, कठिय न छोडै कालो ए॥
इण० ॥ ३ ॥

घर नायक जाणी करी, रक्षा करी मन गमती ए।
काल अचानक ले चल्यो, चौक्यां रह गई फिरती ए॥
इण० ॥ ४ ॥

रोग-उपचारण कारणै, वैद्य विचक्षण आवै ए।
रोगी ने ताजो करै, आपरी खबर न पावै ए॥
इण० ॥ ५ ॥

सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महल रसालो ए।

पोढ्या ढोलिये प्रेम सू, जठै आण पहुंतो कालो ए ॥
इण० ॥ ६ ॥

राज करै रलियामणो, इन्द्र अनोपम दीसै ए।
वैरी पकड़ पछाड़ियो, टांग पकड़ं ने घींसै ए ॥
इण० ॥ ७ ॥

वल्लभ बालक देख ने, मांडी मोटी आशो ए।
छिनक माहें चलतो रह्यो, होय गई निराशो ए ॥
इण० ॥ ८ ॥

नार निरख ने परणियो, अपछर ने उणिहारै ए।
सूल ऊठ चलतो रह्यो, आ ऊभी हेला मारै ए ॥
इण० ॥ ६ ॥

चैजारे चित्त चूप सू, करी इमारत मोटी ए।
पावड़िये चढ़तो पड्यो, खाय न सकियो रोटी ए ॥
इण० ॥ १० ॥

सुरनर इन्दर किन्नरा, कोई न रहे निशंको ए।
मुनिवर कालने जीतिया, जिण दिया मुक्त माहें डंकोए ॥
इण० ॥ ११ ॥

किशनगढ़ माहें सिड़सठै, आया शेपे कालो ए।
रतन कहै भव जीव ने, कीज्यो धर्म रसालो ए ॥
इण० ॥ १२ ॥

बारह भावना

(देशी—नमिनाथ अनाथा रो नाथो रे)

आदिनाथ अरिहन्त अख्यातो रे,
बड़ो पुत्र भरत विख्यातो रे।
अनित्य भावना भाई साख्यातो,
महा मुनि मोटका नित्य वन्दो रे ॥१॥
गढ मढ़ मन्दिर पोल प्रकारो रे,
नर इन्द्र सुरेन्द्र सारो रे।
नित्य नहीं सहु नर-नारो ॥ महा० ॥ २ ॥
अशरण भावना ऋषि अनाथी रे,
एक जिन धर्म जीव रो साथी रे।
संयम पाली मुगत संघाती ॥ महा० ॥३॥
संसार भावना शालिभद्र भाई रे,
अधिक वैराग मन आई रे।
संयम लेइ सर्वार्थ सिद्ध पाई ॥ महा० ॥४॥
नमिराय ऋषेश्वर जाणी रे,
एकत्व भावना उर आणी रे।
मुनि जाय पहुंता निरवाणो ॥ महा० ॥५॥
पंखीनी पर भावना भल भाई रे,
कुंवर मृघापुत्र उर आई रे।
संयम लियो परिवार समझाई ॥ महा० ॥६॥

चौथो चक्री सनत कुमारो रे,

अशुच भावना भाई अपारो रे।

राज छोड़ि संयम व्रत धारो ॥ महा० ॥७॥

समुद्र पाल एलाची दोई रे,

आस्रव भावना जोई रे।

दोनू मुगत गया कर्म खोई ॥ महा० ॥८॥

वागणी केशी हर केशी रे,

संवर भावना उर वैसी रे।

हर केशी मुगत वरेसी ॥ महा० ॥९॥

निर्मल निर्जरा भावना भाई रे,

छव मासे कर्म खपाई रे।

अरजन माली अनन्त सुख पाई ॥ महा० ॥१०॥

लोक सार भावना लीव लागी रे,

शिवराज ऋषेश्वर जागी रे।

प्रभुपे संयम लेई वैरागी ॥ महा० ॥११॥

अठाणवै पुत्र आया रे,

आदेश्वरजी समभाया रे।

बोध दुर्लभ भावना भाया ॥ महा० ॥१२॥

धर्मरुची ऋषिरायो रे,

धर्म भावना ते भायो रे।

दया पाली सर्वार्थ सिद्ध पायो ॥ महा० ॥१३॥

ए वारह भावना जे भावें रे,

ते नर महा सुख पावे रे।

वेगो मुगत नगरमें जावें ॥ महा० ॥१४॥

समत त्रेणवें वरस अठारो रे,

काती वद नवमी भोमवारो रे।

जोड़ कीधी मालवा गांव मझारो ॥ महा० ॥१५॥

काल-कराल

(रचयिता – श्री तिलोक ऋषि)

(देशी—लावणी की)

छिन छिन माही छीजें आउखो, ज्यूं अंजलि जल जाण।
ओस वून्द पाणी परपोटो, वार न लागे हाण रे॥
करल्यो हुंशियारी, धर्म तैयारी डरज्यो काल सू॥ १॥

जोवन जातां जेज न लागें, ज्यूं नदी को पूर।
नदी किनारें तरुवर जैसे, कोई दिन जाय जरूर हो॥
क० ॥ २॥

वाल तरुण वृद्ध सुखी दु:खी और राय रंक नरनार।
हरिहर इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर, छोड़े न काल करार हो॥
क० ॥ ३॥

वैधरत व्यतिपात जोगिणी, कालवास दिशाशूल।
काल न देखें वक्त वारने, छिन में करेंगे धूल हो॥
क० ॥ ४॥

सूता जागता खातां पीता, करतां वात विचार।
नहीं भरोसो काल दूतको, जबर्दस्त संसार हो।
क० ॥ ५ ॥

झाड पहाड उजाड गाम में, नदी खाल निवाण।
खबर नहीं किण ठाम के ऊपर, काल लेजावै ताण हो ॥
क० ॥ ६ ॥

जल अग्नि और जहर भुजंगम, सिंह रींछ पशु व्याल।
खबर नहीं रोग शोक उपातव की, आसी किण जोगे काल हो
क० ॥ ७ ॥

जाया सो तो जरूर जावेगा, फूल्या सो कुमलाय।
वंध्या सो विखरें इण जग मे, वहम नहीं इण माय हो ॥
क० ॥ ८ ॥

जो क्षण जावै सो नहीं आवे, करतां कोड़ि उपाय।
आउखो अमोलक पाय के चेतन, खोवें मत फोकट मांय हो ॥
क० ॥ ६ ॥

ज्ञान ध्यान तप जप को उद्यम, करज्यो सुगुणा लोक।
परभव खरची साधी जीव ने, लीज्यो नाणो रोक हो ॥
क० ॥ १० ॥

ए संसार असार बावले, ममता मोह निवार।
काळ को डर ज्यो मेटणो, तुझने, करले खेवो पार हो ॥
क० ॥ ११ ॥

उगणीसै अड़तीसैं जेठ कृष्ण पख, तीज तिथी शशिवार।
देवटाकली मे तिलोक ऋष कहे, धर्म सू जय जय कार हो।
करलयो हुशियारो, धर्म तरयारो डरज्यो काल सू॥ १२॥

पश्चात्ताप

मनवा नांच विचारी रे, म्हारा लोभी नांय विचारी रे।
थारी म्हारी करतां उमर, खो दी सारी रे॥ ए आकड़ी॥
गर्भावास मे रक्षा किन्ही, सदा विहारी रे।
वाहर काढ़ो नाथ करस्यूं, भक्ति थारी रे* ॥
(२)
वालपणो हंस खेल गमायो, विचासुं न किन्ही थारी रे।
भर यौवन मे आय लागी, त्रिया प्यारी रे॥
(३)
वृद्ध भयो तब कहने लागी, घर की नारी रे।
कद मरसी थो डेण छूटे, लार हमारी रे॥
(४)
कौड़ी कौड़ी खातिर लेतो, राड़ उधारी रे।
कोई कह्यो हरि भजन करो, तब काढ़ी गारी रे॥
(५)
रुक गये कण्ठ दशों दरवाजा, मण्ड गई ध्यारी रे।
चौरासी भुगतेगो वंदा, करणी थारी रे॥

---

* कोई इसको इस प्रकार भी गाते हैं:—
गर्भावास में रक्षा किन्ही, माता थारी रे।
वाहर निकस्यां नाथ करस्यूं, भक्ति थारी रे॥

संसार असार

(रचयिता—कवि महम्मद)

(देशी—हिव राणी पद्मावती०)

भुलो मन भमरा कांई भम्यो, भमियो दिवस ने रात।
मायारो लोभी प्राणियो, मरने दुरगति जात ॥ भु० ॥ १ ॥
केहना छोरुरे केहना वाछरू, केहना माय ने बाप।
ओ प्राणी जासी एकलो, साथे पुण्य ने पाप ॥ भु० ॥ २ ॥
आशा तो डूगर जेवडी, मरणो पगल्यां रे हेट।
धन संची रे संची काई करो, करो जिनजीरी भेट* ॥भु०॥३॥
उलट नदी मारग चालवो, जायवो पेलै रे पार।
आगल नहीं हट बाणियो, संबल लीजैरे लार ॥ भु० ॥ ४ ॥
मूरख कहै धन मांहरो, ते धन खरचै न खाय।
वस्त्र बिना जाय पोढ़ियो, लखपति लकड़ां रे मांय ॥भु०॥५॥
धन्धो करी धन जोड़ियो, लाखां ऊपर कोड़।
मरण री वेलां मानवी, लेसी कंदोरो तोड़ ॥ भु० ॥ ६ ॥
लखपति छत्रपति सहु गये, गये लाख वे लाख।
गरव करि गोखै बेसता, जल बल होय गई राख ॥ भु० ॥७॥
म्हांरो रे म्हांरो कर रह्यो, थांरो नहीं रे लिगार।
कुण थांरो तू केहनो, जोवो हिवड़ै विचार ॥ भु० ॥ ८ ॥
महम्मद कहै समझो सहु, सम्बल लेजो रे साथ।
आपणो लाभ उबारियै, लेखो साहिब हाथ ॥ भु० ॥ ९ ॥

---

* कोई इसको इस प्रकार भी गाते हैं:—
'करो जिनजी री भेंट' के बदले 'देओ तृष्णा मेट'।

श्री भिक्षु स्वामीजी का अनशन

(देशी०—केशरिया कवरजी के गीत की)

सम्वत् अठारै साठै समय स्वामीजी,
भाद्रवा शुक्ल पक्ष सार हो महाराजां फुलवारी लगी।
तेरस अणसण सीझियो स्वामीजी,
सिद्ध जोग मङ्गलवार हो महाराजां गुलक्यारी लगी।
गुलक्यारी लगी हो भिक्षु आपरै संथारै छिव भारी लगी।
छिव भारी लगी हो भिक्षु आपरै अणसण री छिव भारी लगी ॥ १ ॥

साह्मा जावो सन्त आवै अछै स्वा०, साधवियां आवंत हो महाराजां गुलक्यारी लगी।
सरस वचन इम उचस्या स्वा०, मिलिया तंतो तंत हो महा० ॥ २ ॥

च्यार तीरथ भेला हुआ स्वा०, स्वाम तणै संथार हो महा०।
सात पोहर नो आवियो स्वा०, अणसण जय जयकार हो महा० ॥ ३ ॥

आप उजागर ओपता स्वा०, आप तणो आधार हो महा०।
पूरण आपरी आसता स्वा०, समरण सम्पति सार हो महा० ॥ ४ ॥

उपगारी गुण आगला स्वा०, याद करूं दिन रैन हो महा०।

हर्ष अधिक हियै हुलसै स्वा०, चित्त में पामूं चैन हो
महा० ॥ ५ ॥

भारीमल पट शोभता स्वा०, तीजै पट ऋषिराय हो महा०।
जय जश सम्पति साहिबी स्वा०, आप तणै सुपसाय हो
महा० ॥ ६ ॥

उगणीसै अठारै समै स्वा०, भिक्षु अणसण दिन आज हो
महा०।
मोछब मनोहर लाडणू स्वा०, पूज भवो दधि पाज हो
महा० ॥ ७ ॥

श्रावकजी ! अब सैंठा रहीज्यो

(रचयिता श्री १०८ श्री सोहनलालजी स्वामी)

श्रावकजी ! अब सैंठा रहीज्यो, कोई लियो भार पहुंचाय
पार थे जग में जश लीज्यो ॥ श्रावकजी ! अब० ॥
ए आंकड़ी

नीठ नीठ मानव भव पायो, पांचूं इन्द्र्यां तंत।
आर्य क्षेत्र मिल्यो कुल उत्तम, गुरु तुलसी गुणवंत ॥ १ ॥
घणां वर्ष श्रावक व्रत पाल्या, करी गुरांरी सेव।
छेहड़ें जबर विचारी, पचख्यो संथारो स्वयमेव ॥ २ ॥
भूख तृषावश तन कुम्हलावे, जावे रसना सूक।
अधिक कष्ट मरणांत देखकर, थे मत जाज्यो चूक ॥ ३ ॥

वीर चढ़ै संग्राम मेस रे, वेस्या साम्हो जाय।
रग रग नाचै तन मन राचै, पग पाछा नहीं थाय ॥ ४ ॥
तिमहिज कर्म रिपु संग माड्यो, थे भारी संग्राम।
अल्प समय मे जीत फतह, अब राखो दृढ़ परिणाम ॥५॥
देव गुरु की खरो आस्था, थे राखीज्यो मन मांय।
लख चोरासी जीवायोनि, लीज्यो सर्व खमाय ॥ ६ ॥
सुखे सुखे भव करतां, थे तो करस्यो मुक्ति नजीक।
संथारे में श्रावकजी ने, आ सोहन की सीख ॥७॥

संथारा महात्म्य

(रचयिता—श्री १०८ श्री गणेशमलजी स्वामी)

मुश्किल मन को वश मे करना, करना चौविहार संथार।
चौविहार संथार चलना है खांड़े की धार ॥ मुश्किल० ॥
ए आंकड़ी० ॥

भूखे मानव के जब आगे, है भोजन तैय्यार।
फिर उसको अपनी इच्छा से, खाना नहीं लिगार ॥ १ ॥
वीर वृत्ति का नमूना, देखो आंख उघार।
आजीवन अन्न पान छोडन, है महा दुष्कर कार ॥ २ ॥
भोग छोड़ते है सबही को, जानत सब संसार।
पर भोगों को कौन छोड़ता, दिल मे दृढ़ता धार ॥ ३ ॥

राग द्वेष वश नर दुनिया में, सहते कष्ट अपार।
पर दुश्कर है धर्म बुद्धि से, रहना समता धार॥ ४॥
रोते रोते सबही छोड़ते, देह गेह परिवार।
हँसते हँसते छोड़े उसका, धन्य धन्य अवतार॥ ५॥
राग द्वेष वश जीना मरना, है आत्म घात विचार।
विना राग द्वेष के मरना, है वह आत्म उद्धार॥ ६॥
निरालम्ब यह मार्ग लम्बा, कष्ट अनेक प्रकार।
'गणेश' तुलसी गुरु शरणे से, होता है यह पर॥ ७॥

अभिलाषा

(१)

भगवन्! समय हो ऐसा, जब प्रान तन से निकले।
शुद्धात्मा हो मेरी, और मोह मन से निकले॥

(२)

मुनिराज मेरे सन्मुख, उपदेश कर रहे हों।
उपदेश सुन कषायें, मेरे वदन से निकले॥

(३)

सातों व्यसन को तज कर, मैं क्रोध मान छोडूं।
माया व लोभ मेरे, अन्तः करण से निकले॥

(४)

तेरि शांति छवि निहारू', अपने हृदय के भीतर।
'तुभ्यम् नमामि गणिवर', आधीश ध्रुनि से निकले॥

(५)

एकाग्र चित्त से मैं, करता हूं ध्यान तेरा।
'नवकार' पढते पढ़ते, यह प्राण तन से निकले॥

शासन महिमा

(रचयिता—पन्नालाल भन्साली)

इसमे जीवन का सार भरा।
मुक्ति का अनुपम प्यार भरा।
इसके सत् सिद्धान्तों पर चल,
भवसागर संसार तरा॥ १॥
जिन ऋषभ आदि महावीर हुये,
गोतम गणधर गम्भीर हुये।
मुनि खन्धक गजसुखमाल सरीखे,
एक एक से धीर हुये॥ २॥
इसके गुण गौरव गरिमाका,
मुख उज्वल चन्दनवाल किया।
चम्पा पट खोल सुभद्राने,
शासन का उन्नत भाल किया॥ ३॥

कई वर्षोंतक यही रंग रहा,
दुनिया में अद्भुत चंग रहा।
लखि जैन श्रमण की मर्यादा,
कइयों का दिल भी दंग रहा ॥ ४ ॥

पुनि जिन शासन कमजोर हुआ,
मुनि संघ जिनाज्ञा चोर हुआ।
भये भिक्षु भिक्षु प्रभाकर से,
दुनिया में फिर से भोर हुआ ॥ ५ ॥

कई भिक्षु ने दृष्टान्त दिये,
सत्पथ प्रभु का शोध लिया।
जीवादिक ज्ञान बताकर के,
सब व्रत अव्रत का वोध दिया ॥ ६ ॥

दुनिया में किसी की चाह नहीं,
यह प्राण जाय परवाह नहीं।
कोई घातक हमला करने पर,
सही चोट, कभी नहीं आह कही ॥७॥

कई भूतवास गृह देते थे,
घी सहित खीच ले लेते थे।
छाती में मुक्का भी मारा तो,
हँस-हँस वे सह लेते थे ॥ ८ ॥

कहते थे बाल अज्ञानी हैं,
भगवत् महिमा नहीं जानी है।
क्यों नहीं दया करे इस पर
बालक ने दाढ़ी तानी है ॥ ६ ॥

हरियाली को खाने वाले,
नहीं त्याग भाव लाने वाले।
कहते थे बनी है खाने को,
क्या वंचित् रहें ? क्यों व्रत पालें ? ॥ ०॥

गणिराजा कहते दया करो,
है क्षुद्र विचारे दया करो।
जब सिंह आता है खाने को,
क्यों भगते हो क्यों मया करो ॥ १॥

था सत्य नियम से प्रेम बड़ा,
करते आवश्यक खड़ा-खड़ा।
भयभीत कभी नहीं होते थे,
सह लेते परिषह कड़ा-कड़ा ॥१२॥

आडम्बर का था नाम नहीं,
दुनियादारी से काम नहीं।
थे ग्रन्थ हजारों बना दिये,
पलभर का था विश्राम नहीं ॥१३॥

भिक्षु पट्ट भारीमाल हुये,
ऋषिराय जयादि विशाल हुये।
मघवा माणिक्य डाल गणी,
गुरु कालु छोगां लाल हुये।।१४।।

वरजू, हीरां व दीप सती,
सरदार, गुलाबा, नौल सती।
जेठां, कानां, झमकू श्रमणी,
सब हुईं एक से है बढ़ती।।१५।।

मरुधर गुर्जर मेवाड़ तरा,
हरियाणा, थली, पंजाब तरा।
सन्तोंके पावन चरणों से,
लो कच्छ, काठियावाड़ तरा।।१६।।

मुनि कोदरजी थे तपधारी,
पृथ्वी, अनूप, शिव सुखकारी।
थे हुलासमलजी स्वामी भी,
अपवर्ग नगर के अधिकारी।।१७।।

नथमलजी ऋषि विख्यात हुये,
जसराज मुनि बहु कष्ट सहे।
श्रीकनक मुनि लघु बालक से,
शासन के तारे स्पष्ट हुये।।१८।।

मक्खूजी ने नवमास किये,
निज तन पर परिषह झोंक दिये।
हंस-हंस मृत्यु स्वीकृत की,
दुर्गति के ताले ठोंक दिये ॥१६॥

लच्छी सेवगणी नाम किया,
ले अनशन उत्तम काम किया।
रतनी जैसी श्राविका ने भी,
अपने कुलको अभिराम किया ॥२०॥

शासन की लम्बी कहानी है,
कहो कैसे कहूं जबानी है।
मिलकर के क्रोड़ों जीभ करे,
नहीं पाते पार सुज्ञानी है ॥२१॥

आघात हुआ इस शासन पर,
यह निकला खरा तपासन पर।
जय विजय न क्यों होवे इसकी,
जिसके हों तुलसी आसन पर ॥२२॥

जोली में जबतक श्वास रहे,
नहीं अन्य किसी की आश रहे।
विजयचन्द पटुआ श्रावक सम,
शासन मे दृढ़ विश्वास रहे ॥२३॥

हम श्रावक हैं, यह ज्ञान रहे,
शासन का नित्य अभिमान रहे।
तुलसी के पावन चरणों में,
बस एक हमारा ध्यान रहे ॥२४॥

शासन के सारे भक्तों की,
रग-रग में भक्ति सनी रहे।
चिरंजीवि तुलसीगणी रहे,
शासन की महिमा बनी रहे ॥२५॥

शासन के बच्चे-बच्चे की,
रग-रग में भक्ति सनी रहे।
सब मिलकर खमा घणी कहें,
शासन की महिमा बनी रहे ॥२६॥